राष्ट्रीय जीवन-चरित माला

रानी चेन्नम्मा

रानी चेन्नम्मा

सदाशिव वोडियार

अनुवाद

डा० श्यामसिंह शशि

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

पहला संस्करण 1980 (शक 1901)
चौथी आवृत्ति 1989 (शक 1911)

मूल © सदाशिव वौडियार, 1980

Original Title : Rani Chennamma (English)
Hindi Translation : Rani Chennamma

मूल्य रु. 7.25

निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, ए-5 ग्रीन पार्क, नयी दिल्ली - 110016
द्वारा प्रकाशित

भूमिका

अपने बचपन से ही मैं अंग्रेजों के खिलाफ रानी चेन्नम्मा की साहसिक लड़ाई की ओजस्वी गाथा सुनता आया हूं। विभिन्न स्रोतों से कित्तूर के इतिहास के बारे में वर्षों तक पढ़ता रहा। कभी-कभी मेरे मस्तिष्क में यह विचार उठता था कि मुझे उनके जीवन के संबंध में एक विस्तृत ऐतिहासिक उपन्यास या नाटक लिखना चाहिए। सौभाग्य तथा संयोगवश, दिसंबर 1974 में मुझे नेशनल बुक ट्रस्ट से उनका जीवनचरित लिखने के लिए, अप्रत्याशित रूप से, एक अनुरोध-पत्र मिला, जिसे 'राष्ट्रीय जीवनचरित माला' के अंतर्गत प्रकाशित किया जाना था। मैंने तुरंत निमंत्रण स्वीकार कर लिया और मैं कित्तूर के इतिहास, रानी चेन्नम्मा आदि के बारे में सामग्री एकत्र करने में जुट गया। मुझे इस संबंध में प्रचुर सामग्री मिली, जिसमें से अधिकांश अभी तक अप्रकाशित है। इनमें ब्रिटिश असैनिक और सैनिक अधिकारियों में, विभिन्न स्तरों पर किया गया पत्र-व्यवहार; रानी चेन्नम्मा और अन्य विख्यात व्यक्तियों के साथ उनका पत्र-व्यवहार, जिसमें से अधिकांश अब इंडिया आफिस, लंदन, के पुरातत्व में भली-भांति परिरक्षित है, और भारत के अनेक अजायबघरों तथा अन्य कार्यालयों से प्राप्त सामग्री भी उल्लेखनीय है। मैंने इस विषय पर अब तक प्रकाशित सभी पुस्तक-पुस्तिकाएं पढ़ी हैं। मुझे कुछ अप्रकाशित कविताओं, लोकगीतों और उसी प्रकार की अन्य सामग्री प्राप्त करने में भी सफलता मिली। मैंने ऐसी किसी स्रोत-सामग्री की जिससे कित्तूर के इतिहास पर प्रकाश पड़ना संभव है, प्रत्यक्ष जानकारी पाने के लिए अनेक बार कित्तूर एवं कित्तूर के इतिहास से संबंधित अन्य स्थानों का भ्रमण किया। मैं कित्तूर के राजपरिवार के बहुत से पारंपरिक वंशजों से भी मिला और उनसे उपलब्ध जानकारी एकत्र की। यह बहुत ही परिश्रम-साध्य कार्य था, किन्तु साथ ही बहुत उत्साहवर्द्धक भी।

संपूर्ण उपलब्ध सामग्री का संग्रह करने और उसका अध्ययन करने के बाद, मैंने देखा कि भारतीय स्रोतों से रानी चेन्नम्मा या कित्तूर के इतिहास के बारे में स्वल्प अभिलेख उपलब्ध है, क्योंकि चेन्नम्मा के शासन-काल में या ठीक उसके पश्चात् ऐतिहासिक अभिलेखों की प्रकृति में लिखी गई बहुत कम प्रामाणिक सामग्री बची है या विद्यमान है। इस प्रकार जो कुछ प्राप्त हो सका है, उसमें से अधिकांश साहित्यिक रचनाओं—गाथा गीतों, लोक गीतों, कविताओं, नाटकों और अन्य साहित्यिक कृतियों के माध्यम से सुलभ हुआ है। इनमें प्रकटतः ऐतिहासिक तथ्यों के बारे में स्वतंत्रता बरती गई है, अतः कुछ घटनाओं के बारे में परस्पर विरोधी ब्यौरे दिए गए हैं। इंडिया आफिस के अभिलेख, विशेषकर विभिन्न असैनिक और सैनिक पदाधिकारियों द्वारा परस्पर लिखे गए पत्र सावधानी से परिरक्षित किए गए हैं। वे कित्तूर के इतिहास और 1824 के महान युद्ध के अलभ्य अभिलेखों के दुर्ग हैं। इसलिए इस जीवनचरित में वर्णित घटनाओं की प्रामाणिकता पर सन्देह की कोई गुंजाइश नहीं है, क्योंकि वे स्वयं योरोपीय अधिकारियों के पत्रों से स्पष्ट है। घटनाओं का सजीव वर्णन करने के यत्न में जहां-तहां ही मैंने इतिहास के इन ठोस आधार स्तंभों का आश्रय लिया है। मैंने कर्नाटक सरकार द्वारा प्रकाशित "हिस्ट्री आव फ्रीडम मूवमेंट इन कर्नाटक" (डा० एम० वी० कृष्णा राव और प्रो० जी० एस० हलप्पा द्वारा संपादित) के प्रथम संस्करण में कित्तूर के इतिहास से संबंधित मूल्यवान सामग्री का भरपूर उपयोग किया है।

यहां मैं स्वर्गीय श्री डोड्डाभावेप्पा मृगी द्वारा किए गए सार्थक शोध-कार्य की भूरि-भूरि प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकता, जिन्होंने गांव-गांव जाकर सभी संभव साधनों से टिप्पण, लोकगीत और कविताएं लेख-बद्ध करके कित्तूर के इतिहास की विच्छिन्न क्षयशील सामग्री का संग्रह करना प्रायः अपना जीवन लक्ष्य ही बना लिया था। इस जीवनचरित को लिखने के लिए मैंने उनके द्वारा संग्रहीत सामग्री का काफी उपयोग किया है। महत्व की दृष्टि से इस सामग्री का स्थान इंडिया आफिस, लंदन के अभिलेखों से उपलब्ध सामग्री के बाद का है।

इस जीवनचरित के लिखने में मुझे कर्नाटक विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास और संस्कृति विभाग के डा० ए० सुंदर से काफी मदद, मार्गदर्शन और सुझाव मिले। उन्होंने पांडुलिपि पढ़ी और अनेक मूल्यवान संशोधन सुझाए जिनमें से अनेक मैंने स्वीकार कर लिये। उनकी मदद और उनके मूल्यवान सुझावों के लिए मैं कृतज्ञता व्यक्त करता हूं किंतु मनुष्यों और घटनाओं संबंधी अशुद्धियों या मताभिव्यक्तियों के लिए पूरा उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेता हूं। अंग्रेजी विभाग के डा० सी० आर० यरविन्तेलिमथ के प्रति मैं अपनी कृतज्ञता प्रकट करना चाहूंगा। जिन्होंने पांडुलिपि (अंग्रेजी) पढ़ी और भाषा तथा अभिव्यक्ति की दृष्टि से इसे शुद्ध किया और कुछ महत्वपूर्ण सुझाव दिए। प्रेस कापी स्टेनो-टाइपिस्ट श्री जी० एम० गुड्डमथ, निजी सहायक श्री एस० आई० वडवडगी और टाइपिस्ट श्री एस० एस० नावती की सहायता से तैयार की गई। मैं इन सबका आभारी हूं। पुस्तकाध्यक्ष श्री के० एस० देशपांडे, उपपुस्तकाध्यक्ष श्री एस० आर० गुंजल और कन्नड़ रिसर्च इंस्टिट्यूट के निदेशक डा० बी० एस० कुलकर्णी ने मुझे वह सब संबंधित सामग्री उपलब्ध कराई जो उनके पास थी। फलतः मैं यह जीवनचरित लिखने में समर्थ हो सका। मैं उनका भी आभारी हूं।

नेशनल बुक ट्रस्ट के प्रति भी मैं हार्दिक आभार व्यक्त करता हूं, जिसने मुझे यह जीवनचरित लिखने का अवसर प्रदान किया। मेरे लिए यह एक आनंदानुभूति का विषय रहा है।

सदाशिव वोडियार

2 अक्तूबर, 1976

अनुक्रम

1. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

आज कित्तूर कर्नाटक में बेलगांव और धारवाड़ के प्राय: मध्य में पुणे-बंगलौर राजमार्ग के समीप कुछ छोटी-छोटी पहाड़ियों के पीछे हरे भरे पेड़ों की झुरमुट में बसा एक छोटा सा कस्बा है। कर्नाटक से बाहर के बहुत कम लोग इस बात से परिचित हैं कि इस छोटे से कस्बे ने कितना भव्य कौशल दिखाया था। यह कस्बा किसी कन्नड़ राजवंश की एक छोटी-सी रियासत की लगभग 164 वर्ष तक राजधानी रहा था। इस राजवंश का दो से भी अधिक शताब्दियों तक अविच्छिन्न इतिहास रहा है।

कित्तूर की रानी चेन्नम्मा शक्तिशाली ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध आवाज उठाने वाली भारतीय रियासत की सर्वप्रथम रानी थी, यद्यपि वह थोड़े समय तक ही मुकाबला कर सकी। रानी चेन्नम्मा एक छोटी-सी रियासत की रानी थीं फिर भी वह अदम्य साहस और देशभक्ति से ओतप्रोत थीं। उन्हें अपनी मातृभूमि और अपने लोगों से इतना स्नेह था कि वह इसकी स्वतंत्रता को सुरक्षित रखने के लिए सब कुछ न्यौछावर करने को तैयार थीं। उनमें किसी भी प्रकार के संकट का मुकाबला करने की बौद्धिक क्षमता थी, चाहे वह राजनीतिक संकट हो या सामरिक नीति। वह शक्तिशाली ब्रिटिश सेना से लड़ीं और घमासान युद्ध हुआ। एक बार तो ब्रिटिश सेना भयावह कत्लेआम को देखकर लड़खड़ा गई और पूर्णरूपेण परास्त हो गई। यह शक्तिशाली ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की एकमात्र पहली विजय थी। यह प्रेरणादायक कहानी, हर देश के स्वतंत्रता प्रेमियों को सर्वदा स्पंदित करती रहेगी। मेरा प्रयास रहेगा कि इस वीर रानी की कहानी का वर्णन साक्ष्य और अभिलेख के अनुसार निष्ठापूर्वक किया जाए जो कि इतिहास और लोक साहित्य दोनों पर आधारित हो। आशा है कि भावी संततियां कर्नाटक की इस शूरवीर रानी को सम्यक मान्यता देंगी और अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करेंगी।

कित्तूर राजवंश

कित्तूर राजवंश का प्रारंभ 1585 में हुआ था। इसके संस्थापक मैसूर राज्य में सागर के हिरेमल्लशेट्टी और चिक्का मल्लशेट्टी थे जिन्हें यह क्षेत्र बीजापुर के आदिलशाही राजाओं से उपहारस्वरूप मिला था, जिनकी उन्होंने अनेक वर्षों तक बड़ी निष्ठा से सेवा की थी। दोनों भाई बड़े वीर लड़ाकू थे। आदिलशाही राजाओं ने हिरेमल्लशेट्टी को 'शमशेरजंग बहादुर' की उपाधि से विभूषित किया था। अपने शौर्य और अपनी सेवाओं के प्रतिफल के रूप में उन्होंने सन् 1585 में आदिलशाही शासकों से हुबली (धारवाड़ जिले में) के निकट क्षेत्र में, जिसे उस समय हुबली परगना कहते थे, सरदेशमुखी का अनुदान प्राप्त किया। तत्पश्चात् वे सम्पागांव (अब बेलगांव जिले में) नामक एक स्थान पर आकर बस गए तथा उसे अपनी राजधानी बना लिया और उस समय कित्तूर क्षेत्र के अन्तर्गत आने वाले भू-भाग पर शासन किया। राजवंश ने 1585 से 1824 तक, कुल मिलाकर 239 वर्ष शासन किया। (देखिये परिशिष्ट—ए गेनॅलॉजी आव द कित्तूर डाइनेस्टी)

प्रारंभिक शासक

अपने लम्बे इतिहास के दौरान प्रारंभिक शासकों में सर्वाधिक उल्लेखनीय अल्लप्पगौड़ सरदेसाई थे जिन्होंने कित्तूर पर 1660 से 1691 तक शासन किया था। वह कित्तूर राजवंश के पांचवें शासक थे। उनके शासनकाल में ही यह राजपरिवार 1682 में कित्तूर में बसा था, जिसे उस समय तक गिजगना-हल्ली (वीवर-बर्ड गांव) कहते थे। उनके शासन-काल के दौरान इस राज्य की सीमाएं बढ़ाकर सम्पागांव और बीदी जिलों को भी इसमें मिला लिया गया। वह एक बहादुर राजा थे। उन्होंने अपने देसगट को बनाये रखने के लिए बीजापुर के राजाओं से लड़ाई लड़ी। कित्तूर किला, जिसके भग्नावशेष आज भी देखे जा सकते हैं, उनके शासनकाल में ही बनाया गया था।

आज खंडहर के रूप में विद्यमान राजमहल से उसकी भव्यता का आभास मिलता है। अपने मूलरूप में इसकी मुख्य डयोढ़ी 100 फुट लम्बी

ग्रौर 30 फुट चौड़ी थी। इसकी टेक में बड़े-बड़े टीक के थमले लगे हुए थे। इसकी विशाल छत टीक पर खुदाई के काम की बनी थी। राजमहल तिमंजिला था। इसमें भोजकक्ष, रसोइयां ग्रौर स्नानघर थे। भोजकक्ष इतना बड़ा था कि इसमें एकबार में 1000 लोग खाना खा सकते थे। घोड़े, हाथियों ग्रौर ऊंटों के लिए बैरकें ग्रौर ग्रस्तबल थे। मुख्य महल के सामने 'सदरकट्ट' था जहां राजा से मिलने ग्राये लोग बैठ सकते थे ग्रौर राजा से मिलने की ग्रपनी बारी की प्रतीक्षा कर सकते थे। ग्रल्लप्पगौड़ सरदेसाई का उत्तराधिकार उसके पुत्र मुदिमल्लप्पगौड़ सरदेसाई छटे राजा को मिला, जिसने 1691 से 1696 तक शासन किया। वह भी ग्रपनी वीरता के लिए विख्यात था। ग्रादिलशाही राजाग्रों ने युद्धभूमि में उसकी ग्रभूतपूर्व सेवाग्रों के लिए उसे 'शमशेर जंग बहादुर', 'दिलावर खां बहादुर' ग्रौर 'दिलावर जंग' की उपाधियां प्रदान कीं। इस काल में मुगल सम्राट ग्रौरंगजेब ने ग्रादिलशाही राजाग्रों को परास्त कर दिया ग्रौर बीजापुर राज्य को ग्रपने राज्य में मिला लिया। उसने रउफ़खां को उस क्षेत्र का भारसाधक, 'सवनूर कर नवाब' नियुक्त किया। कित्तूर इसी क्षेत्र के ग्रन्तर्गत ग्राता था। मुदिमल्लप्पगौड़ सरदेसाई ने रियासत को जारी रखने के बारे में रऊफ़खां से समझौता किया।

ग्रगला महत्वपूर्ण शासक शिवनगौड़ सरदेसाई था जिसने 1717 से 1734 तक शासन किया। उसे ग्रौरंगजेब से ग्रनेक उपाधियां ग्रौर सनदें मिलीं। उसके बाद मालव रुद्रगौड़ उर्फ फकीर रुद्रगौड़ सर्जा ने राज्य संभाला ग्रौर 1734 से 1749 तक शासन किया। उसकी पत्नी, रानी मल्लम्मा एक शक्तिशाली स्त्री थी ग्रौर उसने राज्य के कामकाज में प्रमुख भूमिका निबाही थी। यद्यपि रानी मल्लम्मा एक निष्ठावान ग्रौर योग्य पत्नी थी, फिर भी रुद्रगौड़ नीरंजनी नामक एक मोहक मुस्लिम सुन्दरी के प्रेमपाश में बंध गए ग्रौर उन्होंने उसका धर्म परिवर्तन करके उसे वीरशैवत्व (लिंगायत) में दीक्षित किया, जो कि कित्तूर राजवंश का धर्म था, ग्रौर उसके साथ विवाह कर लिया। उनकी प्रेमगाथा को कवियों ने ग्रनेक कविताग्रों ग्रौर लोकगीतों में गाया है। उनके भाई मल्लप्प ने रुद्रगौड़ द्वारा नीरंजनी से विवाह करने का विरोध किया, किन्तु निष्फल

रहा। नीरंजनी के सौंदर्य पर आसक्त रुद्रगौड़ ने कित्तूर रियासत के उत्तरी भाग में देसनूर में उसके लिए एक सुन्दर महल बनवाया और अपना अधिकांश समय उसी के साथ बिताया। देसनूर का वह महल निरंजनी महल के नाम से प्रसिद्ध है। इसलिए रानी मल्लम्मा को शासन की बागडोर स्वयं संभालनी पड़ी। बहरहाल, वह इस भार के योग्य थीं और उन्होंने राजकाज बड़ी दक्षता से चलाया। रुद्रगौड़ ने अपने नाम से भी देसनूर में एक किला बनवाया और उसका नाम रुद्रगढ़ रखा।

उसके शासनकाल में, 1746 में, 'सवनूर के नवाब' को कुछ अन्य क्षेत्रों के साथ-साथ कित्तूर भी मराठों के हवाले करना पड़ा और कित्तूर राजवंश को अपनी संबद्धता 'सवनूर के नवाब' के स्थान पर पूना के पेशवाओं में बदलनी पड़ी। रुद्रगौड़ के कोई लड़का नहीं था, किन्तु उसके स्वर्गीय भाई मल्लप्प के एक लड़का था, जिसका नाम था वीरप्पगौड़। जब रुद्रगौड़ वृद्ध हो गया तो वह कित्तूर की गद्दी पर बैठने वाले उत्तराधिकारी के बारे में सोचने के लिए बाध्य हो गया। उसने सिंहासन की बागडोर अपने भतीजे वीरप्पगौड़ के हाथ में देने का फैसला किया। किन्तु वीरप्पगौड़ की मां को विश्वास था कि उसके पति मल्लप्प को रुद्रगौड़ ने ही मरवाया है, अतः उसे उसके इरादों पर सन्देह था। वह अपने पुत्र के साथ निकल भागी और कुछ समय कित्तूर में कलमठ में और कुछ दिन उप्पिन बेटगेरी में एक व्यापारी के निजी परिवार के निवास में अज्ञात रूप से रही। संयोगवश, कित्तूर में कलमठ स्वामियों की पीठ थी जो कित्तूर राजपरिवार के गुरु थे। बहरहाल, वीरप्पगौड़ और उसकी मां का अता-पता चलने पर रुद्रगौड़ स्वयं अपनी भाभी के पास गए और उसे अपने पुत्र सहित कित्तूर वापस आने के लिए राजी किया, क्योंकि वह उसके पुत्र को गद्दी का उत्तराधिकारी बनाना चाहता था। वीरप्पगौड़ कित्तूर आया और रुद्रगौड़ के उत्तराधिकार में राज्याभिषेक किया गया। कुछ समय बाद रुद्रगौड़ का शांतिपूर्वक देहान्त हो गया और उसकी अर्धांगिनी नीरंजनी भी कुछ समय बाद चल बसी। रुद्रगौड़ और नीरंजनी दोनों को कित्तूर में कलमठ के प्रांगण में दफनाया गया है। उनकी समाधियां भली प्रकार परिरक्षित की गई हैं और आज भी देखी जा सकती हैं।

वीरप्पगौड़ ने 1749 से 1782 तक राज किया। वह शासनकाल लम्बा और घटना-प्रधान रहा। सन् 1778 में, मैसूर के हैदर अली, जिसने बेलगांव जिले में मलप्रभा नदी का दक्षिणी और बीजापुर जिले में कृष्णा नदी का दक्षिणी सम्पूर्ण देश जीत लिया था, कित्तूर देसाई से अपनी प्रायिक भेंट या पेशकश (नजराना) लेने के लिए तथा कित्तूर देसगट को जारी रखने के लिए राजी हो गया था। वह एक वीर शासक था, और 1778 में उसने तासगांव के पटवर्धन को पराजित कर दिया तभी गोकक एवं सवदट्टी को छीन लिया और उन्हें अपने देसगट में मिला लिया जिसके क्षेत्राधिकार में पहले ही 1756 से पारसगढ़, सम्पागांव और बीदी जिले थे। इस काल में एक ओर पेशवाओं में तथा दूसरी ओर हैदरअली में बराबर लड़ाई चलती रही और कित्तूर जैसी छोटी-छोटी रियासतों को इन बलशाली लड़ाकू शक्तियों के हाथों का खिलौना बनना पड़ा। सन् 1779 में परशुराम भाऊ ने गोकक पर विजय पाई और वीरप्पगौड़ सरदेसाई को बन्दी बना लिया। वह जानते हुए कि वीरप्पगौड़ एक वीर लड़ाकू है और पेशवा शासन के लिए खतरा साबित हो सकता है, परशुराम भाऊ ने उसे मीरज के जेल में रखा, जहां 1782 में उसका देहान्त हो गया। उसका शव कित्तूर लाया गया और कलमठ के प्रांगण में दफनाया गया। उसके मकबरे को अच्छी देखरेख में रखा गया है और आज भी अनेक आगन्तुक इसे देखने आते हैं।

उसके मरने के तुरन्त बाद परिवार ने मल्लसर्जा को दत्तक पुत्र के रूप में गोद ले लिया, और वह 1782 में रियासत का शासक बन गया। कित्तूर राजवंश के 12 शासकों में उन्हें सबसे अधिक प्रसिद्धि मिली। इस जीवनी की नायिका चेन्नम्मा उनकी दूसरी पत्नी थी। अंग्रेजों के विरुद्ध चालू की गई वीरतापूर्ण लड़ाई में कित्तूर की रानी चेन्नम्मा ने जो भूमिका अदा की थी उसे समझने और उसका मूल्यांकन करने के लिए 1816 में मल्लसर्जा की मृत्यु के समय तक के उसके शासन की पूर्व पृष्ठभूमि और इतिहास की जानकारी प्राप्त करना आवश्यक होगा। मल्लसर्जा के मरने के बाद रानी चेन्नम्मा ने कित्तूर के शासन की बागडोर संभाल ली थी।

मल्लसर्जा

मल्लसर्जा ने 1782 से 1816 तक कित्तूर रियासत पर शासन किया। निःसंदेह, यह सभी पहलुओं से एक स्वर्ण युग रहा है, जैसा कि इतिहास से और उनके सम्मान में रचित कविताओं और गीतों से पता चलता है। यह वह युग था जब अंग्रेज, फ्रांसीसी और पुर्तगाली जैसी विदेशी शक्तियां भारतीय राज्य क्षेत्र पर अपना राजनीतिक प्रभुत्व स्थापित करने और जो कुछ भूमि हाथ लगे उसे हड़पने के लिए आपस में संघर्ष कर रहे थे। देश छोटी-छोटी रियासतों के आंतरिक वैमनस्य और ईर्ष्या से संतुष्ट था। ये रियासतें बड़ी-बड़ी विदेशी शक्तियों के हाथ के खिलौने थीं। राजनीतिक षडयंत्रों का बोलबाला था। भारत के दक्षिणी भाग में, शक्तिशाली शासक मैसूर के हैदरअली और बाद में टीपू सुल्तान, महाराष्ट्र के पेशवा, बीजापुर के आदिलशाह और हैदराबाद के निजाम थे। अन्य अनेक छोटे-छोटे सामन्तों, अध्यक्षों और मुखियाओं का उल्लेख करना आवश्यक नहीं है जो सब निजी फायदों के लिए आपस में झगड़ रहे थे और सम्पूर्ण देश के भविष्य की जिन्हें कोई चिन्ता नहीं थी। इसी नाजुक मोड़ पर मल्लसर्जा गद्दी पर बैठे थे।

सन् 1785 में टीपू सुल्तान ने कित्तूर, धारवाड़ जिले में नरगुंड और रामदुर्ग पर बलपूर्वक कब्जा कर लिया और कित्तूर में मैसूर की एक बहुत बड़ी सैन्य टुकड़ी तैनात कर दी। मराठों ने टीपू के खिलाफ निजाम ने साथ दुरभि संधि की कूटरचना की। जबकि जागीरदारों की मुख्य सेना ने बीजापुर में बादामी की तरफ और फिर धारवाड़ की तरफ मोर्चा बढ़ाया, टुकाजी होल्कर, गणेश प्रताप बहरे कित्तूर के समीप बुरहानुद्दीन के नेतृत्व में टीपू के सैन्यदल पर हमला करने के लिए, तथा उसकी टुकड़ियों को उस जिले से बाहर खदेड़ने के लिए 25,000 घोड़ों सहित तैयार था। होल्कर की टुकड़ी किले के सिवाय कित्तूर के हर कोने से टीपू की सेना को खदेड़ने में सफल हुई। किले पर एक मास से भी अधिक समय तक गोलाबारी होती रही किन्तु उन्हें कोई कामयाबी नहीं मिली। यद्यपि युद्ध में अधिक लाभ टीपू को मिला, किन्तु अप्रैल 1787 में अंग्रेजों के आक्रमण के भय से उसने कित्तूर और अन्य क्षेत्र मराठों को दे दिये।

1787 को समाप्त होने वाले तीन वर्षों में, जबकि कित्तूर टीपू के अधीन था, उसके लेफ्टिनेंट बदरुल ज़मान खां ने देसाई की सम्पदाओं या जागीर भूमि का प्रबन्ध अपने हाथ में ले लिया, उसकी सारी शक्तियां छीन लीं और उसके जीवन-निर्वाह के लिए धनराशि निश्चित कर दी। बाद में, फरवरी 1792 में की गई श्रीरंगपट्टन की संधि के अनुसार मराठा सीमा रेखा बढ़ाकर तुंगभद्र और पारसगढ़ तक कर दी गई, और कित्तूर देसाई की भू-सम्पदा, जिसे टीपू ने ले लिया था, पुनः मराठा देश का अंग बन गई। ये जिले परशुराम भाऊ को सौंप दिए गए जिसे पिछले युद्ध में उससे अधिक संख्या में सेना तैयार करने के लिए बाध्य किया गया था, जितनी के लिए पटवर्धन को सैनिक अनुदान या सर अंजाम दिया गया था, उसने एक मामलातदार को कित्तूर का भारसाधक बना दिया, और देसाई के अधीनस्थ रख दिया।

जून 1800 के अन्त में एक बहुत बड़ा मराठा चोर बाजारी (फ्री-बूटर) धोंडू बाघ कित्तूर देश में आ गया। 30 जून 1800 को, उसने मराठा जनरल धोंडू पंत गोखले को कित्तूर के निकट चकमा दे दिया और उसके बाजू के रक्षक दल पर हमला कर दिया तथा **संपूर्ण** सेना को लड़ने को बाध्य कर दिया। गोखले मारा गया और धोंडू बाघ ने 1791 में पराजय के बाद की गई प्रतिज्ञा पूरी करने के लिए गोखले के दिल के खून से अपनी मूंछें रंगी। धोंडू तब तक कित्तूर देश में रहा जब तक कि जनरल वैलिजली ने धारवाड़ पहुंचकर उसे खदेड़ नहीं दिया। 30 जुलाई 1800 को कित्तूर के 25 मील उत्तर-पूर्व मनोली में धोंडू की सेना के एक भाग को ध्वस्त कर दिया गया, और वह घबराकर कित्तूर की दिशा में चला गया और वहां से वह मलप्रभा के स्रोत के साथ-साथ जाकर आसपास के वनों से होकर भाग गया। उसकी खोज में जनरल वैलिजिली 5 अगस्त को कित्तूर गया और उसे सात दिन रुकना पड़ा, क्योंकि मलप्रभा नदी में बाढ़ आई हुई थी और नाव से जाना संभव नहीं हो सका था।

अंग्रेजों और पेशवाओं में 1792 में जब श्रीरंगपट्टन की संधि पर पेशवाओं द्वारा ब्रिटिश प्रभुत्व को स्वीकार करते हुए और उनकी चाप-

लूसी करते हुए हस्ताक्षर किये गये थे, लगभग 25 वर्ष तक मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध रहे। कित्तूर देसाई को भी पेशवाओं के अनुरूप आचरण करना पड़ा और अंग्रेजों के प्रति वफादारी और समर्थन का आचरण करना पड़ा। सन् 1802 में, जब जनरल वैलिजिली बाजीराव पेशवा को पुनः स्थापित करने के लिए श्रीरंगपट्टन से पुणे जा रहा था तो उस क्षेत्र के अनेक सत्ताधारियों ने ब्रिटिश सेना की मदद की, और दूसरों के साथ-साथ कित्तूर के देसाई ने भी अंग्रेजों की ओर से लड़ने के लिए 100 घोड़े, 100 पैदल जवान दिए। मल्लसर्जा ने संगोली में एक छोटा-सा किला देने की सम्मति दे दी ताकि वह स्थान संचार व्यवस्था बनाये रखने के लिए एक चौकी के रूप में काम आ सके और अस्पताल तथा वहां स्थित नावों की रक्षा की जा सके। यद्यपि कित्तूर सैन्यदल ने बड़ी निष्ठा दिखाई फिर भी वह निरर्थक रही। पेशवा के पुनः स्थापन हेतु जाने वाली सेना में शामिल होकर कित्तूर देसाई ने जो वफादारी दिखाई थी उसके पुरस्कारस्वरूप वह अपनी सम्पदाओं का अविरल उपभोग करता रहा। उस समय उसका देश कित्तूर के आसपास था जिसकी वार्षिक आय 4 लाख रुपये थी, और उसके पास 1000 घोड़े और 4000 पैदल जवानों की सेना थी। वह पेशवाओं को लगभग 70,000 रुपये की सालाना भेंट देता रहा था। हर काम सुचारु रूप से चल रहा था। कित्तूर रियासत को अपने आन्तरिक मामलों में और प्रशासन में पूर्ण स्वायत्ता प्राप्त थी।

कित्तूर की समृद्धि और शक्ति से भयभीत होकर 1804 में, पेशवाओं ने वैलिजिली के सामने प्रस्ताव रखा कि कित्तूर के राजा को गद्दी से उतार दिया जाए और संपदा ले ली जाए। वैलिजिली ने उसके प्रस्ताव को ठुकरा दिया। पेशवाओं के प्रस्ताव को अस्वीकार करने के जो कारण वैलिजिली ने बताये थे वे 6 मई, 1804 को लिखे गए एक पत्र में उसके अपने शब्दों में वर्णित हैं। इस पत्र से कित्तूर के लोगों की प्रकृति और आचरण पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है :—

"……निवेदन है कि ऐसी अत्यन्त प्रकट आवश्यकता की स्थिति में सिवाय जिसमें सरकार की समस्त सेना को लगाया जा सकता

है, उसका (कित्तूर के राजा से) विरोध करना उचित नहीं है। व्यानद, कुर्ग, वल्लम, बेन्दुर और सुन्डा की तरह कित्तूर भी पश्चिमी घाटों की श्रेणी से पूर्व की तरफ और उसके एकदम समीप बसा हुआ है। उनकी भांति यह भी सेना के लिए दुर्गम है। इसके वासी भी वैसे ही मूलवंश के हैं और इस पर युद्ध करने से संभवतः वही हानियां और विनाश होंगे······यह देश कम्पनी की सीमा रेखा के अरक्षित स्थल पर बसा हुआ है। हुल्ली हल्ली के किले में गैरिसन नहीं है क्योंकि मैं गोवा में सेना पूरी करने के लिए वहां से टुकड़ी को वापस बुलाने के लिए बाध्य हो गया था। इस किले पर कब्जा रखकर कित्तूर के राजा को सुरक्षित संचार व्यवस्था और कनारा तथा बिदनूर में प्रवेश सुलभ होगा। ये दोनों प्रान्त पूर्णतः अरक्षित और पूर्ववर्ती हैं, जिनके साधनों के आधार पर बम्बई, और पूना सेना निर्वाह के लिए पूर्णतः निर्भर करते हैं···। इन तथ्यों का आधार चाहे कितना ठोस हो पर ये अज्ञात हैं और कित्तूर के राजा को उसके देश के शासन से वंचित करने का प्रयत्न न करने की आवश्यकता का स्पष्ट संकेत मिलता है जब तक कि लक्ष्य सुनिश्चित करने और हमें क्रुद्ध करने के तरीकों से, जो उसकी शक्ति में हैं, बचने के लिए पर्याप्त साधन सुलभ न हों।"

बहरहाल, 1809 में, मल्लसर्जा ने एक समझौता किया जिसके द्वारा उसने पेशवाओं को 1,75,000 रु० का वार्षिक नजराना देने का वचन किया। इस समझौते के अनुसार देसाई अपनी संपदा रख सके और सेना आदि रखने के लिए कुछ अनुदान भी पाते रहे। उन्हें 'प्रताप राव' की उपाधि से भी विभूषित किया गया। इस उपाधि के प्रदान करने के उपलक्ष्य में उत्सव मनाने के लिए देसाई ने नंदगढ़ के समीप एक किला बनवाया जो 'प्रतापगढ़' के नाम से प्रसिद्ध है।

कित्तूर देसाइयों द्वारा पेशवाओं की सहायता और निष्ठा के बावजूद पेशवा कित्तूर राजवंश के प्रति सहानुभूति नहीं रखते थे। मल्लसर्जा जैसे राजा से ठीक ढंग से व्यवहार नहीं किया गया। पेशवाओं ने उसे निर्ममतापूर्वक हिरासत में ले लिया और लम्बे समय तक बंदी बनाये

रखा। जेल में वह अस्वस्थ हो गए और उनका स्वास्थ्य इतना गिर गया कि वह पुणे से वापस आते ही चल बसे। उनकी इच्छानुसार शिवलिंगरुद्र सर्जा को पहले ही गोद ले लिया गया था, और वह 1816 में मल्लसर्जा का उत्तराधिकारी बना। इस प्रकार कित्तूर राजवंश के एक अत्यंत भव्य शासन का अन्त हो गया। मल्लसर्जा की उपलब्धियों का अगले अध्याय में संक्षेप में वर्णन किया जाएगा।

संदर्भ

1. गजेटियर आव बाम्बे प्रेजिडेन्सी, जिल्द XXI, बेलगांव, पृ० 484, 578-581।
2. कित्तूर कलगा और फारसी डोक्यूमेन्ट्स : स्वर्गीय श्री भावेप्पा मूगी द्वारा सम्पादित।

2. मल्लसर्जा का शासनकाल

मल्लसर्जा का शासनकाल कित्तूर के शासकों में सबसे अधिक घटनापूर्ण और शानदार था। यह काल कित्तूर के इतिहास में सबसे अधिक कठिन भी था। उन्होंने कित्तूर राज्य पर लगभग 34 वर्ष शासन किया। उन्होंने कित्तूर के मुखियाओं में सबसे अधिक प्रसिद्धि और ख्याति भी पाई।

उन दिनों कित्तूर राज्य के अन्दर सम्पगांव, बिदि, कित्तूर, खानापुर, कलघटगी मनोली और नरगुंड थे जो अब धारवाड़, बेलगांव और उत्तरी कनारा जिलों में स्थित हैं। इसमें कुल 286 गांव और 72 खेड़े थे, जो 'कार्यात' नामक प्रशासनिक इकाइयों में बंटे हुए थे। ऐसे 14 'कार्यात' थे और राज्य में कुशल प्रशासन था। उसका पश्चिमी भाग अधिकांशतः घने वनों से घिरा हुआ पहाड़ी क्षेत्र था, कुछ पहाड़ियां, विशेषकर, खानापुर से उत्तर की तरफ, ऊंची और ऊबड़-खाबड़ थीं। कित्तूर की उत्तरी सीमा बेलगांव से 20 कि० मी० दक्षिण तक फैली हुई थी और दक्षिणी सीमा का विस्तार धारवाड़ से लगभग 25 कि० मी० उत्तरी क्षेत्र पर था। पश्चिमी दिशा में इसका विस्तार तावरगट्टी तक था और इसमें देसनूर, सूपा, दांडेली और मलनाड क्षेत्र में उलवी जैसे महत्वपूर्ण कस्बे शामिल थे। पूर्व में, इसका विस्तार यवकुंडी तक था और इसके अन्दर बैलहोंगल, मुरगोड, दोडवाड, ताडकोड, गरग आदि थे। ये परिक्षेत्र मैदानी इलाके में बसे हुए थे। इस समस्त भूभाग में वर्षा ऋतु में भारी वर्षा होती थी और गर्मियों में हल्की गर्मी पड़ती थी।

उन दिनों संचार-साधनों की कमी थी। वर्षा ऋतु के दौरान झरनों और नदियों में बाढ़ के कारण गांवों में सम्पर्क टूट जाता था। भारी वर्षा के बाद मालप्रभा नदी में प्रायः बाढ़ आ जाती थी और उन दिनों उसे पार करना कठिन हो जाता था। कित्तूर में से होकर पांच प्रमुख सड़कें

गुजरती थीं। दो सड़कें उत्तर में पुणे को जाती थीं और एक उत्तर-पूर्व में धारवाड़ को जाती थी तथा एक सड़क पश्चिम की तरफ गोवा जाती थी। संचार साधनों की कमी के बावजूद कित्तूर में व्यापार और वाणिज्य का विकास हुआ। पश्चिमी घाटों से निचले देश और पठार के बीच सुस्थापित व्यापार सम्पर्कों के साथ-साथ खेती की उपजों के कारण यह एक बहुत बड़ा व्यापार केन्द्र और समृद्ध राज्य बन गया था।

मल्लसर्जा के शासन-काल में उद्योगों और वाणिज्य का विकास हुआ तथा लोग सुखी थे। कला और शिल्प तथा अन्य कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहन मिला। राज्य के विभिन्न भागों में साड़ियों, धोतियों और अन्य नाना प्रकार के कपड़ों, चूड़ियों आदि का भी निर्माण होता था। खेती के उपकरण बनाये जाते थे। नन्दगड, खानापुर, बेलहोंगल, कित्तूर, सम्पगांव और देसनूर महत्वपूर्ण व्यापार-केन्द्र थे। सहयाद्री पर्वतमाला (पश्चिमी घाट) से लगभग 65 कि० मी० पूर्व में बसे हुए कित्तूर का वाणिज्य के क्षेत्र में सामरिक महत्व था। कोंकण क्षेत्र में बनी और उत्पादित सब वस्तुओं और उत्पादों को अन्य स्थानों पर पहुंचने के लिए नन्दगड से होकर जाना पड़ता था। बेलहोंगल कपास और कपड़े का एक बहुत भारी उत्पादन केन्द्र था। सम्पगांव कपास और वस्त्र उत्पादन तथा विपणन का एक बड़ा केन्द्र था। देसनूर भी वस्त्र और पटसन का केन्द्र था तथा उसका कोंकण क्षेत्र से घनिष्ठ व्यापार सम्बन्ध था। यह एक विकासशील राज्य था, जहां कृषि और उद्योगों के क्षेत्र में तरक्की हुई। राज्य का वार्षिक राजस्व लगभग 3,50,000 रु० था और उसके पास अपनी टकसाल थी।

मल्लसर्जा ललित कलाओं, जैसे नाटक, नृत्य, लोकगीत, साहित्य आदि के महान प्रेमी थे। उन्होंने लेखकों और कवियों को प्रोत्साहन दिया तथा अनेक विद्वज्जन उनके दरबार में आये, उन्होंने प्रचुर संरक्षण प्राप्त किया और बहुत सम्मान पाया। काव्य और साहित्य की उन्नति हुई। कभी-कभी विख्यात कविगण और कलाकार उनके दरबार में अपना कविता-पाठ और अपनी कला का प्रदर्शन करते थे। ऐसे उल्लेख मिले हैं जिनसे उन कवियों और पण्डितों के नामों का पता चलता है जिन्हें

राजा का संरक्षण प्राप्त था। इनमें उल्लेखनीय थे दर्शनशास्त्र की नैयायिक विचारधारा के कोल्सी रंगाचार्य नामक **पंडित** तथा कविगण-वेंगी चेन्नवसप्पा, मुलगुण्ड जवल्ली शेट्टर चेन्नबसप्पा, काशीराज, वर रुद्र कवि, मनिपुराड नीलकंठार्या, मगुण्डी बासव, शिवलिंग शास्त्री, देवरसिगीहल्ली, रुद्र गौड। बेटिगेरी शिवलिंग शास्त्री और अमृतेश्वर जिन्होंने 'मलेन्द्र मानसोल्लास' या 'मालातरंगिनी' नामक चाटूक्तिपूर्ण लम्बी कविता की रचना की थी। उत्साही कवियों ने काव्य की नई नई शैलियों का प्रयोग किया और इस काल में दुमदुमी के रूप में ज्ञात एक नए प्रकार के लोक काव्य का उदय हुआ। ऐसी अनेक कविताएं आज भी प्रचलित हैं। इनकी अधिकांशतः उन्हीं कवियों ने रचना की थी जो मल्लसर्जा के शासनकाल में रहते थे। दुमदुमी कन्नड़ साहित्य को कित्तूर की ही देन है।

मल्लसर्जा जीवन की अच्छी अच्छी चीज़ों के बहुत बड़े पारखी थे। उन्हें बढ़िया कपड़े **पसंद** थे और उनके कपड़ों की अलमारी में शानदार वेशभूषाएं टंगी रहती थीं जो देश के विभिन्न भागों से बनकर आती थीं। वह अच्छे भोजन के भी शौकीन थे। उन्हें लोगों को स्वादिष्ट भोजन कराने में मजा आता था। इनमें से कुछ कित्तूर के 'विशेष व्यंजन' होते थे। वह पेड़-पौधों, और फूलों के भी शौकीन थे। देवरसिगि-हल्ली गांव में उनका वनस्पतिक उद्यान था। इस प्रकार सभी सूत्रों से पता चलता है कि मल्लसर्जा ललित कलाओं, हस्तशिल्प और साहित्य, दर्शन तथा जीवन की अन्य सभी सुन्दर चीजों के महान संरक्षक थे। उनके शासनकाल में लोग सम्पन्न और सुखी जीवन बिताते थे। उन्हें नाटकों, नृत्यों और लोक गीतों तथा अन्य सामुदायिक और सांस्कृतिक कार्यकलापों में सक्रिय भाग लेने के अनेक अवसर दिए जाते थे।

मल्लसर्जा बहुत ही भक्त और धार्मिक व्यक्ति थे। उन्होंने सभी धार्मिक संस्थाओं जैसे **मंदिरों**, मठों और मस्जिदों को संरक्षण प्रदान किया। कहा जाता है कि उनके राज्य में 1,000 मठ थे। वीरशैव मठों का मुख्यालय कित्तूर में 'कलमठ' था जो 'साविरा संस्थान मठ' कहलाता था। जैसा कि पहले ही कहा जा चुका है, इस मठ के स्वामीजी पीढ़ियों तक कित्तूर के राज परिवार के गुरु रहे।

स्वामीजी विद्वान होते थे। अपने गहन अध्ययन और ज्ञान, अपने निष्कलंक नैतिक आचरण और, इन सबके ऊपर मानवीय समस्याओं को सुलझाने में अपने आध्यात्मिक और बौद्धिक समाधान से उन्हें दरबार में एक विशिष्ठ स्थान दिया जाता था। कलमठ के स्वामीजी कित्तूर शासकों के विश्वासपात्र सलाहकार थे। उन्होंने अनेक मामलों पर सलाह देने के लिए मंत्रिमण्डल की महत्वपूर्ण बैठकों की अध्यक्षता की थी। संकटकाल में कित्तूर के शासक मार्गदर्शन के लिए कलमठ के स्वामियों के पास जाते थे। युद्ध और शांतिकाल में स्वामीजी राज्य के कार्यों में प्रमुख भूमिका अदा करते थे। यद्यपि वे अपने धार्मिक, दार्शनिक और शास्त्रीय अध्ययन में लीन रहते थे, फिर भी वे कूटनीति और राजनीति की कला में निपुण थे, और राजनीतिक मसलों पर उनकी सलाह को हमेशा मूल्यवान समझा जाता था। वे इस बात पर नजर रखने के लिए भी अपने प्रभाव का प्रयोग करते थे कि शासक और उनके परिवार पवित्र जीवन बितायें तथा पाप से दूर रहें। संपूर्ण शाही परिवार स्वामी जी को बहुत आदर देता था। इसी कारण से इन शासकों की सभी समाधियां कलमठ के प्रांगण में विद्यमान हैं, जहां उन्हें भली भांति परिरक्षित रखा गया है। अतः कित्तूर कस्बे के बीचोंबीच स्थित कलमठ, उन लोगों के लिए आज भी एक तीर्थ स्थान है, जो कित्तूर के इतिहास में रुचि रखते हैं। कित्तूर कलमठ के स्वामियों की परम्परा का प्रभाव, समय के साथ-साथ क्षीण नहीं हुआ है।

कित्तूर कस्बे से बाहर थोड़ी सी दूरी पर चौकीमठ है, जो कि कित्तूर कलमठ के समीप है। चौकीमठ में चारों तरफ से बन्द बड़े-बड़े कक्ष हैं जिनकी सभी दिशाओं में रक्षा की जा सकती थी—इनमें संकटकाल में राज्य की महत्वपूर्ण समस्याओं पर विचार-विमर्श करने के लिए गुप्त सत्र आयोजित किए जा सकते थे। कित्तूर के इतिहास में ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं कि कित्तूर के शासक महत्वपूर्ण कूटनीतिक चालों, युद्ध नीतियों और राजनीतिक दांव पेचों के बारे में स्वामीजी से चौकी मठ के गुप्त कक्षों में विचार-विमर्श किया करते थे।

जब मल्लसर्जा ने राज्य की बागडोर संभाली थी, उस समय वे पूरे

17 वर्ष के भी नहीं हुए थे। उनके यौवन का तेज और साहस पूरे उभार पर था, और उनका व्यक्तित्व आकर्षक था। वह स्वयं एक वीर योद्धा थे, और घुड़सवारी, तलवार चलाने, धनुर्विद्या और सैन्य कलाओं में प्रशिक्षित थे।

जब वह सिंहासन पर बैठे तो उन्हें दो बड़ी शक्तियों, मैसूर के मुस्लिम शासक यानी टीपू सुल्तान और उत्तर में पेशवाओं से युद्ध लड़ना पड़ा। उन्हीं दिनों अंग्रेज भारत के दक्षिण-पश्चिमी भाग में अपने पंजे फैला रहे थे। पेशवाओं और मैसूर के टीपू में निरन्तर संघर्ष रहता था, और मल्लसर्जा को अनेकों बार या तो पेशवाओं और उनके अधीनस्थों से या टीपू और उसके जागीरदारों से लड़ना पड़ा। टीपू या पेशवाओं को कित्तूर और उसकी भलाई में कोई रुचि नहीं थी। उनका एकमात्र लक्ष्य लूट खसोट करना तथा इस छोटे से समृद्ध राज्य से, जो कुछ माल हाथ लगे, उसे ले जाना था। परिस्थितिवश कित्तूर के शासकों को राज्य को सुरक्षित रखने के लिए कई बार ब्रिटिश सहायता लेनी पड़ी। इस छोटे से राज्य की सम्पन्नता ही अभिशाप बनी हुई थी, क्योंकि इन बड़ी-बड़ी शक्तियों की नजर हमेशा इस क्षेत्र पर लगी रहती थी, जिसे उनके विचार में, अपनी तिजोरियां भरने के लिए मनचाहे लूटा जा सकता था। ऐसे संकटकाल में ही मल्लसर्जा कित्तूर के सिंहासन पर बैठे थे।

गद्दी पर बैठे अभी उन्हें तीन वर्ष भी न हुए थे, कि टीपू सुल्तान ने अपने सहायक बदरुल ज़मां खान के माध्यम से देसनूर किले पर कब्जा करने का यत्न किया। यह किला कित्तूर के उत्तरी भाग में स्थित था। मल्लसर्जा और उनकी सेना ने उन्हें वापस मार भगाया। कहा जाता है कि इस युद्ध में मल्लसर्जा की प्रथम पत्नी रानी रुद्रम्मा लड़ी थीं। टीपू सुलतान कुछ मास बाद पुनः बुर्हानुद्दीन को साथ लेकर दूसरा हमला करने के लिए आया। इस छोटे से राज्य की सेना टीपू की बहुत बड़ी प्रशिक्षित सेना का मुकाबला नहीं कर सकी। मल्लसर्जा को बन्दी बना लिया गया और उन्हें लगभग तीन वर्ष पेरिया-पट्टण के समीप कपालदुर्ग में कैद रखा गया। उस समय उनकी आयु बीस वर्ष की थी। मल्लसर्जा बहुत चतुराई से जेल से बच निकले और कोयम्बतूर के समीप उस क्षेत्र

में पहुंच गए जो अंग्रेजों के कब्जे में था और फिर बीजापुर चले गए जो उस समय मुगलों के अधीन था। फिर वह अनेक स्थानों से होते हुए, अपार कष्ट झेलते हुए वेश बदलकर चलते गए और अन्तत: बाबालेश्वर पहुंचे जहां उनकी पत्नी रुद्रम्मा के निकट सम्बन्धी रहते थे। उन्होंने राजा मल्लसर्जा को शरण दी। यहीं उन्हें कित्तूर की गतिविधियों का समाचार मिला। ज्यों ही कित्तूर के लोगों को उनके जेल से बच निकलने का पता चला, वे बाबालेश्वर आए और उन्हें वापस कित्तूर ले गए। उन्होंने उनके स्वदेश लौटने की खुशी में भव्य स्वागत का आयोजन किया। मल्लसर्जा ने लगभग तीन वर्ष बाद राज्य की बागडोर पुन: संभाली।

टीपू को 1787 में कित्तूर मराठों को देना पड़ा, क्योंकि ब्रिटिश हस्तक्षेप का भय था जो उस समय तक देश के इस भाग में शक्तिशाली बन चुके थे। इस प्रकार कित्तूर पुन: पेशवाओं के शासन में आ गया जिन्होंने परशुराम भाउ को अपने नायब के रूप में दक्षिणी भाग का भारसाधक बना दिया। कित्तूर भी इसी भाग में आता था। भाउ ने कित्तूर को धारवाड़ के अधीन कर दिया और उसके प्रशासन की देख-रेख के लिए कित्तूर में एक मामलातदार की नियुक्त कर दी। इसके कुछ समय बाद परशुराम भाउ, पट्टनकोड़ी में, 1788 में, कोल्हापुर के राजा के साथ युद्ध में मारे गये और इसके बाद कित्तूर को पूर्ण स्वायत्ता मिल गई। वही एकमात्र पेशवा की अधीनता में थे जिन्हें शासक को लगभग 70,000 रु० की वार्षिक भेंट देनी होती थी। उस समय मल्लसर्जा के पास 1,000 अश्वसेना तथा 4,000 पैदल सेना थी। राज्य की वार्षिक आय लगभग 5 लाख रुपये थी।

श्रीरंगपट्टन की संधि के अनुसार, 1972 में, तुंगभद्र के उत्तर का सारा क्षेत्र पेशवाओं को दे दिया गया। यद्यपि कित्तूर का क्षेत्र पेशवाओं के अधीन था फिर भी राज्यक्षेत्र के दक्षिणी भाग में मजबूत और शक्तिशाली लोग थे जो बिना महसूल दिए मादक द्रव्य ले जाते थे और जिन्होंने पेशवाओं की अवज्ञा करके तथा दक्षिण में छोटे-छोटे राज्यों को लूटकर आतंक फैला रखा था। महसूल दिए बिना मादक द्रव्य ले जाने

वाला ऐसा एक व्यक्ति धोंदू बाघ था जो उस क्षेत्र में लूट-खसोट कर रहा था। अतः मल्लसर्जा को ब्रिटिश सहायता लेनी पड़ी और उन्होंने जनरल वेलिजिली के साथ एक समझौता किया, जिसने धोंदू बाघ पर काबू पाने में उनकी सहायता की। वर्ष 1802 में, जनरल वेलिजिली बाजीराव को पुनः स्थापित करने के लिए श्रीरंगपट्टन से पुणे जा रहे थे। मल्लसर्जा और इस क्षेत्र के अन्य देसाइयों ने अंग्रेजों की सहायता करने के लिए धन-जन का भरपूर योगदान किया। सहायता और सद्-भावना के बदले में, अंग्रेज़ों ने मल्लसर्जा को अपना देसगत रखने की इजाजत दे दी। 1805 में मल्लसर्जा ने टीपू के साथ युद्ध में पेशवाओं की सक्रिय रूप से मदद की, जिसके बदले में, 1809 में, कित्तूर का देसाई पेशवाओं के साथ यह समझौता कर सका कि 1.75 लाख रु० की भेंट देने पर उन्हें अपना देसगत रखने तथा अपनी सेना रखने का अधि-कार होगा और उन्हें राज्य के पूर्ण स्वशासी प्रशासन का वचन दिया गया। मल्लसर्जा की रणनीति, राज्य-कौशल तथा कपालदुर्ग से बच निकलने के समय प्रदर्शित, उनकी चतुराई और टीपू से युद्ध करने में उनकी वीरता को दृष्टिगत रखते हुए मल्लसर्जा को 'प्रताप राव' की उपाधि प्रदान की गई। इस घटना की याद में उन्होंने नन्दगढ़ में एक किला बनवाया और उसका नाम 'प्रतापगढ़' रखा।

कित्तूर शासकों ने राज्य की अखण्डता तथा उसके प्रशासन की स्वायत्ता को कायम रखने के लिए पेशवाओं से जो लड़ाई लड़ी थी, वह उल्लेखनीय है। पेशवाओं और पटवर्धनों ने उन्हें जीतने तथा अपने अधीन करने के लिए अनथक प्रयास किया, किन्तु वे सफल नहीं हुए। 1809 के अभिलेख का निम्नलिखित मराठी अंश कित्तूर के शासकों के आचरण का प्रमाण है[1] :

कर्नाटक में कित्तूर देसाई एक शक्तिशाली विद्रोही था। यद्यपि पेशवा ने कित्तूर को अपने अधीन और नियंत्रण में करने के लिए चालीस

1. खरे, वी० वी०, 19 : हिस्टोरीकल मराठी रिकार्डस, जिल्द xv, पृ० 8054, सं० वी० वी० खरे, भारतीय इतिहास मंडल, पुणे।

वर्ष तक प्रयास किया, किन्तु चूंकि ब्रिटिश शासकों और पेशवाओं में शक्ति संघर्ष चलता रहा, अतः कित्तूर को पूर्ण स्वायत्ता और हैसियत प्राप्त रही। मल्लसर्जा के कल्याणकारी शासन से वह एक संपन्न राज्य बन गया था और जनता सुखी थी। 1821 तक कित्तूर में स्थिति सुचारु रूप से चलती रही। फिर घटनाचक्र बदला। बाजीराव को राज्य की सम्पन्नता और बढ़ती हुई दौलत के बारे में रिपोर्टें मिल रही थीं। मल्लसर्जा की लोकप्रियता से वह लोलुप और ईर्ष्यालु हो गया। कित्तूर में कुछ चालाक स्वार्थी लोग भी थे जिन्होंने बाजीराव के पास ये खबरें पहुंचाईं कि मल्लसर्जा बहुत शक्तिशाली और उद्धत होता जा रहा है और हो सकता है वह किसी भी समय पेशवाओं की अवज्ञा करने में संकोच न करे। बाजीराव को उनकी बातों पर विश्वास हो गया। वह मल्लसर्जा को कमजोर बनाना और नीचा दिखाना चाहता था। अपने परिवार के पूज्य देवता भगवान कार्तिकेय की पूजा करने के लिए मंडुरु की तीर्थयात्रा के बहाने बाजीराव ने दक्षिण में डेरा डालने की व्यवस्था की। उसके साथ पैदल सेना और अश्वसेना आदि का बहुत बड़ा दल था। वह जगह-जगह पर रुकता गया और अधीनस्थ मुखियाओं तथा अपने अधीन वाले देसाइयों को बुलवाता गया जिनसे प्रत्याशा की जाती थी कि वे आएंगे और अपने साथ ढेर सारे उपहार लाएं। मल्लसर्जा को सन्देश भेजा गया कि वे होंगल में बाजीराव से मिलें। मल्लसर्जा इसके लिए तैयार नहीं थे। शिगुणाशी के अल्लप्पगौड नामक एक अति चालाक व्यक्ति ने मल्लसर्जा को पेशवा से मिलने के लिए मना लिया। बाजीराव मल्लसर्जा के पहुंचने से पूर्व ही वहां से जानबूझ कर चला गया और उसने यह सूचना रख छोड़ी कि मल्लसर्जा उनके पीछे-पीछे पुणे चले आएं। ज्यों ही मल्लसर्जा वहां पहुंचे उन्हें मुधोलकर वाड़ा में बन्दी बना लिया गया और उस स्थान पर कड़ा पहरा लगा दिया गया। उन्हें तीन वर्ष की लम्बी अवधि तक बन्दी रखा गया और उनके साथ दुर्व्यवहार किया गया। इस अवधि में मल्लसर्जा का स्वास्थ्य बहुत गिर गया था। मल्लसर्जा एक आत्मसम्मान वाले व्यक्ति थे। उन्होंने बाजीराव की सभी रियायतें ठुकरा दीं। वह बराबरी का व्यवहार चाहते थे और अपने

राज्य के लिए पूर्ण स्वायत्तता चाहते थे। उन्होंने इससे कम किसी भी चीज को बाजीराव से स्वीकार नहीं किया जो उन्हें नीचा दिखाना चाहता था और ऐसी शर्तों के लिए राजी करना चाहता था जिनसे राज्य की स्वाधीनता ही छिन जाए। मल्लसर्जा ने इन अपमानजनक शर्तों के लिए राजी होने की बजाय भूखा रहना और मर जाना बेहतर समझा। मल्लसर्जा का स्वास्थ्य इतना गिर गया कि ऐसा लगता था कि वह बहुत जल्दी ही चल बसेंगे। अतः बाजीराव ने इसके परिणामों से डरकर उन्हें रिहा करने का फैसला किया। अंततः उन्हें रिहा किया गया और एक बन्द रथ में भेजने की व्यवस्था की गई। पुणे से उनके चलने की खबर उनके परिवार के सदस्यों के पास भेज दी गई। वह जानते थे कि मल्लसर्जा बहुत कमजोर हैं। स्वाभाविक है कि वे उनके स्वास्थ्य के बारे में चिन्तित थे। सारा परिवार और दरबार के विश्वास-पात्र समर्थक दुरदुन्दी में आरभावी मठ आए जहां उन्होंने बीमार और अस्थिपिंजर स्वरूप मल्लसर्जा का स्वागत किया। वहां से वे उन्हें अर्ध-चेतनावस्था में सावधानी से कित्तूर लाए। जयों ही दल ने कित्तूर में प्रवेश किया, मल्लसर्जा के शासन के चौंतीस वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में 34 तोपें दागी गई। मल्सर्जा ने अपने लोगों से पूछा कि यह सब क्या है। उन्हें बताया गया कि उनके स्वदेश लौटने की खुशी मनाई जा रही है। वह उठने लायक नहीं थे। वह इसके तीन या चार दिन बाद चल बसे। उस समय उनके परिवार में दो पत्नियां—रुद्रम्मा व चेन्नम्मा तथा तीन छोटे पुत्र थे। इस प्रकार, मल्लसर्जा के अत्यन्त शानदार शासन का अन्त हो एया। उनका बड़ा पुत्र शिवलिंग रुद्रसर्जा, जिसे सभी बापू साहेब के नाम से जानते हैं, उनके स्थान पर गद्दी पर बैठा।

3. पतनकाल

शिवलिंग रुद्रसर्जा उर्फ बापू साहब, मल्लसर्जा के एक अविख्यात उत्तराधिकारी थे। उनका स्वास्थ्य अच्छा नहीं था और वह साहित्यिक अनुसंधानों में अधिक रुचि लेते थे। उन्होंने कन्नड़ में तीन पुस्तकें लिखी थीं। उनकी पत्नी वीरम्मा शिवगुट्टी के, जिसे शंषेदाबाद भी कहते थे, देसाई के संभ्रान्त परिवार की थीं। कहा जाता है कि वह मैसूर के एक नैयायिक विद्वान गनिगा चेन्नबसप्पा को अपने यहां लाए और उन्होंने उनसे दर्शन शास्त्र का अध्ययन किया तथा धर्म और दर्शन का पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया। वह अभी किशोर और अनुभवहीन थे और स्वार्थी चापलूसों तथा चाटुकारों से घिरे रहते थे। दरबार के अधिकारियों में गुटबाजी थी—एक गुट के प्रधान सरदार गुरुसिद्दप्पा थे जो अपने आपको पूरी तरह रानी चेन्नम्मा से अभिन्न मानते थे तथा उनके प्रति पूर्ण निष्ठावान थे। कृतघ्न स्वार्थियों के दूसरे गुट के प्रधान वेंकटराव और मल्लप्पशेट्टी थे जो अपने निजी स्वार्थों के लिए सरकार को कमजोर बनाना चाहते थे, और उन्हें इस बारे में कोई दुविधा नहीं थी। उनके ब्रिटिश अधिकारियों से सम्बन्ध थे और वे राज्य के कार्यों के बारे में उन्हें शासकीय गुप्त बातें बता देते थे। अंग्रेज कित्तूर के कार्य-कलापों के बारे में जानने के लिए, उत्सुक तो क्या, इच्छुक भी नहीं थे। वे तो किसी न किसी बहाने उसे हड़प लेना चाहते थे। बालक शिवलिंग रुद्रसर्जा वेंकटराव और मल्लप्प शेट्टी के जाल में आसानी से फंस गए। ये अंग्रेज़ों के पिट्ठू थे और अपने तुच्छ निजी फायदे के लिए कित्तूर को गंवाने के लिए तैयार थे।

शिवलिंगरुद्र सर्जा ने 1816 में देसगत की बागडोर संभाली थी। 1817 और 1818 में, अंग्रेज़ों और पेशवा बाजीराव के सम्बंधों में विषम संकट पैदा हो गया। उसमें खुला वैरभाव था और अंग्रेज़ पेशवा को

हमेशा-हमेशा के लिए पराजित करना चाहते थे जिससे कि वह उनकी विस्तारवादी योजनाओं के मार्ग में बाधक न बने। अंग्रेज़ों ने दक्षिण से पेशवाओं पर हमला करना आरंभ कर दिया। नवम्बर 1817 में, दक्षिण के आयुक्त श्री एल्फिंस्टन ने कित्तूर के देसाई को एक पत्र लिखा और पेशवाओं से लड़ने के लिए सहायता मांगी। 1818 में अंग्रेज़ों ने बेलगांव किले पर हमला कर दिया जो पेशवाओं के अधीन था और 21 मार्च से 12 अप्रैल 1818 तक किलाबंदी के दौरान कित्तूर के देसाई शिवलिंग रुद्रसर्जा ने जनशक्ति और साज-सामान से अंग्रेजों की सहायता की। 12 अप्रैल तक पेशवाओं को पूरी तरह से मार भगाया और बेलगांव के किले पर अंग्रेज़ों का कब्जा हो गया। इस प्रकार कित्तूर समेत बेलगांव के दक्षिण में पेशवा राज्य-क्षेत्र पर अंग्रेज़ों का शासन हो गया।

इसके तुरन्त बाद धारवाड़ के आयुक्त थामस मुनरो ने शिवलिंग रुद्र सर्जा को बुलवाया, और उसे 28 जुलाई 1818 को एक समझौता करने के लिए राजी किया जिसके अनुसार कित्तूर देसाई 1,75,000 रु० की वार्षिक भेंट देकर उस क्षेत्र को अपने पास रख सकते थे, जिसपर उनका शासन था। किन्तु इस समझौते के अनुसार, उससे खानापुर तालुका अंग्रेज़ों को देने के लिए कहा गया जिससे कि अंग्रेज़ अपनी सेना रख सकें और उनकी आय से उसका खर्च चला सकें। फिर भी उन्होंने उन्हें आश्वासन दिया कि कित्तूर शासकों के साथ सम्मानजनक व्यवहार किया जाएगा और राज्य के आन्तरिक प्रशासन में तब तक कोई हस्तक्षेप नहीं किया जाएगा, जब तक वे ऐसी कोई बात न करें जिससे अंग्रेज़ों के हितों को चोट पहुंचे।

अंग्रेज़ों को खानापुर सौंप देने की शर्त लज्जास्पद थी। इससे राज्य को अपनी सामरिक उपादेयता से और अपनी आय के एक बहुत बड़े भाग से हाथ धोना पड़ा। रानी चेन्नम्मा इसके बारे में अत्यन्त दुखी थीं। किन्तु वह असहाय थीं। उन्होंने कालमठ के पूज्यपाद स्वामीजी से बातचीत की और लम्बी चर्चा एवं सोच-विचार के बाद वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि अधिक बेहतर यही होगा कि नई गतिविधियों पर ध्यान-पूर्वक नजर रखी जाये तथा नये शासकों की अवज्ञा करने के लिए उप-

युक्त समय की प्रतीक्षा की जाए। वह इस उक्ति में विश्वास रखती थीं कि विवेक शौर्य का अधिक बेहतर अंग है, और उन्होंने इसी प्रकार समय काटने का निश्चय किया। उस समय, उन्होंने अपने आपको असहाय महसूस किया, और उन्होंने अपनी शक्तियां दरबार के दो प्रतिद्वन्द्वी गुटों के मतभेद को दूर करने में केन्द्रित कीं। वह शिवलिंग रुद्रसर्जा को राज्य के कामकाज में सलाह देती थीं। उन्होंने उसमें देशभक्ति की भावना, साहस और विश्वास पैदा करने का प्रयत्न किया। दूसरी ओर, अंग्रेज़ कित्तूर की इन गतिविधियों को देख रहे थे तथा उसके कार्यों में हस्तक्षेप करने के लिए उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा कर रहे थे। किन्तु रानी चेन्नम्मा की संयत और चतुर नीति से ऐसी संभावना फलीभूत नहीं हो सकी।

ज्यों-ज्यों दिन गुजरते गए, रानी चेन्नम्मा राज्य के कार्यों को अधिकाधिक अपने नियंत्रण में लेती गईं। उनमें यौवन, साहस और तीक्ष्ण बुद्धि थी। वह आकर्षक, सुगठित और सुन्दर लगती थीं। वह तलवार चलाने, घुड़सवारी करने, धनुर्विद्या और राज्य-कौशल में निपुण थीं। दरबारों में वह बैठकों की अध्यक्षता महान गरिमा और योग्यता से करती थीं। वह तत्काल निर्णय ले सकती थीं और उनके निर्णय ठीक समय पर तथा राज्य के सर्वाधिक हित में होते थे। कित्तूर पुनः विकास करने लगा तथा मजबूत और सम्पन्न बनने लगा। रानी चेन्नम्मा की ख्याति दूर-दूर तक फैल गई। उन्होंने अपनी लड़ाकू सेना को युद्ध के लिए सर्वथा तैयार रखा।

अंग्रेज़ों को, जिनका मुख्यालय, कित्तूर से केवल 40 कि० मी० दूर धारवाड़ में था, बेचैनी महसूस होने लगी। वे इस छोटे से राज्य की बढ़ती हुई शक्ति से भयभीत थे। यह राज्य दक्षिणी राज्यों में सबसे अधिक सम्पन्न राज्य था। उन्हें तो यह भी आशंका थी कि यदि इस राज्य को अपनी अधीनता में नहीं किया गया तो यह कित्तूर और अन्य दक्षिणी रजवाड़ों को एक समान लक्ष्य बनाने तथा एक समूह में संगठित होने के लिए प्रोत्साहित कर सकता है और परिणामस्वरूप उनकी सैन्य शक्ति के लिए घोर चुनौती का रूप धारण कर सकता है।

सन् 1822 में धारवाड़ के प्रधान कलक्टर थैकरे ने कित्तूर के शासक को एक पत्र लिखा और उन पर आरोप लगाया कि राज्य में ठगों और लुटेरों को शरण दी जा रही है जिसके कारण इस क्षेत्र की शांति भंग हो रही है। उसने इस बात को गंभीरता से लेने की धमकी दी और कहा इसके परिणाम गंभीर होंगे। ये आरोप निराधार और काल्पनिक थे और यह प्रकट था कि अंग्रेज़ कित्तूर को हड़पने का कोई बहाना ढूंढ़ना चाहते थे। बहरहाल, सद्बुद्धि ने काम किया और प्रस्तावित हस्त-क्षेप बन्द हो गया। अंग्रेजों को डर था कि ऐसे काल्पनिक आधारों पर कित्तूर के कार्यकलापों में हस्तक्षेप करने के किसी भी प्रयत्न से दक्षिण के राजा उनके खिलाफ एकजुट हो सकते हैं। अतः वे उसके कार्यों में हस्तक्षेप को न्यायोचित ठहराने की दृष्टि से उपयुक्त कारण ढूंढ़ने के लिए हमेशा सावधान रहते हुए ठीक मौके की तलाश में रहे।

कुछ समय तक कित्तूर के शांतिपूर्ण जीवन में कोई अप्रिय घटना नहीं घटी। व्यापार और वाणिज्य की उन्नति हुई। सेना को किसी भी स्थिति का मुकाबला करने के लिए सतर्क रखा गया। प्रतिद्वन्द्वी गुटों के मतभेद दूर हो गए और राज्य के कार्यों पर रानी चेन्नम्मा का पूर्ण एवं दृढ़ नियन्त्रण था। शिवलिंग रुद्रसर्जा, जिसका स्वास्थ्य यक्ष्मा के रोग के कारण तेजी से गिरता जा रहा था, राज्य के केवल पदीय प्रधान के रूप में काम कर रहे थे। वह मृत्यु-शैय्या पर पड़े हुए थे। वह लगभग आठ वर्ष राज्य करने के बाद सितम्बर 1824 में मर गए। रानी चेन्नम्मा ने कित्तूर को अपने पूरे नियंत्रण में ले लिया और वह कित्तूर की साम्राज्ञी बन गई।

4. रानी चेन्नम्मा

मल्लसर्जा की, जिसके शानदार शासनकाल का विस्तृत विवरण दूसरे अध्याय में दिया जा चुका है, दो पत्नियां थीं—रुद्रम्मा और चेन्नम्मा। पहली पत्नी रुद्रम्मा तल्लूर के प्रसिद्ध देसाई परिवार से आई थीं, जिसके वंशज वहां आज भी हैं। वह स्वयं युद्धकला में निपुण एक वीरांगना थीं। ऐतिहासिक अभिलेखों और लेखों में इस बात के प्रमाण स्वरूप अनेक निर्देश मिलते हैं कि देसनूर के युद्ध में टीपू सुल्तान के साथ लड़ाई में उसने स्वयं भाग लिया था और टीपू की सेना के छक्के छुड़ा दिए थे और उसे वापस खदेड़ दिया था। उसका पालन-पोषण और उसकी शिक्षा उसके परिवार द्वारा देसाई परिवारों की सर्वोच्च परम्पराओं के अनुसार की गई थी। वह उर्दू और पारसी जानती थीं और मल्ल सर्जा के शासकीय पत्र व्यवहार में उनकी सहायता करती थीं। मल्ल सर्जा और टीपू सुल्तान के बीच जो पत्र व्यवहार हुआ था उनमें से अधिकांश पत्र उन्होंने तैयार किए थे। चेन्नम्मा मल्लसर्जा की दूसरी पत्नी थी। यदि मल्लसर्जा अपनी प्रतिभाशाली पहली पत्नी से खुश थे तो कोई भी यह पूछ सकता है कि उन्होंने दूसरा विवाह क्यों किया। चेन्नम्मा से मल्लसर्जा के प्रथम मिलन की कथा, जिसके कारण उनका विवाह हुआ, अनेक कविताओं और लोक गीतों में वर्णित है।

लोककथा है कि कित्तूर के राजा मल्लसर्जा देसाई चेन्नम्मा से नाटकीय परिस्थितियों में मिले थे। मल्लसर्जा दक्षिणी रियासतों के देशभक्त प्रमुखों के छोटे से समूह के प्रायः अस्वीकृत नेता थे। वह टीपू और पेशवाओं में निरन्तर संग्राम से अत्यन्त दुखी थे जिसके परिणामस्वरूप छोटे-छोटे राज्यों की स्थिति अत्यन्त अनिश्चित और दयनीय हो गई थी। इसके अतिरिक्त, इन शक्तिशाली दो गुटों में निरन्तर लड़ाई के कारण विदेशी आक्रामकों, विशेषकर अंग्रेज़ों को इस दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति का

फायदा उठाने, और दोनों पक्षों को कमजोर करके उन्हें विभाजित और बेकब्जा करने का खेल खेलने का अवसर मिल गया। मल्लसर्जा महान् देशभक्त थे। उन्हें अंग्रेजों का और अधिक शक्तिशाली होना अच्छा नहीं लगा और पेशवा तथा टीपू जैसी बड़ी शक्तियों को अंग्रेज़ों की चाल में फंसते देखकर वह बहुत दुखी हुए। वह कोल्हापुर के राजा समेत सभी देसाइयों और प्रमुखों को एक सुगठित दल में संगठित करना चाहते थे जो अंग्रेज़ों से लड़ने के लिए एक शक्ति समझा जाए। वह इस काम को अंग्रेजों को अपने इरादे का कोई सुराग दिए बिना चुपचाप किन्तु प्रभावशाली ढंग से करना चाहते थे। अतः वह दक्षिण के उन राज्यों के सभी देसाइयों और प्रमुखों से मिलने के लिए गए, जिनमें उन्हें विश्वास था। ऐसे एक दौरे पर वह काकति गए जोकि बेलगांव जिले में एक छोटा सा देसगत था। इसका मुखिया धुलप्पा गौड़ देसाई था जो कर्नाटक के उत्तरी भाग में एक शक्तिशाली व्यक्ति था। उस समय काकति सांगली रियासत में था। वह काकति के समीप एक स्थान पर रुके और उनसे अपने मिलने के इरादे के बारे में सूचना भेजी तथा देसाई से इसके उत्तर की प्रतीक्षा की। वह इस स्थान पर लगभग एक दिन ठहरे।

गांव वालों ने बताया कि इस क्षेत्र में एक नर भक्षी बाघ घूम रहा है। उससे किसानों में भय और आतंक छाया हुआ है। उन्होंने मल्लसर्जा से बाघ को मारने और उसके भय से मुक्त करने की प्रार्थना की। अतः मल्लसर्जा, जो कि एक कुशल शिकारी थे, परिचरों का छोटा सा दल लेकर जंगल में निकल पड़े। अन्ततोगत्वा वे बाघ को ढूंढ़ने में सफल हो गए। मल्लसर्जा ने निशाना साधा और एक ही बाण से उस भयंकर बाघ को मार गिराया। जब वह घायल बाघ के पास पहुंचे तो उन्हें यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि उसके पास पूरी तरह सशस्त्र एक कन्या बैठी है। उसने उस मृत बाघ पर अपना अधिकार बताया और अजनबी पर अत्यन्त क्रोधित हुई कि उसने उसके खेल में हस्तक्षेप क्यों किया। मल्लसर्जा ने इस सुडौल सुगठित रूपवती किशोरी पर दृष्टि डाली जिसका अंग-प्रत्यंग रानी के समान परिलक्षित होता था। उस समय चेन्नम्मा अपने पूर्ण यौवन पर थी। धुलप्पा गौड़ देसाई और पद्मावती की इस पुत्री

का जन्म सन 1778 में हुआ था और उस समय उसकी आयु 22 वर्ष की थी। वह सुन्दर और चुस्त थी।

मल्लसर्जा की दृष्टि इस रूपवती कन्या पर अटक गई और वह उसके यौवन तथा सौन्दर्य को देखकर स्तब्ध रह गए। फिर उन्होंने बाघ की ओर देखा। उसके शरीर पर दो बाण लगे थे। उस किशोरी का कहना था कि यह बाघ मेरे बाण से मरा है। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि राजा उसके सौन्दर्य और साहस को देखकर मंत्र मुग्ध रह गए और उस पर अपना हृदय न्योछावर कर बैठे। वह यह जानकर अत्यन्त प्रसन्न हुए कि वह घुलप्पा गौड़ देसाई की पुत्री है। उन्होंने मृत बाघ चेन्नम्मा को ले जाने दिया और उसकी वीरता के लिए उसकी बेहद प्रशंसा की। चेन्नम्मा ने सलज्ज भाव से उनकी प्रशंसा स्वीकार की और वह यह जानकर बहुत खुश हुई कि वह अगले दिन उनके घर आने वाले हैं। मल्लसर्जा परम सुन्दर थे। उन्होंने भी चेन्नम्मा को प्रभावित किया और उनका मोहक व्यक्तित्व देखकर वह मंत्रमुग्ध रह गई। उसने यह कहकर विदा ली कि मुझे अपने घर पर आपका स्वागत करके बेहद खुशी होगी।

अगले दिन जब मल्लसर्जा घुलप्पा गौड़ देसाई के घर गए तो उन्होंने उनसे सबसे पहले दक्षिणी रियासतों के सभी देसाइयों को एकता के सूत्र में बांधने की अपनी योजनाओं के बारे में बातचीत की, जिससे कि उन सबका अस्तित्व कायम रह सके और अंग्रेज़ों, पुर्तगालियों तथा फ्रांसीसियों जैसे विदेशी आक्रामकों से लड़ाई छिड़ने की स्थिति का मुकाबला करने के लिए वे अपने आपको तैयार रख सकें। इसके बाद उन्होंने उनकी पुत्री चेन्नम्मा से अकस्मात मुलाकात की बात बतायी और उसके साथ विवाह करने के अपने इरादे का संकेत दिया। स्वभावतः घुलप्पा गौड़ देसाई इस उज्ज्वल भविष्य से बहुत खुश हुए। चेन्नम्मा अपने बाड़े में पुनः मल्लसर्जा से मिली। उस समय मल्लसर्जा ने अपनी पहली पत्नी रुद्रम्मा के बारे में उसे बताया जो बहुत बहादुर और प्रतिभावान नारी थी। चेन्नम्मा ने इसका बुरा नहीं माना। वह उनकी दूसरी पत्नी बनने के लिए तैयार थी। उन दिनों शाही परिवारों में बहु-विवाह प्रथा बहुत प्रचलित थी। उसने मल्लसर्जा को वचन दिया कि मैं बड़ी रानी को अपनी बड़ी बहन

के रूप में मानूंगी और उनके साथ निबाह लूंगी; और उन्हें कभी नाराज नहीं करूंगी। इसके बाद शीघ्र ही काकति में विवाह सम्पन्न हुआ और जब मल्लसर्जा कित्तूर वापस लौटे तो उनके साथ उनकी बहादुर, चतुर और सुन्दर दूसरी पत्नी चेन्नम्मा भी थीं।

आगामी वर्षों में उन्होंने समझ-बूझकर अपने वचन का पालन किया। वह रुद्रम्मा से अपनी बड़ी बहन-जैसा प्यार करती थीं और उनके पुत्रों—शिवलिंग रुद्रसर्जा (उर्फ बापू साहब) और वीर रुद्रसर्जा (उर्फ बाबा साहब) को वही वात्सल्य देती थीं जो उन्होंने अपने पुत्र शिवबासवराज (उर्फ बाला साहब) को दिया था। वह तीनों को एक-से वात्सल्य और प्रेम से देखती थीं।

चेन्नम्मा की बहुत इच्छा थी कि रानी रुद्रम्मा का पुत्र शिवलिंगरुद्र सर्जा मल्लसर्जा का उत्तराधिकारी बने। उन्होंने स्वयं यह सुझाव दिया था। भाग्य ने भी उनकी इच्छा पूरी करने का कुचक्र चलाया। उनका पुत्र शिवबासवराज कुछ समय बीमार रहकर शीघ्र ही चल बसा। वीररुद्र सर्जा भी कुछ वर्षों के भीतर मर गया। रुद्रम्मा का पुत्र शिवलिंगरुद्र सर्जा ही मल्लसर्जा के बाद कित्तूर की गद्दी पर बैठने का एकमात्र हकदार बचा।

जैसा कि पहले ही कहा जा चुका है, रानी रुद्रम्मा एक ज्ञानवती और **विदुषी** महिला थीं। वह धर्म और दर्शन में अधिकाधिक रुचि लेने लगीं। धीरे-धीरे उन्होंने सार्वजनिक जीवन से संन्यास ले लिया और वह पूजा पाठ में अधिक समय बिताने लगीं। कलमठ के स्वामी जी प्रवचन देते थे और उन्हें महाकाव्य तथा अन्य धार्मिक ग्रन्थों का पाठ सुनाते थे। उन्होंने मलप्रभा नदी के किनारे संगोल्ली में अपने लिए एक छोटा सा मकान बनवाया जहां वह अपनी पूजा-पाठ में दत्तचित रह सकें। उन्होंने राज्य के कार्य चेन्नम्मा की देख-रेख में छोड़ दिए जिन्होंने घरेलू काम में और राज्य के कार्यों में अधिकाधिक उत्तरदायित्व संभालना, स्वेच्छा से, स्वीकार कर लिया। इसके बाद वह अपना अधिकाधिक समय पूजा-पाठ और अध्ययन मनन में बिताने लगीं।

चेन्नम्मा राज्यकौशल में गहरी रुचि लेती थीं। वह अन्याय और

क्रूरता को सहन कर नहीं सकती थीं। इसी गुण के कारण वह अपने पति और जनता की प्रिय पात्र बन गई थीं। वह राज्य चलाने में अपने पति की मदद करने लगीं जो मराठों और अंग्रेज़ों की दो विरोधी शक्तियों के बीच निरन्तर संघर्ष में डांवाडोल हो रहा था। इस प्रकार चेन्नम्मा उस क्षेत्र के राजनीतिक कार्यकलापों में सक्रिय रूप से भाग लेने लगीं। वह सभी अभियानों और युद्धों में राजा मल्लसर्जा के साथ जाती थीं। जब राजा शासन सम्बन्धी मामलों पर विचार-विमर्श करते थे तो वह दरबार में उनके साथ बैठती थीं। वह हर दृष्टि से अपने पति की मित्र, दार्शनिक और मार्गदर्शक थीं। अतः इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि पति की मृत्यु के बाद राजनीतिक शक्ति सहज ही उनके पास आ गई और वह बिना किसी कठिनाई के राज्य के कार्यों को अपने नियंत्रण में ले सकीं। वह राजनीतिक क्षेत्र में सभी हलचलों और गतिविधियों को बारीकी से देखती थीं और उनका अध्ययन करती थीं। वह बुद्धिमती थीं और विद्यमान राजनीतिक अवस्थाओं में उनकी गहरी पकड़ थी। साहस और दूरदर्शिता की प्रतिभा से सम्पन्न रानी चेन्नम्मा जनता से स्नेह करती थीं और उनसे खुलकर मिलती-जुलती थीं। वह उनकी समस्याओं और तकलीफों को जानती थीं, और नब्ज पहचान सकती थीं। वह तत्काल निर्णय ले सकती थीं। उन्होंने गरीब तथा जरूरतमन्द की सहायता करने में अपनी पूरी शक्ति लगा दी। वह अपनी सेना और अपने सैनिक सरदारों से निकट सम्पर्क रखती थीं। वह वीरतापूर्ण कार्यों की तुरन्त प्रशंसा करती थीं और वीर सिपाहियों को बढ़िया-बढ़िया उपहार देती थीं। इस प्रकार चेन्नम्मा मल्लसर्जा की मृत्यु के बाद आठ वर्ष तक राज्य की नौका सुचारु रूप से खेती रहीं और शिवलिंग रुद्र सर्जा केवल नाम के प्रधान रहे।

5. दत्तकग्रहण का प्रश्न

अंग्रेज कित्तूर के कार्यों में हस्तक्षेप करने और अन्ततः उसे अपने अधीन करने के अवसर की प्रतीक्षा करते रहे। वे राज्य की सभी गतिविधियों पर बड़ी बारीकी से नजर रखे हुए थे। शिवलिंगरुद्र सर्जा लम्बे समय से अस्वस्थ चल रहे थे और वह तो बस पदीय प्रधान मात्र थे। रानी चेन्नम्मा ही वस्तुतः राज्य का शासन चला रही थीं। धारवाड़ के चीफ पोलिटिकल एजेन्ट और कलक्टर थैकरे ने बीमार शिवलिंग रुद्र से मिलने के बहाने 18 मई 1824 को कित्तूर का दौरा किया। एजेन्ट कुछ दवाइयां साथ लाया था और इस दौरे में उसने कुछ समय शिवलिंग रुद्र के साथ बिताया और उनके साथ कित्तूर के राजकाज सम्बन्धी मामलों पर चर्चा की। इस मुलाकात में शिवलिंग रुद्र सर्जा ने एक पुत्र को गोद लेने के अपने आशय के बारे में कुछ भी नहीं बताया, यद्यपि उस समय उनके मस्तिष्क में यह बात थी। उसके दोनों भाई युवावस्था में ही मर गए थे और उनके स्वयं के कोई सन्तान न थी। उन्हें यह प्रश्न कचोटे जा रहा था कि मेरी मृत्यु के बाद मेरा उत्तराधिकारी कौन बनेगा। बहरहाल, वह विवेकी थे और उन्होंने दत्तक ग्रहण संबन्धी बात थैकरे के सामने नहीं रखी।

शिवलिंग रुद्र सर्जा का स्वास्थ्य निरंतर बिगड़ता गया और जून मास में उनकी अवस्था इतनी बिगड़ गई कि उन्होंने अपने विश्वासपात्र सहायकों को बुलवाया और किसी लड़के को गोद लेने के अपने आशय का भेद उनके समक्ष रखा। इस बैठक में जिन लोगों ने भाग लिया था उनमें ये भी थे—कन्नूर मल्लप्पा कन्नूर वीरप्पा, सूबेदार मल्लप्पा, और सरदार गुरु सिद्दप्पा। शिवलिंग रुद्र सर्जा ने गुरु सिद्दप्पा से शाहपुर तालुका में सिघोली, मरिकट्टी, खोडणपुर और मस्तमरडी और सूबेदार मलप्पा से मरगोड़ तालुका में चिक्कोस जाने के लिए कहा। उनका ध्येय

राजा के निकट सम्बन्धी रिश्तेदारों के परिवारों में से कोई चार या पांच बालकों को लाना था ताकि वह अन्ततः उनमें से अपना उत्तराधिकारी चुन सकें। तदनुसार गुरु सिद्दप्पा सिंघोली और मस्तमरडी गया और वहां से अपने साथ चार लड़कों को लाया। सूबेदार मल्लप्पा अपने साथ किसी को भी नहीं ला सका क्योंकि निकट सम्बन्धियों के सभी बालकों की आयु काफी अधिक हो चुकी थी। शिवलिंग रुद्र सर्जा ने गुरु सिद्दप्पा द्वारा लाए गए चार लड़कों में से अन्ततः मस्तमरड़ी के बल्लप्पा गौड़ के पुत्र शिवलिंगप्पा को चुना। ऐसा प्रतीत होता है कि जिस लड़के को अंततः चुना गया वह स्वस्थ, चुस्त और तेजवान था। उन्होंने कहा कि मैं दत्तकग्रहण समारोह के लिए अंतिम अनुमोदन तब दूंगा जब मैं यह महसूस करूंगा कि मेरा अंत निकट है। उन्होंने उस लड़के को गोद लेने के अपने आशय के बारे में मस्तमरड़ी के बल्लप्प गौड़ को पत्र भेजा। मराठी में लिखे गए पत्र का अनुवाद निम्नलिखित है :

"मेरी अपनी कोई संतान नहीं है। हमने आपके पुत्र शिवलिंगप्पा को यहां रखने और अपने पुत्र के रूप में गोद लेने का निश्चय किया है। मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं है। अतः आपसे अपेक्षा की जाती है कि इस पत्र के मिलते ही आप अपने पुत्र को ले आएं। हम शाही तमगे के साथ उसे गोद लेंगे और संस्थान उसे सौंप देंगे। आप हमारे भाइयों में से एक निकट के दावेदार हैं।"[1]

उन्होंने एक बैठक में अपने कुछ निकट संबंधियों को विश्वास में लिया क्योंकि वह इस लड़के को गोद लेने के अपने आशय को सार्वजनिक रूप से प्रकट करना नहीं चाहते थे, क्योंकि दरबार में गुटबाजी थी और अनेक व्यक्ति अपने बालकों को गोद देने के अभिलाषी थे। वह विभिन्न दलों के षडयन्त्र से भयभीत थे। वह इस लड़के को अपने हाथ से पकड़ कर ले गए और उन सबको बताया, "मेरे विचार में यह लड़का हर

---

1. मराठी में इस पत्र की फोटोस्टेट प्रति कर्नाटक सरकार द्वारा 1962 में 'हिस्ट्री आफ फ्रीडम मूवमेंट इन कर्नाटक', जिल्द 1 में प्रकाशित हुई है।

तरह से मेरा उपयुक्त उत्तराधिकारी है। अतः मेरी इच्छा है कि यह मेरा उत्तराधिकारी बने और मैं इस बारे में आपकी सम्मति तथा अनुमोदन चाहता हूं।" उपस्थित नातेदारों और विश्वासपात्र साथियों ने इस पर सम्मति दे दी। अन्ततोगत्वा लड़के को कित्तूर महल में परिवार के साथ रखा गया और प्रशासन के कामकाज में हाथ बंटाने का मौका दिया गया। किन्तु पुनः जुलाई के पहले सप्ताह में शिवलिंग रुद्र सर्जा का स्वास्थ्य बड़ी तेजी से बिगड़ गया जिससे भारी चिन्ता पैदा हो गई। 10 जुलाई 1824 को शिवलिंग रुद्र सर्जा ने थैकरे को एक विस्तृत पत्र भेजा जिसमें शिवलिंगप्पा को गोद लेने की अपनी इच्छा स्पष्ट शब्दों में व्यक्त की। पत्र का मुख्य पाठ निम्नलिखित रूप में है :

"अत्यन्त बीमार और कमजोर होने की वजह से मैं संस्थान का एक वारिस नियुक्त करना चाहता हू, और इस उद्देश्य से मल्लसर्जा (मूल नाम जिसका दत्तक पुत्र मस्तमरड़ी का शिवलिंगप्पा था) को हुबली के सर देसाई, सर देशपांडे और नाडगौड़ के रूप में मोहर द्वारा नियुक्त और पुष्ट करना चाहता हूं। संस्थान के आजमनगर सरूफ, खानापुर, सरूफ चांदगड़, सरूप सूपा आदि के सर देसाई और सरदेशपांडे। अतः यह आपकी कृपा पर निर्भर करता है कि यह संस्थान उसके पास रहे जिसका सुख आपकी उदारता से मेरे पूर्वजों ने और मैंने लिया है।"

बहरहाल, शिवलिंग रुद्र सर्जा के स्वास्थ्य में कुछ सुधार हो गया, अतः यह पत्र थैकरे को तुरन्त नहीं भेजा गया। इसके बाद लगभग दो मास तक उनका स्वास्थ्य काफी अच्छा रहा, किन्तु सितम्बर के प्रथम सप्ताह में पुनः उनकी हालत बिगड़ने लगी। 11 सितम्बर 1824 को उनकी हालत बहुत नाजुक थी और उन्होंने यह महसूस किया कि मेरा अंत समीप है। उस दिन दोपहर बाद लगभग दो बजे उन्होंने अपने सरदारों और अन्य सहायकों को बुलवाया तथा अन्ततः दत्तक ग्रहण समारोह आयोजित करने के आदेश दे दिए। तदनुसार, लड़के को लाया गया और मंगल स्नान जैसे प्रारंभिक अनुष्ठान के बाद उसे सिक्का से विभूषित किया गया जो कि देसाइत्व का अधिकार चिह्न था। उसका नाम सवाई

मल्ल सर्जा रखा गया और उसको वैध उत्तराधिकारी के रूप में कित्तूर का सर्वप्रभुत्व सौंप दिया गया ।[1]

रानी चेन्नम्मा कित्तूर के भविष्य के लिए चिंतित थीं । उन्हें थैकरे के षडयन्त्रों के बारे में और कन्नूर मल्लप्प जैसे अपने दरबार के कुछ सहायकों के छल के बारे में भी आशंका थी । वह चाहती थीं कि थैकरे के कित्तूर के कामकाज में हस्तक्षेप करने की कोई संभावना न रहे । उन्होंने सभी महत्वपूर्ण नेताओं तथा सरदारों जैसे कन्नूर मल्लप्प, सरदार मल्लप्प शेट्टी, गुरु सिद्दप्पा, हिम्मतसिंह, नरसिंह राव, गुरुपुत्र वीरप्पा आदि को बुलवाया और उनसे अपील की कि वे अपने मतभेदों को भुला दें और अटूट निष्ठा दर्शित करें, और इस संकट की घड़ी में राज्य को निशर्त सहायता और समर्थन दें । उनकी ओजस्वी अपील का प्रायः सभी पर असीम प्रभाव पड़ा । उन्होंने राज्य के प्रति पूरे हृदय से अपनी निष्ठा की प्रतिज्ञा की और दत्तक ग्रहण के समारोह में भाग लिया । फिर भी, ऐसा प्रतीत होता है कि कन्नूर मल्लप्प और वेंकट राव ने समारोह में वस्तुतः भाग लिया था और समर्थन देने की प्रतिज्ञा तो की थी, किन्तु उनके मन में छल था । रानी चेन्नम्मा ने विश्वास के प्रतीक-स्वरूप शिवलिंग रुद्र द्वारा लिखित पत्र कन्नूर मल्लप्पा को दिया और उससे कहा कि आप यह पत्र थैकरे को देने के लिए सरदार मल्लप्पा के साथ धारवाड़ चले जाएं । उन्हें आशा थी कि इस संकट काल में वे कित्तूर के प्रति निष्ठावान रहेंगे और दत्तक ग्रहण के बाद, जो उसी अपराह्न को हुआ था, देसगत के जारी रहने का समर्थन करेंगे । शिवलिंग रुद्र सर्जा इस घटना के बाद लगभग बारह घंटे जीवित रहे । उनकी मृत्यु रविवार तारीख 12 सितम्बर 1824 को प्रातः 4 बजे हुई । कन्नूर मल्लप्पा और सरदार मल्लप्पा जिस पत्र को साथ लाये थे,वह थैकरे को तारीख बारह की प्रातः दिया गया । थैकरे को पत्र की असलियत के बारे में संदेह हुआ, क्योंकि उस पर तारीख 10 जुलाई 1824 पड़ी हुई थी । उसने सोचा कि यह पत्र या तो

---

1. समारोह का विवरण श्री भावेप्पा भूगी, बैलहोंगल, के प्राइवेट पुरातत्व संग्रहालय में, मराठी में लिखित एक पत्र में मिलता है ।

जाली है या यह हितबद्ध व्यक्तियों द्वारा, राज्य पर शक्ति रखे रखने की दृष्टि से, शिवलिंग रुद्र सर्जा से, उनके अचेत हो जाने के बाद हस्ताक्षर कराया गया है। उसने तुरंत धारवाड़ के सिविल सर्जन डा० जी० एच० बेल को बुलाया और उससे कहा कि आप कित्तूर चले जाएं और देसाई की हालत के बारे में पता लगाएं। तदनुसार डा० बेल कित्तूर गए और वापस लौटकर उन्होंने वहां जो कुछ देखा था, उसकी रिपोर्ट थैकरे को दी। तारीख 12 सितम्बर 1824 की यह रिपोर्ट निम्न प्रकार है—

प्रेषक : जी० एच० बेल 17 सितम्बर, 1824

प्रथम सर्जन, धारवाड़।

सेवा में,

माननीय थैकरे,

राजनीतिक एजेन्ट, धारवाड़।

महोदय,

आपकी सेवा में निवेदन है कि मैं आपकी इच्छानुसार इस मास की 12 तारीख को देसाई से मिलने कित्तूर गया। कित्तूर से लगभग दो मील दूर मुझे एक सवार मिला जिसने मुझे बताया कि राजा मर चुके हैं किन्तु चूंकि मैंने यह वांछनीय समझा कि मैं आपको वही स्थिति बताऊं जिसमें मुझे शव मिले, अतः मैं कित्तूर गया। अपराह्न तीन बजे पहुंचने पर मैंने प्रार्थना की कि मुझे राजा का पार्थिव शरीर दिखा दीजिए। मैंने देखा कि वह खुले 'दीवान खाने' में राजकीय सम्मान के साथ रखा हुआ था और अत्युत्तम ढंग से सुसज्जित था। मुझे शव में से कोई दुर्गन्ध नहीं आई, किन्तु उसकी आकृति से, उसकी वेशभूषा पहनाने, उसे हटाने और उस ढंग से लिटाने में, जिसमें मैंने उसे देखा था, लगे समय से मेरा विचार है कि मृत्यु मेरे पहुंचने से कुछ समय पहले हुई होगी। महल का आंगन देशवासियों से भरा हुआ था और ऐसा प्रतीत होता था कि अंतिम दर्शन के लिए जनता का प्रवेश बेरोकटोक था।

भवदीय

धारवाड़, हस्त०। जी० एच० बेल

17 सितम्बर, 1824 प्रथम सर्जन, धारवाड़।

शिवलिंग रुद्र सर्जा के पत्र में उल्लिखित तारीख की त्रुटि थैंकरे के लिए पत्र की विषय-सामग्री की सत्यता के बारे में जांच करने के लिए पर्याप्त कारण था। एजेन्ट ने इस अवसर का लाभ उठाया। शिवलिंग रुद्र सर्जा के मरने के दो दिन के भीतर यानी 14 सितम्बर 1824 को वह कित्तूर गया और उसने महल को छान मारा तथा शाही परिवार के सदस्यों और अधिकारियों को तंग किया तथा कित्तूर को ब्रिटिश साम्राज्य में मिलाने के लिए आधार तैयार करने के लिए भरसक प्रयत्न किए। नीचे उद्धृत विस्तृत पत्र[1] जो उसने दक्षिण के आयुक्त चेपलिन को उसी दिन भेजा था, स्पष्टतः उसकी मनोवृत्ति को तथा उन उपायों को प्रकट करता है जो उसने लम्बे समय से पल्लवित अपनी इच्छा को पूरी करने के लिए किये थे—

1. महोदय,

कुन्नूर मल्लशेट्टी नामक कित्तूर के प्रधान सेवकों में से एक सेवक मेरे पास इसी 12 तारीख को दोपहर के लगभग यह कहने के लिए आया था कि उसके मालिक मर रहे हैं, और उसने एक पत्र दिया था जिसकी प्रतिलिपि प्रस्तुत है, जिसमें एक पुत्र को गोद लेने की घोषणा की गई है। यह पत्र 10 जुलाई का है और इसमें उल्लिखित है कि दत्तक ग्रहण उस दिन हुआ था।

2. मालपाह ने बताया कि जब वह 12 तारीख को कित्तूर से चला था तो देसाई अचेत थे, किन्तु दत्तक ग्रहण का समारोह उसी दिन प्रातः हुआ था और तत्पश्चात उस कार्य के सम्मान में सलामी दी गई थी।

3. देसाई की मृत्यु के बारे में अनेक समाचार मिलने पर, और यह विश्वास करने का प्रत्येक कारण होने पर कि नियमित दत्तक ग्रहण नहीं हुआ, मैंने मालपाह से पूछा कि क्या यह वांछनीय नहीं है कि सिविल सर्जन आपके मालिक के पास जाएं और उनकी अनुमति मिलने पर मैंने श्री बेल से कित्तूर जाने की प्रार्थना की। वह सज्जन तुरन्त गया, किंतु

---

1. उपर्युक्त पत्र धारवाड़ के कलक्टर थैंकरे के कार्यालय में एक सहायक द्वारा अंग्रेजी में किया गया अपरिष्कृत रूपान्तर है।

उसने देखा कि राजा पहले ही मर चुका है, शव के देखने से ऐसा लगता था कि मृत्यु मालपाह के कित्तूर से चलने से पहले हो चुकी थी। अतः यदि देसाई गोद लेने के लिए आवेदन करता और इसकी इजाजत अभिप्राप्त कर लेता तो भी संदेह करने के लिए प्रबलतम आधार होते कि उन्होंने आज्ञा का स्वयं लाभ उठाया है या नहीं।

4. मई में मेरे कोल्हापुर से लौटने पर देसाई ने प्रार्थना की कि आप मुझे दवाई भेज दें और धारवाड़ जाते समय कित्तूर आएं। मैंने प्रार्थना के अनुसार कार्य किया और 18 मई को उनके साथ विस्तार पूर्वक बातचीत की। यद्यपि वह बुरी तरह बीमार थे और उन्होंने अपने कामकाज के बारे में खुलकर बात की थी, किन्तु वे दत्तक ग्रहण के विषय में पूरी तरह मौन रहे।

5. देसाई के सेवकों के षड्यंत्रों को सुनकर और यह संभाव्य सोचकर, कि हो सकता है कि अपने मालिक की मृत्यु होने पर वे यह आरोप लगाएं कि वह इस विषय की उद्घोषणा की अज्ञानता से गोद लेने की इजाजत के लिए सरकार से आवेदन करने में असफल रहे, मैंने लगभग छह सप्ताह पूर्व उद्घोषणा को विभिन्न मुखियाओं के वकीलों की उपस्थिति में अन्य अनेक उद्घोषणाओं के साथ दोहरा दिया जिससे कि वे सब दत्तक ग्रहण को वैद्य करने के आवश्यक उपायों से पूर्णतः अवगत हो सकें।

6. देसाई के मरने के बाद मैंने उनके मुख्य सेवक को परिस्थितियों का स्मरण कराया और उससे पूछा कि वह दत्तक ग्रहण के समय के बारे में अपने प्राख्यान का दत्तक की घोषणा करने वाले पत्र की तारीख से तालमेल कैसे बैठा सकता है। मालपाह ने इस विरोधाभास को स्पष्ट करने का कोई प्रयत्न नहीं किया, और जो कुछ मैंने सुना है उस सब से यह प्रकट है कि यद्यपि मृतक से उनके हितबद्ध सेवकों ने अत्यधिक मिन्नतें की होंगी, किन्तु उन्होंने अपने अशक्त क्षणों में भी कभी सम्मति नहीं दी, दत्तकग्रहण की इजाजत के लिए आवेदन करने का उनका कभी आशय नहीं था, और यदि दत्तक ग्रहण समारोह हुआ भी था तो भी यह तब तक सम्पन्न नहीं हुआ था जब तक देसाई या तो मरे नहीं थे या

बिलकुल अचेत नहीं हो गए थे ।

7. पत्र में जिस बालक का संकेत है वह स्वर्गीय राजा का बहुत दूर का साम्पार्श्विक नातेदार है, और ऐसा प्रतीत नहीं होता कि उसे या देसाई के नातेदारों में से अन्य किसी को वंशज होने के आधार पर कित्तूर के नव निर्वाचित संस्थान का उत्तराधिकार पाने का अधिकार है। कहा जाता है कि प्रश्नगत लड़के को गोद के प्रयोजनार्थ चुना गया और गद्दी पर बैठाया गया, किन्तु पहले उल्लिखित कारणों से यह प्रकट होता है कि यह देसाई के सेवकों की चाल थी, जिनका एकमात्र उद्देश्य अपने निजी प्रभाव को स्थिरता प्रदान करना था। यह उल्लेखनीय है कि पिछली तारीख के पत्र पर देसाई के हस्ताक्षर बहुत कम पठनीय हैं, और अक्षर उनके सामान्य हस्तलेख से बिल्कुल भिन्न हैं। उनका लेख अतीव सुन्दर और भिन्न था ।

8. मृतक के परिवार में उसकी विधवा, जिसकी आयु केवल 11 वर्ष है, उसकी सौतेली मां उसके भाई की विधवा है जिसकी आयु लगभग 16 वर्ष है। शेष नातेदार इतनी दूर की साम्पार्श्विक शाखाओं के वंशज हैं कि मैं अभी तक इनके सबके एक|भी पूर्वज को ढूंढ़ निकालने में असमर्थ हू उत्तराधिकार के बारे में सरकार का चाहे कुछ भी विनिश्चय हो, यदि सम्पदा का भार ग्रहण नहीं किया गया तो अवयस्कता लम्बे समय तक चलेगी, अतः मुझे विश्वास है कि मेरे कित्तूर जाने के लिए आपका अनुमोदन प्राप्त होगा ताकि दत्तकग्रहणा के बारे में स्थानीय जांच की जा सके और शांति प्राप्त करने के लिए तथा दुरुपयोग को रोकने के लिए कदम उठाये जा सकें ।

9. पहले, यह समीचीन प्रतीत हुआ है कि सभी सरदारों और विभागाध्यक्षों को बुलाया जाए और उनके द्वारा अपना उत्तरदायित्व स्वीकार करने के बाद, उन्हें यह बताया जाए कि चूंकि दत्तक ग्रहण अवैध प्रतीत होता है और चूंकि देसाई की विधवा अवयस्क हैं, अतः उत्तराधिकार का मामला सरकार को निर्देशित किया जाएगा और इसी बीच व्यवस्था रखना, देश की रक्षा करना और यह ध्यान रखना मेरा कर्तव्य होगा कि प्रत्येक व्यक्ति मामूल के अनुसार अपना कर्तव्य पालन करे ।

10. खजाने की स्थिति के बारे में अनेक विभिन्न और असन्तोषजनक वृत्तान्त सुनने के बाद मैंने इस विषय में परिवार के प्रमुख सदस्यों और सेवकों से परामर्श किया। उन्होंने बताया कि देसाई स्वयं अपने कोषपाल थे, वह अपना हिसाब-किताब स्वयं रखते थे और अपने खजाने के बारे में किसी पर विश्वास नहीं करते थे, और चूंकि उनकी जानकारी अत्यन्त असंतोषजनक है, अतः यह वांछनीय प्रतीत हुआ है कि अविलम्ब नकद लेखाओं की परीक्षा की जाए और खजाने पर ताला लगा दिया जाए जिससे कि इस विषय के निर्देश के लम्बित रहने के दौरान पूरी जमा राशि सुरक्षित रह सके।

11. अतः मैंने अपने साथ गए सर्वश्री स्टीवेन्सन और फ्रेरी से प्रार्थना की कि वे प्रमुख सेवकों के साथ खजाने पर जाएं और देखें कि सम्पूर्ण खजाना उनकी उपस्थिति में स्वर्गीय देसाई की मोहर एवं मेरी अपनी मोहर के द्वारा सुरक्षित किया जाए। यह उपाय किया जा चुका है और तब से मैंने जो कुछ सुना है, उससे मैं आश्वस्त हूं कि इससे अधिकांश लूट खसोट बंद हो गई है। खजाने को गिनना आवश्यक प्रतीत नहीं हुआ, और कुछ तिजोरियों के ताले नहीं खुले, किन्तु देसाई के हस्तलेख में मराठा ज्ञापन के अनुसार, जो उन सन्दूकों में मिले थे, जो खुले नहीं थे, यह बहुत संभव है कि खजाने में लगभग 8 या 9 लाख रुपये हैं।

12. रिपोर्ट में लिखा है कि बहुत बड़ी रकम का गुप्त खजाना है जो भूतपूर्व देसाई के काल में जमा की गई थी, किन्तु मुख्य सेवक इस बात की पुष्टि करते हैं कि इस रिपोर्ट को कोई महत्व न दिया जाए और स्वर्गीय देसाई के पिता मल्लप्पा जब कुछ वर्ष पूर्व पूना में थे तब उन्होंने 25 लाख रुपए खर्च किये थे।

13. स्वर्गीय देसाई के सेवकों के आचरणों के बारे में निवेदन है कि वे उतने ही सम्माननीय हैं जितने वे जो ऐसी ही स्थितियों में प्रायः पाये जाते, किन्तु चूंकि उन्होंने कोई समाधानप्रद एक वृत्तान्त नहीं दिया है, और चूंकि उन्होंने कुछ मामलों में मुझे धोखा देने का यत्न किया है, और चूंकि यदि सम्पदा सम्बन्धी कार्य अनन्यतः उनके हाथों में सौंप दिए गए तो वह सुरक्षित नहीं रह सकती, अतः मैं फिलहाल दो संयुक्त

प्रबन्धकों—एक सरकार की ओर से और दूसरा देसाई के परिवार की ओर से, के माध्यम से प्रशासन चलाना चाहता हूं। इस इन्तजाम से मैं देश की प्रथाओं और प्रबन्ध की **परंपरागत** प्रणाली में हस्तक्षेप किए बिना दुरुपयोगों को रोक पाऊंगा और व्यवस्था कायम रख पाऊंगा।

14. पिछले वर्ष की पेशियों की बहुत बड़ी रकम अभी तक देनी बाकी है, किन्तु वह जमा नकदी में से किसी भी समय वसूल की जा सकती है।

15. परिवार के दावों के बारे में निवेदन है कि मुझे अभी तक वंशावली का समाधानप्रद विवरण नहीं मिल सका है, किन्तु मुझे जितना पता चल सका है, उस सबसे ऐसा प्रतीत होता है कि चूंकि उसके कोई पुत्र या भाई जीवित नहीं है, अतः एकमात्र उनकी विधवा को ही इस प्रकार से उनकी वारिस माना जा सकता है और इस दृष्टि से कि यह निश्चय किया जा सके कि सनद की शर्तों का विस्तार उस (विधवा) तक किया जाए या नहीं, मैं इस अनुच्छेद की प्रति प्रस्तुत करता हूं जो उत्तराधिकार के बारे में है।

16. आशा है कि मैं आपके पास शीघ्र ही परिवार का वंशानुक्रम विवरण भेज दूंगा। ऐसा कहा जाता है कि ऐसे लगभग सभी रिश्तेदार जिनके पास सम्पदा के हिस्से का कोई न कोई बहाना था, मृत देसाई के पिता के जीवन काल में मर चुके थे और जो साम्पार्श्विक शाखाएं बची हैं, वे इतनी दूर की हैं कि मुझे सन्देह है कि उनमें से कोई उत्तराधिकारी बन सकता है, भले ही कित्तूर संस्थान सामान्य पूर्वज के काल में एक स्वतन्त्र राज्य के रूप में विद्यमान रहा हो।

धन्यवाद

कित्तूर शिविर भवदीय

14 सितम्बर 1824 **जे० थैकरे**

श्री चैपलिन को भेजे गए श्री थैकरे के पत्र को ध्यानपूर्वक पढ़ने पर यह स्पष्ट हो जाता था कि पोलिटिकल एजेन्ट कित्तूर राज्य को मिलाने के लिए बहाने ढूंढ़ रहा था। यह भी प्रकट है कि वह देसाई द्वारा किसी लड़के को गोद लेने की संभावना से भी परिचित था जो कि पत्र के पैरा 5 के कथन से स्पष्ट है। इस पत्र से यह भी प्रकट होता है कि वह

राज्य की सम्पत्ति का लोलुप था जिसके कारण उसे दरबार से सम्बन्ध रखने वाले लोगों पर सन्देह होने लगा जो उसकी राय में धन-दौलत को लूट सकते थे। यद्यपि उसे ज्ञात था कि चेन्नम्मा एक सशक्त नारी है, और योग्यता पूर्वक राज्यकार्यों का प्रबन्ध कर रही है, फिर भी वह राज्य के और शिवलिंग रुद्र सर्जा की विधवाओं तथा उनके भाई के हितों की रक्षा करने का बहाना बनाना चाहता था।

उसने चेन्नम्मा का शिवलिंग रुद्र सर्जा की सौतेली मां के रूप में उल्लेख करके पैरा 8 में भी एक धूर्त कटाक्ष किया है। इसका आशय यह व्यंग्य करना है कि स्वयं परिवार के सदस्यों में मतभेद थे। पत्र के भावार्थ से प्रकट होता है कि उसे किसी न किसी बहाने राज्य का प्रबंध ग्रहण करने की बेहद चिंता थी। पत्र में जो मुद्दे बनाए गए हैं और शंकाएं उठाई गई हैं, वे काल्पनिक प्रकृति की हैं। संक्षेप में, उसकी दलीलें ये थीं—

(1) देसाई का किसी के पुत्र को गोद लेने का विचार नहीं था। यह एक सफेद झूठ है, क्योंकि देसाई से मई में उसकी मुलाकात के दौरान उसके समक्ष ऐसा कोई विचार व्यक्त नहीं किया गया, किन्तु बाद में उसे कन्नूर मल्लप्पा और सरदार मल्लप्पा द्वारा उस समय किए गए कथनों से इसके बारे में पता चल गया था जब स्वयं थैकरे ने उनसे पूछ-ताछ की थी।

(2) उसकी दूसरी दलील थी कि देसाई के कहने पर कोई दत्तक ग्रहण नहीं हुआ था। किन्तु यह दर्शित करने के लिए पर्याप्त साक्ष्य है कि देसाई की इच्छा पर ही दत्तकग्रहण हुआ था और स्वयं देसाई ने ही लड़के को दत्तक लिया था। एक मराठी पत्र में एक प्रत्यक्षदर्शी साक्षी ने समारोह के विवरण का भी उल्लेख किया है। उसके पत्र से प्रतीत होता है कि यदि वह अधिक धैर्यपूर्वक यत्न करता तो इस सत्यता को जान सकता था, किन्तु वह नियमित दत्तकग्रहण के बारे में संदेह करने के लिए अत्यधिक उत्सुक था।

(3) उसकी तीसरी दलील थी कि यदि दत्तक ग्रहण हुआ था तो भी वह वैध नहीं था, क्योंकि पूर्व इजाजत प्राप्त नहीं की गई थी।

किन्तु कित्तूर देसाई को आंतरिक मामलों के बारे में पूर्ण स्वायत्तता प्राप्त थी और उन्हें ऐसी कोई इजाजत लेने की आवश्यकता नहीं थी।

उनके अपने पारिवारिक इतिहास के अनुसार मीराज में, बनवास में वीरप्पगौड़ सरदेसाई की मृत्यु के बाद उनकी पत्नी पार्वतेव्वा ने मल्लसर्जा को उनके उत्तराधिकारी के रूप में गोद लिया था। यद्यपि कित्तूर के देसाई पेशवाओं की अधीनता में थे, फिर भी उन्होंने मल्लसर्जा को गोद लेने के लिए पेशवाओं से कोई इजाजत नहीं ली थी। कित्तूर देसाइयों ने 1818 में सर थामस मुनरो के साथ एक समझौता किया था जिसके अनुसार देसगत उन्हीं शर्तों पर कित्तूर के शासकों के पास बना रहा जो पेशवा और कित्तूर देसाइयों के बीच विद्यमान थीं। इस समझौते में कित्तूर के शासकों के लिए कोई उत्तराधिकारी गोद लेने के लिए इजाजत लेना अनिवार्य नहीं था। बहुत बाद 1854 में भी ईस्ट इंडिया कम्पनी ने ऐसा कोई उपबन्ध सम्मिलित नहीं किया जो राज्य के शाही परिवार की किसी विधवा को किसी पुत्र को गोद लेना प्रतिषिद्ध करता हो या दत्तक को पुरुष या स्त्री पंक्ति में शासक के नैसर्गिक वंशजों तक ही सीमित करता हो। यदि दत्तक ग्रहण देसाई की मृत्यु के तुरन्त बाद हुआ हो तो भी यह विधि की दृष्टि से सही था, क्योंकि हिन्दू विधि के अनुसार, जब कोई हिन्दू पुरुष निःसन्तान मर जाता है तो उसकी विधवा को अपने पति का वारिस गोद लेने का अधिकार प्राप्त है। अतः यह दलील सर्वथा अमान्य है कि दत्तक ग्रहण अवैध था।

उसकी अगली दलील थी कि दत्तक पुत्र देसाई का प्रत्यक्ष वंशज नहीं है। देसाई द्वारा सर थामस मुनरो के साथ किए गए समझौते से देखा जा सकता है कि ऐसी कोई शर्त नहीं थी।

इन अपर्याप्त, पक्षपातपूर्ण एवं निराधार तर्कों तथा काल्पनिक आशंकाओं के आधार पर उसने यह मत अपनाया था कि राज्य ईस्ट इंडिया कम्पनी के अधीन कर दिया जाए और यदि यह कित्तूर शासकों के अधीन बना रहा तो लम्बे समय तक कित्तूर का शासक अवयस्क रहेगा और उस पर कित्तूर का शासन चलाने का भार रहेगा।

केवल एक मुद्दे को स्पष्ट करना आवश्यक है : तारीख 10 जुलाई

1824 का पत्र 12 सितम्बर 1824 को क्यों दिया गया। कारण स्पष्ट है। यह विश्वास करने के लिए साक्ष्य है कि स्वयं कन्नूर मल्लप्पा अपने पुत्र को शिवलिंग रुद्र सर्जा को गोद देना चाहता था। इसी प्रकार, अन्य बहुत से रिश्तेदार थे जो अपने बालकों को गोद देने के आकांक्षी थे। यदि वास्तविक दत्तक ग्रहण सार्वजनिक रूप से किया जाता तो रिश्तेदारों और दरबार के अधिकारियों में खुली प्रतिद्वन्द्विता हो जाती और छल कपट पैदा हो जाता। अतएव थैकरे को तुरन्त पत्र नहीं भेजा गया। जब यह निश्चित हो गया कि शिवलिंग रुद्र सर्जा मरने वाले हैं, तभी यानी 11 सितम्बर 1824 की सायं रानी चेन्नम्मा द्वारा सम्बोधित गोपनीय बैठक के बाद, जिसमें रानी चेन्नम्मा ने सबसे राज्य के हितों की रक्षा करने की ओजपूर्ण अपील की थी, पत्र कन्नूर मल्लप्पा और सरदार मल्लप्पा शेट्टी को थैकरे को देने के लिए काफी शाम गये दिया गया था।

यह भी सही है कि जब थैकरे ने उनसे शिवलिंग रुद्र सर्जा की मृत्यु के समय के बारे में और शिवलिंगप्पा के दत्तक ग्रहण समारोह के बारे में पूछताछ की थी तो कन्नूर मल्लप्पा और सरदार मलप्पा ही के कथनों में त्रुटियां थीं। किंतु स्मरण रहे कि कुन्नूर मलप्पा स्वयं संदिग्ध निष्ठा का एक स्वार्थी व्यक्ति था। वह स्वयं चेन्नम्मा और थैकरे के बीच गलतफहमियां पैदा करना चाहता होगा। यह भी संभव है कि कन्नूर मल्लप्पा और सरदार मल्लप्पा दोनों थैकरे के क्रोध से घबरा गए हों और विचलित हो गए हों, जो एक अदना तानाशाह था, जिसके कारण हो सकता है कि वे घबराहट में वे बातें कह गए हों, जो प्रकटतः स्वयं परस्पर विरोधी हैं।

ऐसा प्रतीत होता है कि पुणे में दक्षिण के आयुक्त विलियम चैपलिन ने प्रायः उस पर विश्वास कर लिया था जो कुछ थैकरे ने कित्तूर की गतिविधियों के बारे में लिखा था। ईस्ट इंडिया कम्पनी के अनूठे साम्राज्यवादियों की भांति यह भी कित्तूर को ब्रिटिश राज्य क्षेत्र में मिलाने के लिए आतुर प्रतीत होता है। ऐसा प्रतीत होता है कि उनमें आपस में सांठ-गांठ थी। 20 सितम्बर 1824 को चैपलिन ने थैकरे के विचारों को अग्रेषित करते हुए मुम्बई में मुख्य सचिव विलियम न्यूहम को लिखा था। इस पत्र में चैपलिन ने कहा है—

यदि पुत्र का दत्तकग्रहण सरकार की पूर्व आज्ञा लेकर नियमित रूप से किया जाता तो मैं यह मानता हूं कि उत्तराधिकार जारी रहने की नीति के बारे में कोई सन्देह नहीं होता, क्योंकि हिन्दू विधि की दृष्टि में, दत्तक पुत्र विवाहित दम्पत्ति से पैदा हुए पुत्र के समान है। बहरहाल, यह दत्तक ग्रहण प्रकटतः किया गया था, क्योंकि दत्तकग्रहण समारोह देसाई के अत्यंत दुर्बल हो जाने तक स्थगित रखा गया था। छलयुक्त दत्तक की सगोत्रता की डिग्री भी इतनी दूर की है कि अब यहां कित्तूर का वकील मुझे उसके उद्भव के बारे में नहीं बता सकता। अतः मैं परिस्थितियों के ऐसे नाजुक दौर में अपने मार्गदर्शन के लिए यथासाध्य शीघ्र सरकार के आदेश प्राप्त करने के लिए आतुर हूं। इस बीच, मेरे विचार में, श्री थैकरे द्वारा उठाए गए कदमों से सरकार की इच्छा की पूर्ति हो जाएगी।

चूंकि इस सम्पदा (एस्टेट) को औपचारिक रूप से हाल ही में 'संस्थान' के रूप में मान्यता दी गई है, जिसका अर्थ, मेरे विचार में, जागीरदारी या सामंतशाही, लगाया जा सकता है, अतः इसका पुनः भार ग्रहण संभवतः एक अलोकप्रिय कदम होगा। बहरहाल, फिर भी होना स्वभावतः यही है। यदि दत्तक ग्रहण की पुष्टि नहीं की जाती है तो यह सनद की शर्तों के अनुरूप होगा।

यदि दत्तकग्रहण की पुष्टि कर दी जाती है तो मेरे विचार में इस का लाभ अवयस्क को मिलेगा और श्री थैकरे को इस एस्टेट का प्रबन्ध तब तक अपने हाथ में ले लेना चाहिए जब तक वारिस उसे ग्रहण करने के योग्य आयु का न हो जाए क्योंकि मुझे डर है कि परिवार में ऐसे कोई व्यक्ति नहीं हैं जिन्हें यह उत्तरदायित्व सुरक्षित रूप से सौंपा जा सके।

इसी बीच, चैपलिन को संबोधित पत्र में सम्प्रेषित अपने विनिश्चय के अनुसार थैकरे ने हेवरी वेंकटराव और सरदार मल्लप्प को खजाने की देखरेख के लिए नियुक्त कर दिया। उसने उन्हें उस जगह पर नजर रखने और यह सुनिश्चित करने के लिए विस्तृत अनुदेश दिए कि कोई भी व्यक्ति तलाशी के बिना न तो अन्दर आए और न बाहर जाए।

शाही परिवार के सदस्यों के आने जाने पर भी बंधन लगा दिए गए।

बहरहाल, ऐसा प्रतीत होता है कि मुख्य सचिव, न्यूहम अधिक खुले और साफ मन का था तथा मामलों को लटकाना नहीं चाहता था। पुनः चैंपलिन ने 23 सितम्बर 1824 के अपने पत्र में न्यूहम को धारवाड़ के पालिटिकल एजेन्ट थैकरे से प्राप्त परिवार की वंशावली की प्रति भेजी। इस पत्र को भेजते समय उसने टिप्पणी की थी—

चूंकि यह कागज स्वर्गीय देसाई के हितबद्ध व्यक्तियों ने तैयार किया है और इसके लिए कोई दस्तावेजी सबूत नहीं है, अतः मुझे संदेह है कि इसकी विशुद्धता पर बिलकुल भी निर्भर न किया जाए, विशेष रूप से क्योंकि एस्टेट के सब कार्य सप्रयोजन कुछ रहस्यमय प्रतीत होते हैं जिसके कारण पालिटिकल एजेन्ट ने सोचा कि कुछ देशी लोक सेवकों की रिपोर्ट में कुछ सत्यता है जिन्होंने उस समय काफी इनाम प्राप्त किए थे, जब स्वर्गीय राजा को नई सनद दी गई थी। बहरहाल, श्री थैकरे परिवार के वंशानुक्रम के बारे में आगे जांच कर रहे हैं। जांच पूरी होते ही उसके निष्कर्ष भेज दिए जाएंगे।

यदि सरकार एस्टेट वर्तमान दावेदार के हाथ में रखना चाहती है तो मैं यह सुझाव देने की इजाजत देने की प्रार्थना करूंगा कि राज्य क्षेत्र की पुलिस के बेहतर प्रबन्ध के लिए, जो कि हमारी पुलिस के साथ बहुत अधिक मिली जुली है, कुछ अनुबंध करने की समीचीनता को अपेक्षाकृत अधिक दक्ष आधार पर रखा जाए। सीमाशुल्क की प्रणाली आरंभ करना भी आवश्यक है और यह अधिकांशतः उसी के अनुरूप होनी चाहिए, जैसी ब्रिटिश राज्य क्षेत्र में स्थापित है, और यह साफ-साफ समझ लेना चाहिए कि कित्तूर की स्थानीय टकसाल पुनः नहीं खुलनी है।

देसाई के वारिस पर उत्तराधिकार की पुष्टि करने पर प्रायः काफी नजर ली जाती है और मल्लप्पा वीरप्पा सर्जा के अवसर पर इस मद से 90,000 रु० वसूल किए गए थे, चूंकि यह धनराशि असंदिग्ध रूप से पेशवा के दरबार के मंत्रियों को प्राइवेट परितोषण से अलग थी, अतः मेरा विचार है कि 1,75,000 रु० या एक वर्ष की अतिरिक्त 'पेशियां

वर्तमान अवसर पर हल्का जुर्माना या राहत होगी जबकि स्वर्गीय देसाई की शाखा का एक भी पुरुष वंशज प्रतीत नहीं होता।

24 सितम्बर 1824 को चैंपलिन ने मुख्य सचिव को एक अन्य पत्र लिखा जिसके साथ कित्तूर में सरकार की ओर से प्रबन्धक श्री वैंकटराव से एक अन्य अभिकथित गोपनीय पत्र भेजा था। इस पत्र में उसने कहा था कि :

> देसाई की मृत्यु 11 सितम्बर को अपराह्न लगभग 10 बजे हुई थी, न कि 12 सितम्बर को जैसी कि रिपोर्ट दी गई थी। तीन प्रमुख सेवकों ने इस तथ्य को छिपा लिया था और धारवाड़ को 'पेशियों' की बाकी रकम भेजने के बहाने खजाने में से 1,50,000 रु० और आभूषणों के तीन डब्बे निकाल लिए। परिवार और पुराने नौकरों से परामर्श किए बिना उन्होंने दत्तकग्रहण की कहानी गढ़ ली है जिसका आयोजन अगले दिन प्रातः किया गया था और कारभारी मल्लप्पा के पास स्वर्गीय देसाई की विपुल धनराशि है।

उसने आगे लिखा :—

> श्री थैंकरे ने मुझे बताया है कि यहां प्राप्त अन्य विवरणों से इन कथनों की पुष्टि हो जाती है। यद्यपि श्री थैंकरे वर्तमान व्यवस्था को तब तक छोड़ने के लिए इच्छुक नहीं है जब तक कि कित्तूर एस्टेट के प्रबन्ध के बारे में सरकार के आदेश प्राप्त नहीं हो जाएंगे, उनकी राय है कि इसके बाद कारभरियों का प्राधिकार मल्लप्पा जैसे छली व्यक्ति के पास जारी रखना सुरक्षित नहीं होगा, जो कि इस समय धारवाड़ कचहरी के मुख्य गुमास्तों में से एक वैंकटराव के साथ संयुक्त प्रबन्धक है।

न्यूहम ने इस पत्र का उत्तर थैंकरे की कार्यवाहियों पर सपरिषद गवर्नर का अनुमोदन सम्प्रेषित करते हुए 25 सितम्बर 1824 को दिया था। फिर भी, न्यूहम साफ मन का व्यक्ति प्रतीत होता है। वह कित्तूर में ऐसी किसी कार्यवाही को थोपना नहीं चाहता था, जो अयुक्तियुक्त प्रतीत हो। थैंकरे की कार्यवाहियों को अनुमोदित करते समय उसने थैंकरे के कथनों पर स्वयं संदेह व्यक्त किया था। उसने लिखा था—

संपूर्ण सनद का हवाला दिए बिना, सपरिषद गवर्नर इस स्तर के बारे में सर्वथा सन्देह मुक्त नहीं है जिस पर कित्तूर के राजा को ब्रिटिश सरकार के साथ रखा गया है। अनुदान की प्रकृति से, और श्री थैंकरे द्वारा प्रेषित सनद के अनुच्छेद के पदों से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि यद्यपि कित्तूरकर और उसके वंशज प्रत्यक्ष परम्परा के जारी रहने के दौरान प्रभुत्व सम्पन्न राजकुमार थे और इस प्रकार तात्विक रूप से जागीरदारों की स्थिति से भिन्न स्थिति में थे, फिर भी सनद में ऐसी कोई बात नहीं थी जो उस परिवार का पूरी तरह अन्त होने पर, जिसे वह दी गई थी, राज्यक्षेत्र के कम्पनी के पास वापस जाने पर रोक लगाती हो।

इसी अनुमान पर निम्नलिखित अनुदेश आधारित हैं, किन्तु इसे कार्य रूप देने से पूर्व आप सनद की परीक्षा करके स्वयं अपना समाधान करने का ध्यान रखें कि यह स्थिति सही है।

यदि सनद से कुछ भी प्रतीत न हो तो दत्तक ग्रहण सम्बन्धी साधारण आध्यताओं से कित्तूर को निर्मुक्त करने के लिए अन्य जागीरदारों को सरकार के अधिकारों और इरादों का स्पष्ट विचार बताने की खातिर, प्रस्तुत अनियमितता पर आरंभ में काफी कड़ाई से ध्यान देना आवश्यक होगा, किन्तु अन्ततोगत्वा हम अपनी कार्यवाहियों की कड़ाई में ढील दे सकते हैं।

यह घोषणा कर दी जाए कि ब्रिटिश सरकार दत्तकग्रहण को मान्यता नहीं देती क्योंकि यह (यदि कतई हुआ है) सरकार की इजाज़त के बिना हुआ है और इसके अलावा यह अभी तक किसी भी प्रकार के सबूत से सिद्ध नहीं किया गया है। यदि श्री थैंकरे ने सम्पूर्ण रियासत का भार पहले ही ग्रहण नहीं कर लिया है तो वह ऐसा करने के लिए अग्रसर हों, और फिर बाद में दत्तक ग्रहण की परिस्थितियों के बारे में जांच आरंभ करें।

सबसे पहले यह अभिनिश्चित करना है कि दत्तक बालक का देसाई से क्या सम्बन्ध था। यदि यह प्रतीत हो कि वह उस देसाई का वंशज है जिसके पास देश के टीपू सुल्तान द्वारा जीते जाने से पूर्व था तो वह देसाई

का निकटतम वारिस होगा, भले ही दत्तक ग्रहण न हुआ हो, और दत्तक ग्रहण की सभी अनियमितताओं पर अनुग्रहपूर्वक विचार किया जाए और यदि देसाई का दत्तक ग्रहण करने के आशय का कोई स्पष्ट सबूत है तो उसे पर्याप्त माना जाए।

यदि वह पुराने देसाइयों के वंश का कोई निकट सम्बन्धी है तो दत्तकग्रहण के तथ्य को भी महत्वहीन समझा जाए और उसे बाद में सूचित की जाने वाली शर्तों पर तुरन्त स्वीकार कर लिया जाये।

यदि इसके विपरीत, यह प्रतीत हो कि दावेदार न तो प्राचीन देसाइयों का वंशज है और न ही स्त्री परम्परा द्वारा देसाई का निकट सम्बन्धी है तो दत्तकग्रहण के तथ्य स्वीकार न किया जाए चाहे उसका स्वरूप कितना ही सही हो और रियासत को भंग माना जाए तथा उसे कम्पनी के राज्य-क्षेत्र के साथ मिला दिया जाए और देसाई परिवार की महिलाओं के लिए और उनके सभी पुराने नौकरों तथा आश्रितों के लिए उचित व्यवस्था की जाए।

अब मैं उस शर्त पर आता हूं जिस पर जागीर बहाल की जाती है। यदि दत्तक के रूप में कथित व्यक्ति (अब तक प्राप्त विवरण के प्रतिकूल) देसाई का इतना निकट रिश्तेदार होना साबित कर दे कि यह बहुत संभव हो जाए कि दत्तक लेने के लिए ब्रिटिश सरकार की इजाजत दे दी जाती, यदि उसकी याचना की जाती और यदि दत्तकग्रहण की यथार्थता और नियमितता सिद्ध हो जाए तो उस दशा में रियासत सनद की शर्तों में या भाषा में कोई परिवर्तन किए बिना दे दी जाए किन्तु इसके साथ ही, यदि सनद में कोई संदिग्धार्थता पाई जाए तो उसे दूर करने की अपेक्षा की जा सकती है।

यदि दत्तकग्रहण अनियमित रूप से हुआ है, यद्यपि वह व्यक्ति पिछले पैरे में दिए गए विवरण का है, अथवा यदि दत्तकग्रहण पूर्णतः नियमित रूप से हुआ हो यद्यपि दत्तक व्यक्ति देसाई का इतना निकट सम्बन्धी नहीं है, फिर भी हर स्थिति में रियासत उसके पास ही रहने दी जाए, किन्तु ऐसी नई शर्तों के बिना नहीं जो टकसाल की स्थापना के लिए या अन्य असुविधाजनक विशेषाधिकारों के लिए और ऐसे आदान-प्रदानों या अन्य

तालमेलों के लिए तय की जाए जो हमारे राज्य-क्षेत्रों के समेकन के लिए आवश्यक हैं।

सभी अनुमानित मामलों में, देसाई की निजी सम्पत्ति का व्ययन हिन्दू विरासत विधि के अनुसार किया जाए, और यदि सरकार उसके किसी भाग की हकदार होनी चाहिए तो उसे तब तक न लिया जाए जब तक कि मृतक के सभी संबंधियों के दावों और परिस्थितियों पर उदारतापूर्वक विचार न कर लिया जाए।

कित्तूर के कार्यकलापों के बारे में उठाए गए कदमों के अनुमोदन का यह पत्र प्राप्त करने के बाद थैकरे अधिकाधिक अत्याचारी होता गया। जैसा कि उसकी 14 सितम्बर, 1824 की रिपोर्ट से पता चलता है, उसने राज्य का प्रबंध दो प्रबंधकों—एक राज्य के प्रतिनिधि और दूसरे ब्रिटिश सरकार के प्रतिनिधि को संयुक्त रूप से सौंप दिया। उन्हें राज्य के प्रशासन और खजाने की सुरक्षित अभिरक्षा के उत्तरदायित्व का काम दिया गया। वेंकटराव ने थैकरे के पास झूठी और द्वेषपूर्ण बातें पहुंचाईं जिसके कारण मल्लप्प शेट्टी को पद से हटा दिया गया। उसने सरदारों और दरबार के अन्य अधिकारियों को धमकी दी तथा तंग किया। उसने अनेक गांवों के लेखाओं की जांच पड़ताल के लिए अमलदार नियुक्त किए। इस अभित्रास के शिकार कन्नूर मल्लप्प, कित्तूर गुरुशांताप्पा, सरदार मल्लप्पा, नरसिंह राव और अन्य थे। उसने शाही परिवार के सदस्यों या उनके विश्वास-पात्र सलाहकारों से परामर्श किए बिना राजमहल के अनेक कर्मचारियों को पदच्युत कर दिया। उसने कित्तूर में कामकाज की देखरेख के लिए एक मामलातदार और कुछ अन्य नौकर नियुक्त किए और आदेश दिया कि हेवरी वेंकटराव, जो कित्तूर के पदाधिकारियों पर छाया हुआ था, की अभिव्यक्त इजाजत के बिना कुछ भी न किया जाए। उन्हें धमकी दी गई कि यदि उन्होंने उसकी अवज्ञा की तो उन्हें कठोर दंड दिया जाएगा। खजाना पूरी तरह से थैकरे और उसके सहायकों के नियंत्रण में था। उसने इस आदेश के आधार पर सरकारी सिपाहियों का एक रक्षक दल तैनात कर दिया कि "देसाई के रक्षकों को 10 लाख रु० की रकम के खजाने का संतरी बनाये रखना खतरनाक है, ताकि

लुटेरों के आक्रमण के बहाने वे उसे स्वयं न लूट लें।" इस प्रकार खजाने की सुरक्षा के बहाने ब्रिटिश सरकार के तीस सन्तरी किले के अन्दर पूर्व और पश्चिम के द्वारों पर तैनात कर दिए गए। देसाई के रक्षकों को भी ड्यूटी पर रहने दिया गया। थैकरे ने मुख्य-मुख्य आदमियों से बंधपत्र देने के लिए आदेश दिए, और इस प्रकार उसने अपने आपको खजाने की सुरक्षा के लिए उत्तरदायी बना लिया। चेन्नम्मा ने जो थैकरे के इन कार्यों से बहुत अधिक नाराज थी, कित्तूर संस्थान के वकील रचप्पा को, और मुम्बई के गवर्नर एच० ई० मोंस्टुअर्ट एल्फिस्टन की सेवा में शाही परिवार की शिकायतों को प्रस्तुत करने के लिए लिगो पेन्ट वकील को भेजा। यह काम उन्होंने 8 अक्तूबर 1824 को किया। किन्तु गवर्नर एल्फिस्टन से अपील का अनुकूल उत्तर नहीं मिला।

थैकरे शाही परिवार के सदस्यों में कुछ गलतफहमी भी पैदा भी करना चाहता था। उसने देसाई की विधवा वीरम्मा के पास गुप्त संदेशवाहक भेजे और उसके मन को विषाक्त करने का यत्न किया कि अभिकथित दत्तकग्रहण उसके हित में नहीं था, और इससे वह निराश्रित हो जाएगी। किन्तु शाही परिवार के अन्य सदस्यों की भांति वीरम्मा, चेन्नम्मा के चरित्र की महिमा के बारे में जानती थी। हर कोई यह जानता था कि चेन्नम्मा ने अपने पुत्र को रुद्रम्मा के पुत्र शिवलिंग रुद्र सर्जा के अंगरक्षक के रूप में देने का **स्वेच्छासे** प्रस्ताव रखा था। किन्तु दुर्भाग्यवश वह पहले ही मर गया था। परिवार के सदस्यों के प्रति उनका प्रेम और स्नेह तथा कित्तूर देसगत के प्रति उनका गर्व कित्तूर में सबकी जबान पर थे। अतः थैकरे की धूर्त साजिश काम नहीं आई।

चेन्नम्मा स्थिति के प्रति सचेत थीं और उचित अवसर की प्रतीक्षा में थीं। किले और राजमहल पर भी ब्रिटिश रक्षकों और सिपाहियों का पहरा था। राजमहल की गतिविधियों के बारे में खबरें देने के लिए सर्वत्र गुप्त सन्देशवाहक तैनात थे। सरदारों और अन्य अधिकारियों को उनसे मिलने की इजाजत नहीं थी, और न ही उन्हें लोगों से मिलने की इजाजत थी जिनके लिए वह बहुत प्रिय और पूज्य थीं। शाही परिवारों के सदस्यों के साथ बहुत ही कम आदरपूर्वक व्यवहार किया जाता था, और उनकी

बंधनयुक्त गतिविधियों पर कड़ी नजर रखी जाती थी।

स्थिति असह्य होती जा रही थी। घाव पर नमक छिड़कने के लिए थैकरे ने आदेश दिया कि दत्तक पुत्र शिवलिंगप्पा को तुरन्त किन्नूर से दूर भेज दिया जाए। इस चाल के पीछे यह कपटपूर्ण उद्देश्य था कि किन्नूर में शिवलिंगप्पा के रहने से किन्नूर के लोगों की राज्य के लिए सर्वप्रभुत्व पुनः प्राप्त करने की आशाएं जीवन्त रहेंगी। इस आदेश से रानी चेन्नम्मा बहुत नाराज थीं। यदि गद्दी के उत्तराधिकारी को दूर भेजा गया तो वह किन्नूर में रहने के लिए तैयार नहीं थीं। उन्होंने थैकरे से प्रार्थना की कि मुझे और वीरम्मा को पुणे तथा मुम्बई जाने की इजाजत दी जाए, और यदि उनकी यह प्रार्थना मंजूर न की जाए तो उन्हें बनारस जाने दिया जाए। इस प्रार्थना का थैकरे ने यह रूखा जवाब दिया कि चेन्नम्मा ही अकेली जा सकती हैं। यदि वह जाना चाहती हैं और इसके लिए वह खर्च की व्यवस्था करेगा। किन्तु देसाई की विधवा को, जो जवान थी, जाने की आवश्यकता नहीं है और, फिर भी, उससे इसके लिए पूछने की आवश्यकता नहीं है और यदि वे जाना चाहती हैं तो वे जा सकती हैं। वह भी अपने निश्चय पर डटा रहा कि दत्तक पुत्र शिवलिंगप्पा अविलम्ब कित्तूर से चला जाए। एजेन्ट की ज्यादती को और अधिक सहन करने में असमर्थ रानी चेन्नम्मा और वीरम्मा ने ता० 11 अक्तूबर 1824 को चैपलिन के नाम पर संयुक्त पत्र भेजा। पत्र के पाठ का अनुवाद निम्न प्रकार है—

हमने राजप्पूण के जरिये आपके पास संस्थान की कार्यवाहियों के लेखे भेजे थे जिसकी प्राप्ति आपने अभिस्वीकृत नहीं की है।

संस्थान को सज्जन (यहां थैकरे के प्रति निर्देश) से अब तक जो सहायता मिली है, वह आप हमेशा जानते हैं। वह जैसा ठीक समझते हैं अब भी वैसा ही करते हैं। हमने कभी भी उनके काम में किसी भी प्रकार से हस्तक्षेप नहीं किया। हमारी तरफ कुछ विनम्र ध्यान दिया जाना चाहिए, जिससे अन्य हर चीज़ की भांति आप अवगत हैं और जो हमें आपसे सर्वथा मिलता रहा है। किन्तु हम जिस सम्मान के हकदार हैं उसकी परवाह किए बिना साहिब श्री थैकरे ने हमसे मिलने की प्रार्थना

की, हमने यह समझकर कि संस्थान उनके हाथ में है और हमें हर चीज के लिए उन पर ही निर्भर रहना है, उन सब बातों का उत्तर दिया जो उन्होंने हमसे पूछी थीं। उन्होंने चाबियां मांगी, हमने वे उन्हें दे दीं। खजाना खोलकर उन्होंने खजाने की गणना की और उसे स्वयं अपनी मोहर से बंद कर दिया। संस्थान का खर्च बहुत अधिक है। यहां अनेक जंगम भेंट देने के लिए निरंतर आ रहे हैं जिसके लिए कोई समुचित स्थान आरक्षित नहीं किया गया है।

हम कभी बाहर नहीं जातीं। फिर भी मित्रता की खातिर हमने श्री थैकरे से मुलाकात की। ईश्वर को यही मंजूर था। हमने सब कुछ धैर्य पूर्वक सहन किया है किन्तु हम आपसे सम्पूर्ण संस्थान को जारी रखने का आदेश देने की आशा रखते हैं।

साहिब अस्तबलों, पल्खनाओं, सिलेदार, सेबन्दियों आदि का हिसाब ले रहे हैं, हर छोटी से छोटी चीज़ की जांच पड़ताल की जा रही है। हम किसी चीज की इच्छा नहीं कर सकतीं। अतः हमारे लिए संस्थान की सहायता करना और इसकी ख्याति को कायम रखना आप पर निर्भर करता है। हमने संस्थान का प्रमुख एक बालक 'चिरंजीव' बनाया है जिसके नाम की मोहर बनवाई गई है। अब हठपूर्वक इस बात की इच्छा की गई है कि उसे दूर भेज दिया जाए। बालक को संस्थान में रखा गया किन्तु उसकी बाबत आदेश प्राप्त करने का अवसर नहीं आया।

बालक यहीं था। जो कुछ करने की संस्थान की प्रथा थी, वह किया गया, और कोई नई बात नहीं हुई। यह एकत्र हुए संस्थान के आश्रितों का कार्य था, अतः बालक को दूर नहीं भेजा जा सकता। यदि उसे दूर भेज दिया जाए तो हमारे लिए यहां रहना उचित नहीं होगा।

यहां किया गया अत्याचार असह्य हो रहा है। हमें विश्वास है कि आप हमारा कष्ट निवारण करेंगे और हमारे सम्मान की रक्षा करेंगे। हमने श्री थैकरे के पास अभ्यावेदन के लिए एक वकील भेजा था कि चूंकि आपने संस्थान के खजाने का भार संभाल लिया है और सभी विलेख तथा सनदें आपके पास हैं तथा आपने अपने मामलातदार नियुक्त कर लिए हैं, अतः संस्थान में हमारे रहने से कोई लाभ नहीं है। हमारे लिए

व्यवस्था किए जाने के वचन दिये गए थे किन्तु उल्लिखित प्रकार की उनकी कार्यवाहियों के बाद हम प्रार्थना करती हैं कि हमें अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए पुणे और मुम्बई जाने की इजाजत दी जाए और यदि यह संभव न हो तो हम वाराणसी जाना चाहेंगी ।

इस संदेश का हमें उत्तर मिला कि चूंकि आप जाने को तैयार हैं, अतः यह निवेदन मेरे पास नहीं भेजना चाहिए था और आप जा सकती हैं ।

हमारे प्रति उनकी भाषा हर रोज भिन्न होती है । वह निरन्तर संस्थान के नौकर-चाकरों पर अपराध का आरोप लगाते रहते हैं । अब तक ये लोग इसकी सेवा में प्रसन्नतापूर्वक रहते थे । अब वे अन्यत्र कहां रोजगार ढूंढे ? उन्हें एक बार नियुक्त करने के बाद अब सेवोन्मुक्त नहीं किया जा सकता है । वर्णित भाषा उनके प्रति बदल दी गई है जिन्होंने अपने कर्तव्यों का निष्ठापूर्वक और शांतिपूर्वक पालन किया है । अब उनके साथ दुर्व्यवहार कैसे किया जा सकता है ?

हमने यह वक्तव्य आपकी जानकारी के लिए लिखा और भेजा है । श्री थैंकरे को संस्थान जारी रखने का आदेश देने से आपको ख्याति मिलेगी । अजनबी व्यक्तियों, यानी आपके लोगों द्वारा किले की मोर्चाबन्दी करने का कदम विचाराधीन है । हमने कलादगी से सेना पहुंचने की अफवाह भी सुनी है । नए-नए नौकरों को नियुक्त किया जा रहा है । सारांश यह है कि इन सब इन्तजामों का एक ही प्रयोजन है, संस्थान का पूर्णतः पुनर्ग्रहण । सेना एकत्र करना और बालक को बाहर निकालना तथा निवेदन के प्रत्येक शब्द का उत्तर शक्ति से देना विचाराधीन कार्रवाइयां हैं । हम आपको परिस्थितियों की जानकारी देती हैं ।

अंततः हम आपसे आशा करती हैं कि आप हमें संस्थान का कब्जा दे देंगे, विगत दिनों की भांति हमारी सहायता करेंगे तथा ऐसा करके आप लोकप्रियता पाएंगे । आपके सिवाय हमारी सहायता करने वाला कोई नहीं है । आप में विश्वास रखकर हमने वह सब धैर्यपूर्वक सहन किया जो कुछ हमारे साथ किया गया है । शेष जानकारी आपको राचप्पा देगा ।

चंपलिन शाही परिवार की महिलाओं द्वारा की गई प्रार्थनाओं के

प्रति बिल्कुल तटस्थ रहा। रानी चेन्नम्मा ने चैपलिन से उत्तर की एक सप्ताह धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा की। अतः उन्होंने इस संकट का साहसपूर्वक मुकाबला करने का निश्चय किया। 18 अक्तूबर 1824 को उन्होंने सभी सरदारों और दरबार के अधिकारियों को बुलाया और उन्हें सम्बोधित किया। रानी चेन्नम्मा ने उन्हें उन सब कदमों से अवगत कराया जो श्री थैकरे ने उन्हें परेशान करने के लिए उठाये थे। वह शाही परिवार के सदस्यों और दरबार के अधिकारियों के साथ किए गये व्यवहार पर क्रुद्ध थीं। अपने आवेशपूर्ण भाषण में उन्होंने घोषणा की—

कित्तूर हमारा है। हम अपने इलाके के स्वयं मालिक हैं। अंग्रेज़ों का कहना है कि दत्तकग्रहण विधिमान्य नहीं हैं क्योंकि हमने उनकी इजाजत नहीं ली। यह कहां अनुबंधित है कि पुत्र को दत्तक लेने के लिए हमें उनकी इजाजत लेनी चाहिए। शक्ति की अकड़ में राजनीतिक एजेन्ट श्री थैकरे ने कहा है कि हमने दत्तकग्रहण के बारे में झूठ बोला है। वह डा० बेल जैसे कम्पनी के एक नौकर मात्र की बातों में तो विश्वास करने को तैयार हैं किन्तु वह हम पर विश्वास करने को तैयार नहीं हैं। ये अंग्रेज हमारे देश में व्यापार करने के बहाने आये हैं और अब यह देखकर कि हम आपस में झगड़ रहे हैं, ये हमारे देश पर कब्जा करना चाहते हैं और हम पर शासन करना चाहते हैं। ये चाहते हैं कि हम उन्हें नजराने के रूप में विपुल धनराशि भेंट करें। हो सकता है उन्होंने अपनी चालाक और धूर्त चालों से देश के इस भाग में अन्य शासकों को पराजित कर दिया हो। यदि पेशवाओं ने हमारे साथ कोई गलती की है तो हम यह न भूलें कि वे हमारे अपने सगे हैं। किसी न किसी दिन वे अपनी भूलें स्वीकार करेंगे और इन विदेशियों को अपनी पवित्र भूमि से निकालने में हमारा साथ देंगे। क्या ये अंग्रेज़ हमारे सगे संबन्धी हैं ? क्या ये हमारे देश के हैं ? थैकरे और उसके चापलूसों का यह भ्रम है कि वे छोटे से राज्य कित्तूर को क्षण भर में पराजित कर देंगे। उन्हें निश्चय ही गलतफहमी है। वे नहीं जानते कि कित्तूर के लोग स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों की आहुति दे सकते हैं। कित्तूर की यह पवित्र भूमि उन हजारों शहीदों के रक्त से पवित्र हुई है जो स्वतंत्रता के लिए लड़े हैं और जो इन सभी वर्षों में

स्वतंत्रता के ध्वज को लहराते रहे हैं। निःसन्देह हमारा राज्य एक छोटा सा राज्य है। अंग्रेजों की सेना की तुलना में हमारी सेना की संख्या कम हो सकती है। किन्तु वे भाड़े के टट्टू नहीं हैं। देश भक्ति और इस पवित्र भूमि के प्रति तथा स्वातंत्र्य प्रेम उनकी रगों में प्रवाहित है। हममें से एक-एक उनके दस सिपाहियों के बराबर है। हम श्री थैकरे और श्री चैपलिन से कह देंगे कि हम झुकेंगे नहीं चाहे कुछ भी परिणाम भुगतने पड़ें। कित्तूर अपनी धरती पर अन्तिम क्षण तक लड़ाई लड़ेगा। वे अंग्रेजों के गुलाम होने के बजाय अपने प्राण दे देंगे।

रानी चेन्नम्मा के इस प्रेरणादायक भाषण से वहां एकत्र लोगों में जोश की लहर दौड़ गई। कित्तूर के सिपाहियों की तलवारें चमकने लगीं। एक स्वर में आवाज गूंज उठी—'कित्तूर अमर रहे', 'रानी चेन्नम्मा जिन्दाबाद'। उनके चारों ओर बिगुल ध्वनियों से कित्तूर किले का प्रांगण गूंज उठा।

6. महान विजय

उस शाम अपने निष्ठावान सरदारों और अधिकारियों से विदा लेने के बाद रानी चेन्नम्मा प्रसन्नमन विश्राम के लिए चली गईं। कहा जाता है उस रात रानी चेन्नम्मा ने स्वप्न देखा था,जिसमें उनके स्वर्गीय पति राजा मल्लसर्जा दिखाई दिये थे और उनसे बोले थे। राजा ने उनसे कहा था कि अब वह समय आ गया है जब तुम्हें कित्तूर की प्रतिष्ठा और स्वतंत्रता की रक्षा के लिए साहसपूर्ण भूमिका निबाहनी है। उन्होंने रानी को एक सिपाही का कवच धारण करने के लिए तथा अंग्रेजों के विरुद्ध सेना का नेतृत्व करने के लिए प्रोत्साहित किया। रानी चेन्नम्मा ने पवित्र शपथ लेकर वचन दिया कि मैं आपकी आज्ञा का पालन करूंगी और विदेशी आक्रामकों के विरुद्ध युद्ध का नेतृत्व करूंगी। जब वह प्रातः सोकर उठीं तो उन्हें स्वप्न साफ-साफ याद था। वह तुरन्त पूज्यपाद स्वामीजी से मिलने के लिए कलमठ गईं और उन्होंने उनका आशीर्वाद प्राप्त किया। वह महल में वापस आईं और उन्होंने सेना के प्रधान सेनापति सरदार गुरु-सिद्दप्पा को तथा कुछ अन्य उच्च पदाधिकारियों को बुलवाया। उन्होंने रानी चेन्नम्मा से उन युद्ध योजनाओं और सामरिक नीतियों पर विचार-विमर्श किया जो उन्हें अंग्रेजों के विरुद्ध इस लड़ाई में अपनानी चाहिए।

रानी चेन्नम्मा संख्या और अस्त्र दोनों की दृष्टि से ब्रिटिश सेना की वरिष्ठ शक्ति से अवगत थीं। उन्हें आशा थी कि इस संकट काल में कोल्हापुर का राजा उनकी मदद करेगा। कोल्हापुर के महाराजा के पास तुरन्त एक दूत भेजा गया और सेना की एक टुकड़ी भेजने की प्रार्थना की गई। कित्तूर राज्य के सरदारों, सूबेदारों, किलेदारों, दलवाइयों और चौबरियों को विस्तृत अनुदेश दिए गए। उन्होंने सभी पड़ोसी गांवों में शेट सनदियों (सैनिक सेवा के लिए भूमि धारण करने वाले व्यक्तियों) के पास संदेशवाहक भेजे और उन्हें तुरन्त कित्तूर आने के लिए कहा।

किलेदार प्रचंड रूप धारण करके कित्तूर के आसपास के आठ गांवों की तरफ घोड़ों पर दौड़े, ताकि पहरे की मीनारों पर रक्षक बनकर खड़े हो सकें और यदि शत्रु आता दिखाई दे तो चेतावनी के संकेत भेज सकें। राजमहल की पश्चिमी दिशा में केम्मन मरडी और गड़ेप मरडी में किले के परकोटों पर पहरा देने के लिए भी किलेदार तैनात कर दिए गए। इस स्थान से आसपास का लगभग 15-20 मील का क्षेत्र साफ दिखाई देता था। उन दिनों कित्तूर की गढ़ सेना में 7000 थल सेना, 2000 घोड़े, 1000 ऊंट और 50 हाथी, दो 24 पौण्ड वाली पीतल की तोपें और इससे भी ऊंची मार की 14 अन्य तोपें थीं। कित्तूर के योद्धाओं के पास बन्दूकें, छुरे, धनुष बाण, भाले, कुल्हाड़े और अन्य अनेक हथियार थे। इसके अतिरिक्त, लगभग 8,000 प्रशिक्षित लड़ाकू शेट सनदी थे जिनकी सेवाएं युद्ध काल में प्राप्त की जा सकती थीं। सारी सेना को बिल्कुल सावधान कर दिया गया और उसे युद्ध-केन्द्रों पर तैनात कर दिया गया।

रक्षा चौकियों के सभी किलेदारों और दलवाइयों को विशेष अनुदेश जारी कर दिए गए कि वे ब्रिटिश अधिकारियों के आदेशों को न मानें और उनसे कह दें कि हम रानी चेन्नम्मा के अभिव्यक्त आदेशों के बिना कुछ नहीं करेंगे।

किले के भीतर और बाहर सरगरमी का वातावरण था। रानी चेन्नम्मा के आदेशों का पालन करने के लिए संदेशवाहक कित्तूर से सभी दिशाओं में दौड़ रहे थे। जो ब्रिटिश सिपाही द्वार पर तैनात थे उन्होंने उन्हें रोकने की कोशिश की। रानी चेन्नम्मा के आदमियों ने खुली अवज्ञा की और उनसे कहा कि हम अपनी रानी के आदेशों का पालन कर रहे हैं और हमें कोई नहीं रोक सकता। ब्रिटिश सिपाही यह सुनकर स्तब्ध रह गये। उन्होंने तुरन्त धारवाड़ को संदेश भेजा कि कित्तूर के लोग उग्र रूप धारण किए हुए हैं और अशांति फैलने की संभावना है। थैकरे को यह सन्देश 19 अक्तूबर 1824 को मिला। तब तक उसे गुप्त सूचना मिल चुकी थी कि देशी पैदल सेना (नेटिव इन्फेन्ट्री) की पंचम रेजिमेंट, 500 सैनिक और होर्स ब्रिगेड आर्टिलेरी के लगभग 100 सैनिकों की ब्रिटिश कम्पनी कलादगी से बेलगांव की ओर बढ़ रही है। उसने तत्काल संदेश

भेजा कि वे वापस लौटें और कित्तूर की ओर रवाना हों जहां उसे कुछ अशांति की आशंका है। वह सैन्यदल 20 अक्तूबर 1824 को कित्तूर पहुंचा।

इसी बीच थैकरे अपनी कमान के अधीन सेना का एक छोटा सा दल और धारवाड़ में अपने साथ काम करने वाले अपने कुछ अधिकारियों को साथ लेकर कित्तूर पहुंच चुका था। उसने सोचा था कि कित्तूर के बाहर ही ब्रिटिश सेना की उपस्थिति से कित्तूर के शासक और लोग आतंकित हो जाएंगे और वे विनम्रतापूर्वक समर्पण कर देंगे। उसे पूरा विश्वास था कि वह क्षण भर में विद्रोह को कुचल डालेगा। उसने आदेश दिया कि लड़ाकू सेना के लिए कैम्मनमरड्डी की पूर्वी दिशा में तम्बू खड़े किए जाएं और कुछ दूरी से पश्चिमी ढलानों पर उन अधिकारियों के कुछ परिवार के सदस्यों के लिए तम्बू लगाए जाएं जो सैन्य दल के साथ आए थे। 20 अक्तूबर की दोपहर और शाम के समय ब्रिटिश सिपाही इन शिविरों का इन्तजाम करने में लगे रहे।

अगले दिन 21 अक्तूबर की प्रातः थैकरे ने अपने राजनीतिक सहायकों स्टीवेन्सन और इलियट को कित्तूर किले में भेजा कि वे कित्तूर के सभी महत्वपूर्ण अधिकारियों और गणमान्य व्यक्तियों से दंड बंधपत्र ले आएं जिससे वे अपने आपको कित्तूर के खजाने की सुरक्षा के लिए उत्तरदायी बना लें। तदनुसार वे सरदार गुरुसिद्दप्पा और कित्तूर के अन्य अधिकारियों से मिले और उन्हें थैकरे के आदेशों का पालन करने के लिए कहा। उन्हें यह मालूम नहीं था कि कित्तूर का वातावरण बिल्कुल बदल गया है और लोग विद्रोही रूप धारण किए हुए हैं। सेनापतियों ने एजेन्ट के आदेश ठुकरा दिए और कहा कि रानी चेन्नम्मा की आज्ञा के बिना किसी भी दस्तावेज पर हस्ताक्षर नहीं किए जा सकते। थैकरे क्रुद्ध हो गया और उसने होर्स आर्टिलेरी (अश्व सैन्य दल) के कमांडर को बुलवाया। जिसमें लगभग 100 अश्व सैनिक थे और उसे आदेश दिया कि अपनी तोप सेना को लेकर तुरन्त किले में घुस जाओ और देसाई की सेना के सेनापतियों को बंदी बना लो। जब अश्व तोप सेना (होर्स आर्टिलरी) अचानक किले में घुस गई तो सरदार गुरुसिद्दप्पा ने, जिसने अपने

सैनिकों को पूरी तरह सावधान कर रखा था, तुरन्त अपने सिपाहियों को आदेश दिया कि उन्हें कुचल डालो और खदेड़ भगाओ। कित्तूर की सेनाओं ने जमकर मुकाबला किया और अंग्रेज सिपाहियों को दबोच लिया।

इसी बीच देसाई के प्रहरियों ने किले के द्वार बंद कर दिए और ब्रिटिश अश्व तोप सेना को, जो पूरी तरह से तहस-नहस और ध्वस्त की जा चुकी थी, किले से बाहर गुप्तद्वार से भागना पड़ा। रानी चेन्नम्मा के सिपाहियों ने उनमें से कुछों को मार डाला और किले से बाहर उनका पीछा तब तक नहीं छोड़ा, जब तक वे खेमनमरड्डी के बाहर अपने शिविरों में न घुस गए।

कुछ ब्रिटिश सिपाहियों ने कुछ प्राइवेट आवासों मे शरण ली, जबकि कुछ कैमानमरडी के समीप तम्बुओं में छिप गए। कित्तूर के सिपाहियों ने लगभग चालीस व्यक्ति बंदी बनाये और उन्हें राजमहल में ले आए। इनमें ब्रिटिश अधिकारियों के कैम्पों के बारह बालक और कुछ स्त्रियां थीं। जब उन्हें रानी चेन्नम्मा के सम्मुख लाया गया तो उन्होंने सिपाहियों के कारावास का आदेश दिया। स्त्रियों और बालकों के साथ उन्होंने सज्जनता से व्यवहार किया और उन्हें हिरासत में लेने के लिए अपने सिपाहियों को धिक्कारा। उनके आदेशानुसार, इन स्त्रियों और बच्चों को राजमहल के अन्दर ले जाया गया और भोजन कराया गया तथा आश्रय दिया गया। रानी चेन्नम्मा अपनी गद्दी से उतर कर आई और उन्होंने बच्चों को प्यार से पुचकारा तथा उनसे कहा कि डरने की कोई बात नहीं है। उन्होंने उनसे कहा कि आपको कोई नुक्सान नहीं पहुंचाया जाएगा। उनके स्नेहपूर्ण व्यवहार से उनका भय दूर हो गया और वे शीघ्र ही आराम महसूस करने लगे। सभी स्त्रियों और बालकों को राज-महल के मेहमानखाने में ले जाया गया। भोजन कराया गया और उनकी वैसी ही परंपरागत आलीशान खातिर की गयी जैसे कित्तूर राजमहल में अतिथियों की होती थी।

इसके बाद उन्होंने संदेशवाहक के जरिये कित्तूर के बाहर डेरा डाले अधिकारियों को सूचना भेजी कि आपकी स्त्रियां और बालक सुरक्षित हैं और आप उन्हें कभी भी वापस ले जा सकते हैं। जब थैकरे को रानी

चेन्नम्मा के इस करुणामय संकेत की जानकारी मिली तो वह द्रवित हो उठा। वह इस महान नारी से मिलना और बात करना चाहता था। कहा जाता है कि उसने तो यहां तक सोचा था कि रानी को अंग्रेजों के साथ यह समझौता करने के लिए मनाने का प्रयत्न किया जाए कि वह ग्यारह गांवों के इनाम के बदले में सब द्रोह बन्द कर दें। यह सन्देश रानी चेन्नम्मा को सुनाया गया। उन्होंने अवमान के भाव से इसे ठुकरा दिया। वह थैंकरे से मिलना नहीं चाहती थीं। उन्होंने यह कह भिजवाया कि वह अस्वस्थ हैं और मिलने की स्थिति में नहीं हैं। थैंकरे ने यह सोच कर कि हो सकता है वह मुझसे अगले दिन मिलें, अपना प्रस्थान स्थगित कर दिया। उस रात पुनः रानी चेन्नम्मा ने सरदार गुरुसिद्दप्पा और अन्य प्रमुख सरदारों तथा अधिकारियों को बुलवाया और सभी मुद्दों पर विचार विमर्श करने के बाद वे सर्वसम्मति से इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि थैंकरे से मिलने की कोई तुक नहीं है, जो कित्तूर के लोगों को ब्रिटिश प्रभुत्व के सामने झुकाने के लिए अभित्रास देने के कृतसंकल्प प्रयोजन से कित्तूर के समीप सेना लेकर पहले से डेरा डाले हुए है।

थैंकरे रानी चेन्नम्मा से मिलने के आशय से अगले दिन प्रातः किले के प्रांगण में कचहरी गया। जब उसने देसाई के घर भवन तक साथ चलने के लिए कहा तो न तो परिवार का कोई व्यक्ति और ना ही कोई सरदार उसके साथ गया। उसने उन्हें कई बार बुलाया किन्तु उन्होंने इन्कार कर दिया। वह 'महानवमी दिवस' था और राजमहल में त्योहार-जैसी खुशियां मनाई जा रही थीं। सरदार, सूबेदार और कित्तूर के गण्यमान व्यक्ति तथा पड़ोसी गांवों से शेट सनदी बहुत बड़ी संख्या में राजमहल के अंदर समागार में एकत्र हुए थे। थैंकरे ने देखा कि राज-महल में अपार जन-समूह आ-जा रहा है। निराश और चकित होकर वह तैश में वहां से चल दिया और आगे की कार्रवाई के बारे में विचार करने और विनिश्चय करने के लिए शिविर में वापस आ गया।

शाम को उसने सरदार गुरुसिद्दप्पा और अन्य उच्चपदस्थ अधि-कारियों के पास सन्देशवाहक भेजे कि वे तुरन्त आ कर उनसे मिलें। उन्होंने इस तर्क के आधार पर आने से इन्कार कर दिया कि हमारे साथ

शिष्टाचारपूर्ण व्यवहार नहीं किया गया और हमारा उससे मिलने का कोई इरादा नहीं है। थैकरे इस खुली अवज्ञा से आग बबूला हो गया और उसने अपने साथ आए तोपधारी दल के कमांडर कैप्टन ब्लैक को आदेश दिया कि मोटर तोपों को किले के द्वार पर ले जाया जाए। तदनुसार दो मोटर तोपें किले के पास ले जाई गईं और द्वार मार्ग के पास खड़ी कर दी गईं। उस समय अंधेरा हो चुका था। क्रुद्ध थैकरे ने रानी चेन्नम्मा से कहलवाया कि यदि सुबह तक उन्होंने समर्पण नहीं किया और वे सही रास्ते पर नहीं आए तो इसके गंभीर परिणाम होंगे। ऐसा प्रतीत होता है कि उसने पहले ही निश्चय कर लिया था कि यदि कित्तूर के लोगों ने दिन निकलने तक अपने घुटने नहीं टेके तो वह संभवत: बदला लेने के लिए कार्रवाई करेगा।

अगले दिन ता० 23 अक्तूबर 1824 को प्रात: ब्रिटिश सेना के तोपखाने का अधिकारी, प्रहरियों को बदलने के लिए किले पर गया। उसे किले का बाहरी द्वार बन्द मिला और रानी चेन्नम्मा के प्रहरियों ने ब्रिटिश अधिकारी को प्रवेश नहीं करने दिया। थैकरे ने अनेक संदेश भेजे कि द्वार खोल दिए जाएं और सन्तरियों को ड्यूटी के लिए प्रहरियों को बदलने की इजाजत दी जाए। रानी चेन्नम्मा के आदमियों ने खुलकर अवज्ञा की। थैकरे ने कैप्टन ब्लैक को आदेश दिया कि अन्य दो मोटर तोपें भी लाई जाएं और उन्हें भी द्वार के समीप लगा दिया जाए। ऐसा कर दिया गया, और अंग्रेज एक क्षण की सूचना पर किले के द्वारों को उड़ा सकते थे।

इसी बीच थैकरे को सूचना मिल चुकी थी कि लगभग 2,000 आदमी किले के अन्दर घड़ी भर में जमा हो चुके हैं, जबकि और अधिकाधिक लोग हर मिनट किले के अन्दर आ रहे हैं। अत: उसने अश्वतोप सेना और रिसाले की लड़ाकू सेना को आदेश दिया कि किले के द्वारों की तरफ बढ़ो। इसके बाद उसने कित्तूर के सेनाध्यक्ष सरदार गुरुसिद्दप्पा के पास कड़ी चेतावनी लेकर एक संदेशवाहक भेजा कि द्वार तुरन्त खोल दिए जाएं। सरदार गुरुसिद्दप्पा ने उत्तर दिया कि जब तक ब्रिटिश सैन्य दल एक सुरक्षित दूरी पर वापस नहीं लौट जाता, तब तक द्वार नहीं

खुलेंगे । इसके बाद थैकरे ने संदेशवाहक के जरिये अंतिम चेतावनी भेजी कि यदि द्वार एक घड़ी (24 मिनट) के अन्दर नहीं खुले तो वे तोपों से उड़ा दिए जाएंगे । इस धमकी का कोई असर नहीं हुआ । थैकरे ने अपनी लड़ाकू सेना के दो कमान अफसरों—कैप्टन ब्लैक और लैफ्टीनेंट डीटन को दोनों द्वारों पर तैनात कर दिया । श्री सिवेल की कमान के अधीन तोपसेना और रिसाले को किले पर हमला करने के लिए उद्यत द्वार-मार्ग से कुछ गज दूर खड़ा कर दिया गया । ये क्षण तनावपूर्ण थे । जैसे ही ब्रिटिश सिपाही यह देखने के लिए नजर गड़ाए खड़े थे कि द्वार खुलता है या नहीं, 24 मिनट के बाद किले के द्वार अंदर से एक झटके के साथ खुले और रानी चेन्नम्मा के बहादुर घुड़सवार बिजली जैसी गति से गरजे और ब्रिटिश गैरिसन पर टूट पड़े ।

कित्तूर की सेना ने दोनों तरफ से—एक द्वार मार्ग से और दूसरे किले के परकोटों से हमला किया । सरदार गुरुसिद्दप्पा ने उस सेना की कमान संभाली, जिसने द्वारों से हमला किया था, जबकि रानी चेन्नम्मा ने किले के परकोटों पर खड़े होकर ऊपर से सैनिक कार्रवाइयों का संचालन किया । कमर में सोने की पेटी पहने हुए, जिससे उनकी म्यान लटकी हुई थी, और अपने दायें हाथ में नंगी तलवार लिए हुए तथा बायें हाथ से घोड़े की लगाम थामे हुए अपने फुर्तीले घोड़े पर सवार सावधान की मुद्रा में रानी चेन्नम्मा साहस और संकल्प की मूर्ति और तस्वीर दिखाई दे रही थीं । उनके सिपाहियों ने तुरन्त एक गुप्त द्वार बनाया और शत्रु के प्रत्येक सिपाही को तलवार के घाट उतार दिया । उन्होंने कैप्टन ब्लैक और लै० डीटन से तोपें छीन लीं जो कि उन्हें दागने वाले थे । क्रुद्ध सैनिकों ने उनके सर काट डाले और उनके शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर दिए । इसके बाद चेन्नम्मा की सेना ने अश्वतोपसेना और पैदल सेना पर हमला कर दिया । ब्रिटिश सेना इस भयानक कत्लेआम से लड़खड़ा गई । कित्तूर के सिपाही ब्रिटिश सेना पर टूट पड़े और जो भी हाथ आया उसे कत्ल कर डाला । सैन्यदुर्ग के शिखर पर रानी चेन्नम्मा घोड़े पर सवार होकर अपनी सेना की गतिविधियों का संचालन कर रही थीं । उनके बराबर में उनका श्रद्धालु अंगरक्षक अमतुर का साधुनावर

बालप्पा था। उनके आसपास बंदूक और तलवार लिए चार घुड़सवार उन पर सभव हमले से हर क्षण उनकी रक्षा करते हुए खड़े थे। कित्तूर की सेना ने हमला इतना अकस्मात किया था कि ब्रिटिश सिपाहियों को संभलने का मौका भी न मिला। इनमें से अनेकों को चेन्नम्मा की सेना ने काट-काट कर मार डाला। भ्रमित और मनोबल विहीन होकर वे भाग उठे। सर्वत्र हाहाकार मच रहा था। अपने संत्रस्त सैनिकों को देखकर थैकरे ने अपने घोड़े पर छलांग लगाई और किले की तरफ सरपट दौड़ पड़ा। विख्यात योद्धा साधुनावर बालप्पा ने उसे बुर्ज की तरफ आते देखा जहां वह रानी चेन्नम्मा के साथ खड़ा था। थैकरे पर निशाना साधकर उसने गोली चला दी। वह एक श्रेष्ठ निशानेबाज था, गोली जाकर अंग्रेज की छाती में लगी और वह घोड़े से नीचे लुढ़क पड़ा। सिपाहियों का एक दल उसकी तरफ दौड़ा और उसके टुकड़े-टुकड़े कर डाले। एक नीग्रो सिपाही, जिसका नाम राम हम्बी था, ने उसका सर काट डाला और उसे अपने भाले की नोक पर लटकाकर तथा हरेक को दिखाने के लिए उसे ऊंचा उठाकर यह चिल्लाते हुए युद्ध स्थल के चारों तरफ दौड़ा-दौड़ा फिरा, 'थैकरे मारा गया', 'थैकरे मारा गया'।

ब्रिटिश सिपाहियों की सभी आशाएं मिट्टी में मिल गई और वे चारों तरफ तितर बितर हो गए। इस मुकाबले में लगभग 80 ब्रिटिश सिपाही पहले ही मारे जा चुके थे। कुछ घायल हो गये थे और कुछ भाग गये थे। ब्रिटिश नेटिव इन्फेन्टरी (देशी पैदल सेना) के लगभग 400 सिपाही और एक यूरोपीय तोप खाने के सार्जेन्ट को हिरासत में ले लिया गया। शेष फौज वापस लौट गई और भाग गई। पालिटिकल एजेन्ट और कलेक्टर श्री थैकरे मर चुका था। इसी प्रकार कुछ कम परिचित व्यक्ति कैप्टन ब्लैक, कमांडर, लै० डीटन, और मद्रास अश्वतोपखानों का लै० सीवेल भी मारे जा चुके थे।

अंग्रेजों पर निर्णायक विजय प्राप्त करके तथा ब्रिटिश सेना को कित्तूर की सीमाओं से दूर खदेड़ कर चेन्नम्मा की सेना वापस कित्तूर लौट आई। उन्हें अभी और हिसाब चुकाना था, किन्तु इस बार स्वयं अपने ही आदमियों से। वे उन देशद्रोहियों को मार डालना चाहते थे जिन्होंने सर्वथा गद्दारी करके अंग्रेजों की सहायता की थी और अपने कुछ तुच्छ

स्वार्थों की प्राप्ति के लिए कित्तूर को हड़पने में उनकी सहायता करने का प्रयत्न किया था। तीन गद्दार दीवान कन्नूर मल्लप्पा, केन्नूर वीरप्पा और सरदार मल्लप्पा जो छिप गए थे, ढूंढ निकाले गए और उन्हें घसीटते हुए किले तक लाया गया। उनका अन्त बड़ा दर्दनाक था, वे हाथियों द्वारा कुचलवा दिए गए।

इसी बीच कित्तूर के अधिकारियों को खबरें मिलीं कि कुछ ब्रिटिश अधिकारी और धारवाड़ तथा बेलगांव कचहरी में ब्रिटिश सरकार के कर्मचारी कित्तूर नगर के कुछ प्राइवेट आवासों में छिपे हुए हैं। चेन्नम्मा के सिपाहियों ने शहर छान मारा और उन्हें ढूंढ निकाला। इनमें थे श्री थैकरे के राजनीतिक सहायक श्री ए० आर० स्टीवेन्सन और ईलियट तथा रिश्तेदार श्री श्रीनिवास राव। वे गिरफ्तार कर लिए गए और रानी चेन्नम्मा के समक्ष लाए गए। कठोर कमांडरों ने उन्हें फांसी लगाने की इजाजत मांगी। किन्तु रानी चेन्नम्मा और सरदार गुरुसिद्दप्पा ने उन्हें शांत रहने के लिए कहा। हमेशा की भांति रानी ने अपने आदमियों से कहा कि ये कैदी असैनिक अधिकारी हैं और इनके विरुद्ध मुकदमा चलाया जाना चाहिए तथा यदि इनके विरुद्ध कोई अपराध सिद्ध हो जाए तो इन्हें उचित ढंग से दण्ड दिया जाए। रानी ने आदेश किया कि तब तक उन्हें युद्धबंदी के रूप में जेल में रखा जाए। यदि रानी चेन्नम्मा ठीक समय पर हस्तक्षेप नहीं करतीं तो ये अधिकारी रानी चेन्नम्मा के सिपाहियों द्वारा मार दिए जाते, जिन पर पागलपन सवार था।

उस रात कित्तूर में चारों तरफ उल्लास छाया हुआ था। राजमहल, किले और शहर में विजयोत्सव मनाये जा रहे थे। किले की प्राचीरें जगमगा रही थीं और वायुमण्डल को चीरती हुई महान विजय की घोषणा करते हुए बिगुलों की ध्वनि किले की प्राचीरों में गूंज रही थी और कित्तूर के आसपास की हरी भरी पहाड़ियों और घाटियों के पार प्रतिध्वनित हो रही थीं। कित्तूर के बहादुर सिपाहियों ने शक्तिशाली अंग्रेजों के साथ अपनी लड़ाई में महान विजय प्राप्त की थी और उन्हें पूरी तरह परास्त कर दिया था। कर्नाटक के इतिहास में ही नहीं, बल्कि भारत के स्वातंत्र्य संग्राम के इतिहास में यह एक स्वर्ण दिवस था।

7. कित्तूर का द्वितीय युद्ध और पराजय

रानी चेन्नम्मा ने 23 अक्तूबर 1824 को कित्तूर के युद्ध में ब्रिटिश सेना को पूरी तरह से कुचल दिया और नीचा दिखाया। भागे हुए कुछ अधिकारी और सिपाही ब्रिटिश सेना की पराजय की सूचना देने के लिए धारवाड़ पहुंचे। धारवाड़ में बहुत बड़ी संख्या में ब्रिटिश सेना और असैनिक अधिकारी तैनात थे। पराजय की खबर सुनकर वे स्तम्भित रह गए और उन्हें विश्वास नहीं हुआ। क्षत-विक्षत होर्स आर्टिलेरी (अश्व तोपखाने) का एक यूरोपीय अधिकारी डा० टर्नबुल शाम को लगभग 6 बजे पहुंचा और श्री मुसग्रेव हैरीस को बुरी खबर सुनाई जो धारवाड़ में स्थित एक असैनिक अधिकारी था। हैरीस ने धारवाड़ में सेना के कमांडर लै० कर्नल डब्ल्यू डूरन्ड को तुरन्त एक नोट भेजा। इसमें उसने लिखा था—

महोदय,

आपकी सूचनार्थ निवेदन है कि मृत राजा की सेना और पालिटिकल एजेन्ट श्री थैकरे द्वारा भेजी गई अश्वतोपसेना के एक भाग के बीच कित्तूर में लड़ाई हुई—एक घुड़सवार डा० टर्नबुल जो अभी-अभी यहां आया है, का कहना है कि तोपसेना पूरी तरह क्षत-विक्षत कर दी गई है, अनेक यूरोपीय सैनिक और असैनिक दोनों—या तो बुरी तरह घायल हो गए हैं या मारे गए हैं—श्री थैकरे ने बेलगांव में कर्नल पीयर्स को जानकारी दी है, और मैंने आपको कमान अफसर के रूप में यह जानकारी भेजना उचित समझा ताकि आप यथोचित कार्रवाई कर सकें।

हस्त०—मुसग्रेव हैरीस
सिविल सेवा

धारवाड़
23 अक्तूबर, 1824

लगभग एक घण्टे बाद एक अन्य सन्देशवाहक थैकरे की मृत्यु का समाचार लेकर आया। श्री वाकर फुलरटन, महायक कलक्टर, धारवाड़ इस समाचार को सुनकर इतना आतंकित हुआ कि उसने तुरन्त एक सन्देशवाहक के द्वारा निम्नलिखित संदेश बेलगांव भेजा :

निदेश

किसी अधिकारी को तीव्रातितीव्र गति से तुरन्त बेलगांव भेज दिया जाए महोदय या महोदयगण,

भगवान की खातिर कुछ सेना को तुरन्त अविलम्ब कित्तूर भेज दीजिए।

तोपखाना छिन्न-भिन्न कर दिया गया है—अनुमान है कि श्री थैकरे मारे गए हैं—कैप्टन ब्लैक के शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर दिए गए हैं। सीवेल के मारे जाने की संभावना है—डीयटन मारा गया और थैकरे के दो सहायकों—इलीयट और स्टीवेन्सन का कोई पता नहीं है·· भगवान की खातिर, तुरंत भेजिए। हमारी सेना किसी भी काम की नहीं है, क्योंकि हमारे पास केवल 100 जवान हैं।

भवदीय

धारवाड़ ह० वाकर फुलरटन

रात्रि के 8 बजे सहायक कलक्टर

23 अक्तूबर, 1824

धारवाड़ में ब्रिटिश सैनिक और असैनिक अधिकारियों में भारी खलबली मची हुई थी। उन्होंने अपने सभी सैनिक अड्डों को जल्दी-जल्दी संदेश भेजने शुरू कर दिए कि सेना की टुकड़ियां तुरन्त रवाना की जाएं। अगले ही दिन प्रातः लै० कर्नल डूरन्ड ने बरेली के कमान अफसर के पास विद्रोह और थैकरे की मृत्यु का समाचार देने के लिए एक सन्देशवाहक भेजा। उसने उसे इन सुनी हुई खबरों से भी अवगत कराया कि कित्तूर के विद्रोही धारवाड़ पर हमला करने की योजना बना रहे हैं।

इसी बीच, ब्रिटिश सिपाही थैकरे, कैप्टन ब्लैक, लै० सीवेल और

लै० डीयटन के शवों को लेकर धारवाड़ पहुंच गए। उनके शव धारवाड़ में, यूरोपीय कब्रिस्तान में दफना दिए गए।

इस बीच कित्तूर की लड़ाकू सेना और जनता कित्तूर में महान विजयोत्सव मना रही थी। शत्रु को परास्त कर दिया गया था। स्वदेशी शत्रुओं का खात्मा कर दिया गया था। सर्वत्र खुशी और उल्लास का वातावरण था। उस रात अपनी सेना से विदा लेकर रानी चेन्नम्मा अपने विश्वासपात्र सहायकों और सेना के कमांडरों, जैसे सरदार गुरुसिद्दप्पा, संगोली रामायणा, अवरादी, वीरप्पा, सरदार हिम्मत सिंह, श्री नरसिंह राव और कुछ अन्य के साथ चौकीमठ गई। चौकीमठ के पूज्य स्वामी जी के प्रति परम्परागत आदरभाव व्यक्त करने के बाद उन्होंने भावी योजना के बारे में वहां गुप्त कक्षों में एक गोपनीय सत्र किया।

रानी चेन्नम्मा ने उन्हें नवीनतम घटनाओं से अवगत कराया। उन्हें समाचार मिला था कि ब्रिटिश सेना का एक संदेशवाहक -बेलगांव से जो कि उनका मुख्यालय था, सेना को कित्तूर रवाना करने का संदेश लेकर धारवाड़ से बेलगांव जा चुका है। वह जानती थीं कि अंग्रेज इस हार के बाद चैन से नहीं बैठेंगे और वे कित्तूर पर भारी धावा बोलने के लिए शक्ति जुटा रहे होंगे। वह अपनी शक्ति और कमजोरियों दोनों को जानती थीं। कित्तूर का किला बहुत मजबूत था और गजब की रक्षा प्रदान करता था। किन्तु वह यह भी जानती थीं कि यदि उन्होंने अपनी कमान की समस्त सेना चढ़ा दी तो अकेले कित्तूर की सेना अंग्रेजों से लड़ने के लिए अपर्याप्त होगी। ब्रिटिश सेना की शक्ति संख्या, अस्त्रशस्त्र और तकनीक की दृष्टि से कहीं अधिक श्रेष्ठ होगी। उनकी एकमात्र आशा कोल्हापुर के राजा से उत्तर की थी जिनके पास वह पहले ही लगभग चार दिन पूर्व एक सन्देश भेज चुकी थीं। किन्तु उन्हें तब तक उनकी तरफ से कोई समाचार नहीं मिला।

उन्होंने स्वामीजी को इस बात से भी अवगत करा दिया कि हमारी सेना ने लगभग 40 अंग्रेजों को बन्दी बना लिया है जिनके अन्तर्गत दो महत्वपूर्ण असैनिक अधिकारी श्री स्टीवेन्सन और श्री वाकर इलियट भी हैं। गंभीर विचार-विमर्श के बाद रानी चेन्नम्मा और उनके सहयोगी

सर्वसम्मत निश्चय पर पहुंचे। वे इस बात पर राजी हुए कि उन्हें अंग्रेजों के साथ सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध बनाने के लिए उत्साहपूर्वक प्रयत्न करने चाहिए, और उन्हें इस बात के लिए मनाना चाहिए कि विगत की भांति रियासत को स्वायत्तता बहाल की जाए। अतः यह निश्चय किया गया कि राज्य का एक वकील राज्य की पुर्नस्थापना के हेतु अभ्यावेदन करने के लिए ब्रिटिश अधिकारियों से मिलने के लिए नियुक्त किया जाए। वे इस पर भी सहमत थे कि स्टीवेन्सन और इलीयट को, यदि संभव हो तो सद्भावना के दूत के रूप में या यदि अन्ततः आवश्यक समझा जाए तो, अमानत के रूप में काम में लिया जाए। इस प्रयोजनार्थ, असैनिक अधिकारियों के साथ अत्यन्त विनम्र और सोच समझ कर व्यवहार करना आवश्यक है जिससे कि उनकी सहायता से अनुकूल शर्तों के लिए या स्वायत्तता के लिए ब्रिटिश अधिकारियों से सौदेबाजी करना उनके लिए संभव होगा। फिर भी यदि ये प्रयास असफल रहे तो उनकी राय थी कि उन्हें निःसंकोच होकर अन्तिम सांस तक लड़ने के लिए तैयार रहना चाहिए।

रानी चेन्नम्मा को बड़ी आशाएं थीं कि कोल्हापुर का राजा उनका साथ देगा। इससे दक्षिणी रियासतों के प्रत्येक अन्य देशभक्त प्रधान को ब्रिटिश शक्ति के विरुद्ध इस क्रान्ति में भाग लेने का प्रोत्साहन मिलेगा।

काफी रात को चौकीमठ से लौटने के बाद सरदार गुरुसिद्दप्पा, अवरादी वीरप्पा और सरदार हिम्मतसिंह ने कित्तूर जेल में स्टीवेन्सन और इलियट से मुलाकात की उन्होंने उन्हें आश्वासन दिया कि आपके साथ अत्यन्त विनम्र व्यवहार किया जाएगा। और आपकी अच्छी देख-भाल की जाएगी। उन्होंने उन्हें यह भी बताया कि हमने मुम्बई के गवर्नर एच० ई० मोन्स्टुअर्ट एल्फिस्टन से अपील की है कि रियासत की स्वायत्तता बहाल की जाए और साथ ही उसे थैकरे द्वारा कित्तूर के शासकों और जनता के साथ किए गए दुर्व्यवहार से भी अवगत करा दिया गया है। उन्होंने उन्हें आश्वासन दिया कि जब तक श्री एल्फिस्टन से कोई खबर नहीं मिलती, तब तक उन्हें कोई नुकसान नहीं होने दिया जाएगा। उन्होंने तो यहां तक आश्वासन दिया कि उन्हें उनके साथियों

और ऊंचे अधिकारियों को इच्छानुसार संदेश भेजने दिया जाएगा जिससे कि वे भी कित्तूर के कार्यकलापों और यहां होने वाली घटनाओं की वस्तुस्थिति से परिचित होते रहें। दोनों अंग्रेजों को आश्वासन दिया गया कि इन सुझावों के लिए रानी चेन्नम्मा का अनुमोदन प्राप्त है। वे यह भी समझ गए थे कि यदि इस मैत्रीभाव का गलत अर्थ कमजोरी लगाया और अवज्ञा की गई, और यदि अंग्रेजों ने सैनिक शक्ति द्वारा कित्तूर पर कब्जा करने का प्रयत्न किया तो कित्तूर के लोग, जिन्हें स्वतंत्रता प्राणों से भी ज्यादा प्रिय है, कुछ भी कर डालेंगे, यदि अंततोगत्वा कित्तूर को झुकना पड़ा तो वे सबसे पहले उन्हें मार डालेंगे और फिर रानी चेन्नम्मा सहित जिन्हें वे असीम सम्मान देते हैं, स्वयं अपनी स्त्रियों को मार डालेंगे, और फिर उनमें से एक-एक प्राणी कित्तूर में अंग्रेजों के शासन में रहने के वजाय कित्तूर की पवित्र भूमि पर लड़ते-लड़ते प्राण दे देगा।

अगले दिन प्रातः यानी 24 अक्तूबर 1824 को दोनों बन्दियों ने एक साथ पुणे में स्थित दक्षिण के आयुक्त श्री चैपलिन को एक पत्र लिखा और उसे कित्तूर में 23 अक्तूबर को होने वाली घटनाओं से विस्तारपूर्वक अवगत कराया। यह पत्र निम्न प्रकार है—

प्रेषक : जे० ए० आर० स्टीवेन्सन

24 अक्तूबर 1824

सेवा में,

वाकर चैपलिन

कमिश्नर इन-डकन

महोदय,

आपको श्री थैकरे की मृत्यु की सूचना देना मेरा दुखद कर्त्तव्य है। कल वह उस समय गोली के शिकार हो गए जब वह कित्तूर के किले के द्वारमार्ग की तरफ जा रहे थे। कित्तूर के सरदारों में कुछ दिन बड़ा असन्तोष रहा, और अन्त में उन्होंने मेरे निदेशों का पालन करने से इन्कार कर दिया तथा द्वार बन्द कर दिये और किसी को भी प्रवेश नहीं करने दिया। खजाने की सुरक्षा के लिए श्री थैकरे ने सामने कुछ रक्षक सिपाही और कुछ तोपें लगाना आवश्यक समझा और मद्रास तोपखाने

के कैप्टन ब्लैक को जब प्रहरी को छोड़ने के लिए वहां नहीं जाने दिया गया तो श्री थैंकरे ने सरदारों को चेतावनी दी कि यदि द्वार एक घड़ी के अन्दर नहीं खोले तो उड़ा दिये जाएंगे।

चूंकि द्वार नहीं खुला, और कोई व्यक्ति उत्तर लेकर नहीं आया, अतः तोप कैप्टन ब्लैक, कैप्टन सीवेल और लै० डीयटन दो तोपें लेकर द्वार को तोप से उड़ाने के लिए बढ़ चले। मुझे अपनी दुखद कहानी संक्षेप में कहनी चाहिए। किले में से नौकरों ने एक गुप्त द्वार बनाया और तोपों पर कब्जा कर लिया तथा जो भी व्यक्ति उनके रास्ते में आया, उसका तलवार से सफाया कर दिया। ठीक इसी समय बेचारा थैंकरे दुर्भाग्यवश वहां आ पहुंचा और उस पर गोली चला दी गई। मुझे डर है कि तोपखाने के तीन अधिकारी भी शिकार हो गये हैं। श्री इलियट और मैं भाग निकले, किन्तु शीघ्र ही पकड़ लिए गए। हमारे अपने प्राण मुश्किल से बचे हैं और अब हम बंदी हैं। उन्होंने हमें तब तक रिहा करने से इन्कार कर दिया है जब तक कि मुम्बई से उत्तर नहीं आ जाता किन्तु हम अपने प्राण सुरक्षित नहीं समझते क्योंकि जब एक बार इनका खून खौल गया तो नौकरों को कोई नहीं रोक सकता। यदि मुम्बई से सरदारों के पत्र का उत्तर इनकी इच्छा के अनुकूल नहीं आया तो हम नहीं समझते कि इनकी बातों का विश्वास किया जा सकता है। सरदारों का कहना है कि यदि उन पर हमला किया गया तो उनका इरादा सबसे पहले स्त्रियों को और फिर अपने आपको मार डालने का है।

जल्दी में लिखे गये इस पत्र के लिए क्षमा कीजिए। मैं डंडे के जोर पर लिख रहा हूं।

कित्तूर भवदीय

24 अक्तूबर 1824 ह० । जे० ए० आर० स्टीवेन्सन

श्री एस० और श्री ई० के अतिरिक्त एक सिरस्तेदार श्रीनिवासराव और नेटिव होर्स आर्टिलेरी (देशी अश्वतोपखाने) के 30 या 40 सिपाहियों सहित यूरोपीय तोपखाने का एक जवान कैदी हैं। वर्तमान अशांति का अगुवा सरदार गुरुसिद्दप्पा है जो समग्रतः देसाई मल्लसर्जा की विधवा दोवगरे देसाई -,नट- के नाम से कार्य करता है। दोवगरे देसाई चुनवा

उत्तराधिकार के लिए स्वर्गीय देसाई की विधवा से अधिक अपना अधिकार मानती है। उसकी पार्टी अब इतनी दूर पहुंच कर निराश हो गई है और यदि सरकार उनके प्रस्ताव पर राजी नहीं होती है तो अन्त तक टक्कर लेने की बात करती है। श्री एस० और मुझे तब तक बन्दी रखा जाएगा जब तक इनके पत्र का उत्तर नहीं आ जाता, क्योंकि इन्हें आशा है कि हमारी सुरक्षा की खातिर सरकार उनकी मांगों पर अधिक सहानुभूतिपूर्वक विचार करेगी, तभी निर्णायक उपाय किये जाएं। मुझे इसमें कोई सन्देह नहीं है कि ये अन्त तक मुकाबला करेंगे और संभवतः हमसे प्रतिशोध लेंगे। गुरुसिद्दप्पा का चरित्र कमजोर है, किन्तु वह हठी है। वह हर तरफ से अपने शेट सनदियों को एकत्र कर रहा है और किले में अब संभवतः 5000 से भी अधिक जवान हैं।

ह०। इलियट

जैसा कि पहले ही निर्णय हो चुका था, चौबीस तारीख को सवेरे ही रानी चेन्नम्मा ने अपनी सेना का एक छोटा सा दल मुगटखान हुबली के समीप मलप्रभा नदी पर इन अनुदेशों के साथ घाट पर पहरा देने के लिए तुरन्त भेज दिया कि ब्रिटिश सेना उसे पार न करने पाए और जब तक संभव हो, उसे रोके रखा जाए। उन्होंने उन्हें नदी किनारे की सभी नावों को डुबोने के आदेश दिए। ऐसा ब्रिटिश सेना के कित्तूर की तरफ बढ़ने के तुरन्त किसी संभव खतरे को रोकने के लिए किया गया था। उन्होंने अपनी सेना के एक छोटे से दस्ते को मुगटखान हुबली और कित्तूर के बीच की सड़क पर पहरा देने का आदेश दिया।

इसके बाद रानी चेन्नम्मा ने एक वकील श्री श्रीनिवास राव को एक मैत्रीपूर्ण समझौते की संभावनाओं का पता लगाने के लिए अंग्रेजों से बातचीत प्रारंभ करने के लिए धारवाड़ भेजा।

दक्षिण का आयुक्त चैंपलिन इन घटनाओं से बुरी तरह परेशान था। कुशाग्र बुद्धि और ढीठ चैंपलिन ने हमेशा थैकरे के साथ मिलकर कित्तूर को हड़पने के कुचक्र का षडयंत्र रचा था। वह उन दिनों की ब्रिटिश साम्राज्यवादी नौकरशाही का एक अनूठा प्रतिनिधि था। उसका गर्व अर्थात् शक्तिशाली और दुर्जेय ब्रिटिश साम्राज्य के निष्ठावान नौकर का

गर्व अंग्रेजों की करारी-हार से चूर-चूर हो गया। उसके खण्डित गर्व ने घोर प्रतिशोध का रूप धारण कर लिया।

उसे रानी चेन्नम्मा द्वारा किए गए प्रस्तावों का पता चल गया था जिनसे एक दूसरे को समझने की तथा सम्मानजनक समझौते की संभावनाओं का पता लगाने के लिए सभी द्रोहों को बन्द करने की उनकी इच्छा का संकेत मिलता था। विलक्षण राजनीतिज्ञ चैपलिन ने उसी समय तक बातचीत जारी रखने का बहाना करने की एक चालाकीपूर्ण सामरिक नीति अपनाने का निश्चय किया, जब तक कि अंग्रेज शासक कित्तूर को कुचल डालने के लिए पर्याप्त सैनिक शक्ति नहीं जुटा लेते हैं, जैसा कि भावी घटनाक्रम से निश्चित संकेत मिलता है। इस नीति का बड़ा होशियारी से अनुसरण किया गया। उसने श्री आर० ईडन को बेलगांव के मुख्यालय में कार्यवाहक पालिटिकल एजेन्ट नियुक्त किया और श्री मुनरो को धारवाड़ में कार्यवाहक कलक्टर नियुक्त किया। उसने श्री मुनरो को बातचीत करने के लिए प्राधिकृत किया।

इसी बीच, उसकी जानकारी और अनुमोदन से ब्रिटिश सेना के अधिकारियों ने चारों तरफ से कित्तूर में सैन्य शक्ति जमा करने के लिए सभी साधन जुटा लिए थे। तारीख 25 अक्तूबर के अपने पत्र में बेलगांव स्थित हेडक्वार्टर्स फील्ड फोर्स दोआब के कमांडर कर्नल पीयर्स ने कित्तूर में बगावत को कुचलने के लिए अपने द्वारा उठाये गये कदमों के बारे में पुणे में सेना के क्वार्टर मास्टर जनरल को पत्र लिखा। उसने कित्तूर की तरफ कूच करने वाली सेना के बारे में विस्तृत जानकारी दे दी।

निम्नलिखित टुकड़ियों ने कित्तूर में कैप्टन ब्लैक के अधीन सेना में शामिल होने के लिए बेलगांव से आज प्रातः कूच कर दिया है अर्थात् होर्स ब्रिगेड, और थैकरे के साथ पंचम रेजिमेन्ट नेटिव इन्फेन्ट्री की एक कम्पनी। चतुर्थ रेजिमेन्ट लाइट केवलरी की एक टुकड़ी 49वीं रेजिमेन्ट नेटिव इन्फेन्ट्री की दो कम्पनियां। इसके अतिरिक्त भारी आयुधों (हैवी आर्डनेंस) की शक्ति। हिज मजेस्टीज़ की 46वीं पैदल सेना की एक कम्पनी, और पायनीयर्स की कम्पनी अब तैयारी में है, और जब तक मुझे मुख्य कलक्टर से यह सूचना नहीं मिल जाती कि टुकड़ियां कित्तूर में शांति

कायम हो जाने के फलस्वरूप अनावश्यक हैं, वे तुरन्त कूच कर देंगे।

चूंकि बेलगांव में दो दलों को खींचने के लिए माल खींचने वाले सार्वजनिक पशुओं की संख्या पर्याप्त नहीं है, अतः भारी आर्डनेंस नोत्जर और मार्टर तक ही सीमित रहना चाहिए। शेष पशु वेंगूरला से सैनिक भंडार को ले जाने के लिए भेज दिये गये हैं।

यद्यपि श्री थैंकरे ने इस घटना का उल्लेख नहीं किया है, फिर भी उसके पत्रवाहक का कहना है कि होर्स ब्रिगेड तोपों में से दो कित्तूर किले के अन्दर घुसने दी गई, जिसके बाद पिछवाड़े का द्वार बंद कर दिया गया और अमलदारों ने उन पर गोलियां चला दीं।

कित्तूर का किला बहुत मजबूत है और चूंकि बागियों द्वारा सरकार के आदेशों को मानने के लिए मजबूर कर दिए जाने के बाद ही कुछ समय तक इस पर बलपूर्वक इसका अधिभोग रखना आवश्यक समझा जा सकता है, अतः मैं महामहिम की जानकारी में यह बात लाने की प्रार्थना करता हूं कि मेरे पास जो अल्प सैनिक साधन हैं, वे इतनी बड़ी सैन्य शक्ति को काम नहीं दे सकते।

कर्नल एफ० पीयर्स के पत्र में यथा वर्णित उसके आदेशों के अनुसार लैं० कर्नल मेक लायड के नेतृत्व में रेजिमेन्ट बेलगांव से कित्तूर के लिए रवाना हो गयी। इसके कुछ ही देर बाद धारवाड़ से ब्रिटिश सेना के एक सन्देशवाहक ने आकर बताया कि बागियों ने धारवाड़ पर आक्रमण करने की योजना बना रखी है। इसकी प्राप्ति के बाद, बेलगांव में सेना के असिस्टेंट क्वार्टरमास्टर जनरल श्री आई० आई० ओ० डूनो ने, कर्नल पीयर्स के अनुदेशों के अनुसार, लैं० कर्नल मेकलायड के पास तत्काल संदेश भेजा कि कित्तूर पार कर जाएं और इस आक्रमण को पूर्वानुमान करने के लिए कित्तूर तथा धारवाड़ के मध्य मार्ग में किसी जगह पर अड्डा जमा दें। उसके पत्र का पूरा पाठ निम्नलिखित है—

सं० 754/1824 असिस्टेंट क्वार्टरमास्टर जनरल

का कार्यालय

बेलगांव कैम्प

तारीख 25 अक्तूबर 1824

सेवा में,

लेफ्टीनेंट कर्नल मेकलायड

कमांडिग फोर्थ रेजिमेंट लाइट केवलरी

महोदय,

जो विपत्तिपूर्ण घटना 23 अक्तूबर को कित्तूर में हुई थी और जिसके कारण श्री थैंकरे की मृत्यु हो गई है एवं होर्स ब्रिगेड तथा पंचम रेजिमेंट नेटिव इन्फेन्ट्री ध्वस्त हो गई और सर्वश्री इलियट तथा स्टीवेन्सन को किले में नजरबंद कर लिया गया है उससे सम्पूर्ण देश में आम बगावत फैल गई है जिसके बारे में कहा जाता है कि मलप्रभा नदी की नावें नदी में डुबो दिये जाने के साथ-साथ उस नदी और कित्तूर के बीच भारी पहरा लगा हुआ है।

इन परिस्थितियों के अलावा सूचना मिली है कि कित्तूर के बागियों का इरादा धारवाड़ पर आक्रमण करने का है, जहां काफी संख्या में अपराधियों के होने के अतिरिक्त प्रधान कलक्टर का कार्यालय है। अतः इसके परिणामस्वरूप दुर्ग पर इसकी सीमा से लेकर विद्रोह के स्थान तक खतरा हो सकता है।

अतः कित्तूर और धारवाड़ के बीच पर्याप्त सेना का लगाना आवश्यक है जिससे कि बागियों के किसी भी पूर्व नियोजित आक्रमण से धारवाड़ को बचाया जा सके।

इस दृष्टि से, ऐसे सैन्य बल में आर्डनेंस और पार्श्व में वर्णित कोर की अनेक टुकड़ियां होंगी जो कि एकदम आपकी कमान के अधीन होंगी।

तदनुसार आप इसे मलप्रभा पर मुकटखान हुबली पर कल सुबह कूच कर दें और वहां आर्डनेंस के पहुंचने पर आप उस नदी को पार करेंगे तथा कित्तूर और धारवाड़ के प्रायः बीच में अपितु कित्तूर की अपेक्षा धारवाड़ की तरफ अधिक अड्डा जमा दें ताकि उसे बचाया जा सके।

अपनी कमान के अधीन वाली टुकड़ी को आप आक्रमण की अपेक्षा विद्रोहियों के आन्दोलन संबन्धी जानकारी प्राप्त करने के लिए एक

पर्यवेक्षण की टुकड़ी समझें, और कित्तूर की तरफ केवलरी तथा इन्फेन्ट्री दोनों से समय-समय पर जासूसी करें, खोजबीन करें और इसके परिणामस्वरूप जो सूचना आप आवश्यक समझें, उससे आप जिला मुख्यालय को लगातार अवगत कराते रहें।

असैनिक विभाग में स्वर्गीय श्री थैकरे का उत्तराधिकारी कौन है, इसकी अज्ञानता के कारण कर्नल पीयर्स उस सज्जन के साथ आपकी बातचीत सम्बन्धी कोई अनुदेश नहीं दे पा रहे हैं, किन्तु यदि कोई आप को इस पद से संबोधित करें तो आप वर्तमान स्थिति के बारे में उनके साथ तदनुसार बात करेंगे, किन्तु कर्नल पीयर्स की पूर्व मंजूरी के बिना कित्तूर किले पर कोई हमला करने का प्रयत्न न किया जाए।

आपसे वांछित है कि आप धारवाड़ में कमान अफसर को, गुप्त रूप से समाचार देते रहें।

भवदीय

ह० । आई० आई० ओ० डूनो,

असिस्टेंट क्वार्टर मास्टर जनरल

किन्तु इसी बीच रानी चेन्नम्मा के आदेशानुसार, मुगदखान हुबली के पास नदी किनारे पर सभी नावें डुबो दी गईं और कित्तूर तथा मुगदखान हुबली के बीच के क्षेत्र पर कित्तूर की सेना पहरा दे रही थी। कर्नल पीयर्स ने 25 तारीख को पुणे में क्वार्टर मास्टर जनरल को नई घटनाओं सम्बन्धी जानकारी पत्र सं० 712/1824 के द्वारा दी थी। इस पत्र का सुसंगत भाग नीचे उद्धृत है—

> परिणामस्वरूप, मैंने लेफ्टिनेंट कर्नल मेकलायड, चतुर्थ केवलरी के अधीन, उस रेजिमेंट के इतने बड़े भाग को, जितना एक स्क्वेड्रन और बीमार घोड़ों को छोड़कर, साज-सज्जित किया जा सके, इतने स्क्वेड्रनों को जिन्हें खींचने के लिए बैल हों, हिजमजेस्टी की 46वीं फूट की एक कम्पनी, को 49वें रेजिमेंट की दो पार्श्व कम्पनियों को और पायनीयर्स की एक कम्पनी को प्रस्थान करने का निदेश दिया है।
>
> —मैंने यह भी निदेश दिया है कि शोलापुर से 23वीं लाइट इन-

फेन्ट्री, थैलों को ढोने के लिए बेन्नातांव के वाहन सप्लाई किए जाने पर तुरन्त मार्च कर दे।

साथ ही मैंने अभ्यर्पित जिलों के अफसर कमांडिंग से निम्नलिखित सैनिक सहायता तुरन्त मांगी है: यूरोपीयन फूट आर्टिलेरी की एक कम्पनी, हिज मजेस्टी की 46वीं फूट की दो पूरी कम्पनियां, नेटिव इन्फेन्ट्री की एक रेजिमेंट यथासुलभ फौज या सैन्य बल सहित, मेरी प्रार्थना है कि धारवाड़ की ओर मार्च कर दें।

फिर भी मुझे आशंका है कि अतिरिक्त फौज की आवश्यकता पड़ सकती है।

उसी दिन उसने बरेली में अफसर कमांडिंग को भी एक पत्र भेजा और निम्नलिखित फौज भेजने की प्रार्थना की:

यूरोपीयन फूट आर्टिलेरी की एक कम्पनी
हिजमजेस्टी की 46वीं फूट की दो पूरी कम्पनियां
नेटिव इन्फैन्ट्री की एक रेजिमेंट।

इसी बीच, कित्तूर में, स्टीवेन्सन और इलियट ने कित्तूर के नेताओं के साथ संक्षिप्त मुलाकातें कीं। स्टीवेन्सन एक गंभीर व्यक्ति था जो घटनाओं को निरपेक्ष दृष्टि से समझ सकता था। उसने उन घटनाओं पर चिन्तन मनन किया जिनके कारण कित्तूर में बगावत हुई थी, जिसमें ब्रिटिश सेनाओं को बुरी हार खानी पड़ी थी। उसने 23 तारीख की रात को एक दूसरा विस्तृत पत्र चैपलिन को लिखा जिसमें 23 तारीख को हुई घटनाओं का विस्तृत विवरण दिया और साथ ही यह भी संकेत दिया कि यह विपत्ति स्वर्गीय पालिटिकल एजेन्ट द्वारा अपनाये गए अबुद्धि-मत्ता-पूर्ण और लोलुपतापूर्ण दृष्टिकोण तथा जल्दबाजी की कार्यवाही के फल-स्वरूप आई थी।

पत्र का वह उद्धरण नीचे दिया गया है, जिससे स्थिति के बारे में उसके अन्दाज का संकेत मिलता है—

प्रधान सरदारों में से एक गुरुसिद्दप्पा और भूतपूर्व देसाई की विधवा चेन्नम्मा ने, श्री थैकरे की कुछ अनुमानित उपेक्षा से संक्षुब्ध होकर जनता को भड़का दिया। अब उन्हें प्रतीत होता है कि मामला

इतना आगे बढ़ गया है जितना कि उनका आशय नहीं था और ऐसा प्रतीत होता है कि विचार-विमर्श करने की एकमात्र आशा के रूप में वे उन बंदियों पर निर्भर करते हैं, जो उनके नियंत्रण में हैं। गुरुसिद्दप्पा हमारे साथ अब भी सम्मानपूर्वक व्यवहार करता है। उसने हमें बताया है कि हम तब तक बंदी रखे जाएगे जब तक कि सरकार से उनके पत्रों का उत्तर नहीं आ जाता। यदि इनके पत्रों का उत्तर अनुकूल रहा तो हम रिहा कर दिए जाएंगे, यदि अनुकूल नहीं हुआ तो उनका कहना है कि उन्होंने स्त्रियों और बन्दियों को मार डालने का तथा मातृभूमि की रक्षा में बलिदान हो जाने का पक्का इरादा कर लिया है। उसने ऐसी भाषा का प्रयोग, जो कुछ हुआ है, उसके परिणामों के भय से, न कि, मेरे विचार में, संस्थान को जारी रखने की बात मनवाने के विचार से, किया है। हमें पता चला है कि बेलगांव से चलकर सेना नदी तक पहुंच चुकी है, किन्तु मुझे कुछ सन्देह है कि यह उस स्थान पर कब्जा करने के लिए पर्याप्त होगी, जिसमें मैंने सुना है, 10,000 जवान हैं। इन परिस्थितियों में और सरकार से पर्याप्त अधिकारयुक्त किसी अधिकारी के आदेशों या निदेशों के न होने की दशा में मैंने अफसर कमांडिग को पत्र लिखा है जिसमें सिफारिश की है कि तब तक रुके रहिये, जब तक कि निदेश प्राप्त नहीं हो जाते और उन्हें बताया है कि ज्यों ही राजमहल पर गोली चली त्यों ही क्रुद्ध भीड़ हमें मार डालेगी, इसके बारे में मुझे कोई संदेह नहीं है। वास्तव में कुछ सरदारों ने हमें यह बताया है और 23 तारीख को जो कुछ हमने देखा है, उससे उनके अदम्य उत्साह और प्रकोप के बारे में कोई सन्देह नहीं हो सकता। सिरस्तेदार श्रीनिवास राव को, जो कि बंदी साथी है, वापस लौट आने की शर्त पर हमारे पत्र को शिविर तक ले जाने की इजाजत दी गई है। गुरुसिद्दप्पा ने उससे भी वही बातें की हैं, जो उसने हमसे की हैं। मैं नहीं समझता कि आपके यहां आए बिना वर्तमान दुर्भाग्यपूर्ण अवस्था या आनुकल्पिक व्यवस्था के बारे में कोई समझौता किया जा सकता है।

मेरे विचार में, मैंने अब आपको इतनी बातें बता दी हैं जितनी मैं पत्र द्वारा बता सकता हूं। यदि मुझे आपसे पुनः मिलने का सुअवसर मिला तो मैं घटनाओं के बारे में अधिक विस्तृत रूप से बता सकूंगा। फिर भी मैं यह कहना चाहूंगा कि विवरणों से मुझे विश्वास है कि इसमें कोई सन्देह नहीं है कि वे 10,000 जवान एकत्र हो जाएंगे, जो कि अब तोपखाने में हैं और सिरस्तेदार ने मुझे बताया कि दोनों नेता और जवान हताश दिखाई पड़ते हैं।

कित्तूर में, उत्साही सरदारों और नेताओं ने 27 अक्तूबर 1824 को शिवलिंगप्पा का राज्याभिषेक समारोह किया। यह समारोह कित्तूर ग्राम के समीप चौकीमठ में किया गया था। स्वामी जी ने नये शासक को आशीर्वाद दिया था। इस समारोह में सम्पूर्ण रियासत से आए लोगों ने बड़ी संख्या में भाग लिया था।

इतने समय में बगावत का समाचार फैल चुका था और ब्रिटिश शासन के विरुद्ध धारवाड़ समेत कुछ स्थानों पर जहां-तहां आक्रोश भड़का था। आतंकित सैनिक पदाधिकारी अपनी खुफिया के माध्यम से सूचनाएं एकत्र करने और संकटग्रस्त क्षेत्रों को तुरन्त सेना की टुकड़ियां भेजने की कार्रवाई करने में व्यस्त थे। कैप्टन पीयर्स द्वारा क्वार्टर मास्टर जनरल को भेजे गये तारीख 27 अक्तूबर के पत्र से लिए गए निम्नलिखित उद्धरण से धारवाड़ में हुई घटनाओं और कित्तूर के बागियों को रोकने के लिए उसके द्वारा उठाये गये कदमों की भी जानकारी मिलती है।

महामहिम कमांडर-इन-चीफ की जानकारी के लिए मैं कृपया यह भी रिपोर्ट देना चाहूंगा कि नीचे वर्णित परिवर्तनों के अनुसार इस मास की तारीख 25 के मेरे पत्र में वर्णित सेना, जिसमें चतुर्थ केवलरी का सैन्यदल और 49वीं रजिमेंट की दो कम्पनियां जो 23 तारीख को चल दी थीं, किन्तु मलप्रभा को पार नहीं कर सकीं, जोड़ दी गई हैं, लेफ्टिनेंट कर्नल मेकलायड, चतुर्थ रेजिमेंट लाइट केवलरी की कमान के अधीन कल सुबह बेलगांव से चल दी थी।

चतुर्थ लाइट केवलरी के 3 स्क्वाड्रन
दो पीतल की 12 पौंड की फील्ड गनें

हिज मेजेस्टी की 46वीं फूड कम्पनी
जिसकी संख्या बढ़ाकर 100 कर दी गई है।

इस सूचना के परिणामस्वरूप कि कित्तूर के बागी धारवाड़ पर हमला करने की सोच रहे हैं, जहां पर प्रधान कलक्टर का खजाना है, और बहुत सारे अपराधी हैं, जो पिछले मुहर्रम के त्यौहार के अंतिम दिन अपने प्रहरी दल पर टूट पड़े थे, जिसमें सोलह मारे गये थे, मैंने लेफ्टिनेंट कर्नल मेकलायड की टुकड़ी का प्रस्थान पूर्ववर्ती जगह के बजाय कित्तूर और धारवाड़ के बीच एक जगह पर कर दिया है। मैं स्वयं लेफ्टिनेंट कर्नल मेकलायड के मार्गदर्शन के लिए उसे दिये गए अनुदेशों के पत्र की एक प्रतिलिपि भी संलग्न कर रहा हूं।

पड़ोस में घुड़सवारों के दिखाई पड़ने की रिपोर्ट के कारण चौथी केवलरी का एक दस्ता बेलगांव में रोक दिया गया है। दस्ते के अलावा, रंगरूटों, बीमार घोड़े और परिवार बेलगांव में ही हैं।

मैंने चित्रदुर्ग में कमान अफसर से इतनी सेना की तुरंत सहायता के लिए आवेदन किया है जितनी वह धारवाड़ के गैरिसन को अस्थायी तौर पर मजबूत करने के लिए दे सकें।

और मैंने आयुक्त से यह सिफारिश की है कि नेटिव इन्फेन्ट्री की मुम्बई रेजिमेंट या कम से कम रेजिमेंट का एक खण्ड शोलापुर में 23वीं इन्फेन्ट्री (पैदल सेना) के स्थान पर भेज दिया जाए।

उसी दिन कैप्टन पीयर्स ने भी चित्रदुर्ग एक संदेश भेजा था कि लड़ाकू सेना का एक दल कित्तूर भेज दिया जाए।

जब ये सैन्य अभियान चालू थे, श्री ईडन, जिसने 26 अक्तूबर को कार्यवाहक पालिटिकल एजेन्ट के पद का भार ग्रहण किया था, बेलगांव से धारवाड़ की ओर अग्रसर हुए। 26 और 27 तारीख को वह धारवाड़ में थे जहां उन्हें कित्तूर का वकील श्री श्रीनिवास राव मिला था और उससे चर्चा की थी। वह 28 तारीख को बेलगांव लौट आए। इसी बीच तारीख 24 का श्री स्टीवेन्सन का पत्र मिल गया। श्री ईडन स्टीवेन्सन और इलियट की दयनीय दशा का अनुमान लगा सकते थे। अतः उन्होंने कैप्टन पीयर्स को संदेश भेजा कि लेफ्टिनेंट कर्नल मेकलायड को हिदायत

दे दी जाए कि वह मुगटखान हुबली के समीप मलप्रभा नदी को तब तक पार न करे, जब तक वे कित्तूर के वकील से इस विषय पर बातचीत न कर लें। जो टिप्पणी उसने कर्नल पीयर्स को 28 अक्तूबर 1824 को भेजी था, उसका सुसंगत अंश निम्न प्रकार है :

आपके विचारार्थ निवेदन है कि मेरे द्वारा कित्तूर के नेताओं को यह आश्वासन दिए जाने से पूर्व कि निश्चित निदेश प्राप्त करने तक उनके लिये या, उनके देश पर हमला करने का हमारा कोई इरादा नहीं है, नदी के पार सेना ले जाने से संभवत: इतना बहुत बड़ा संकट पैदा हो जाएगा कि श्री स्टीवेन्सन और श्री इलियट के प्राणों को खतरा हो जाएगा। तुरन्त इसी समय कित्तूर के वकील से मिलने की संभावना है। इसके बाद ही मैं यह निर्णय कर सकूंगा कि ऐसे अभियान से क्या प्रभाव पड़ना संभव है और मैं आपको इसकी सूचना दूंगा। किन्तु मैं यह सिफारिश करने के लिए निवेदन करता हूं कि आदेश तब तक निलंबित रखा जाए, जब तक मुझे कित्तूर नेताओं को यह बताने का पर्याप्त समय न मिल जाए कि हमारा इरादा, मुम्बई से निदेश आने तक, उन पर हमला करने का नहीं है।

आपका अनुकूल उत्तर पाकर मुझे प्रसन्नता होगी।

तदनुसार, पीयर्स ने मेकलायड को अनुदेश भेज दिया और उसने मलप्रभा नदी पार नहीं की। यह सुझाव देकर श्री ईडन ने सोचा था कि यदि सेना मलप्रभा को पार कर गई और कित्तूर के समीप पहुंच गई तो बागी आतंकित हो जाएंगे और वे प्रतिशोध में कार्यवाही कर सकते हैं और ये ब्रिटिश अधिकारियों; स्टीवेन्सन और ईलियट को जान से मार सकते हैं।

इस बीच, उसी दिन कित्तूर से एक वकील बेलगांव पहुंच गया। ईडन ने उससे विचार-विमर्श किया। श्री वकील ने आग्रह किया कि सेनाएं मुगटखां हुबली के समीप मलप्रभा नदी को पार न करें जो कि कित्तूर के बहुत समीप है। किन्तु वह इस पर राजी हो गया कि वे एणगी पर ऐसा कर सकते हैं,जोकि काफी दूरी पर है। वे वहां ठहर सकते हैं और कित्तूर के नेताओं से बातचीत के परिणाम की प्रतीक्षा कर सकते हैं। श्री ईडन

कित्तूर के शासकों से बातचीत करने के लिए कुछ समय चाहते थे। उसने कित्तूर के वकील से बातचीत के परिणाम के बारे में कर्नल पीयर्स को तुरंत एक और पत्र भेजा। वह पत्र नीचे उद्धृत है—

> उसी शाम को कित्तूर के वकील सिनापा से मेरी मुलाकात हुई और मैं उसे यह समझाने में सफल रहा कि हमारा इरादा तब तक कित्तूर पर हमला करने का नहीं है, जब तक कि मुम्बई से निदेश प्राप्त न हो जाएं। वह इस पर राजी है कि यदि सेना एणगी नदी, जो कि हमारे अपने देश में है पार कर ले और नरेन्द्र से अधिक कित्तूर के समीप अड्डा न जमाए तो उसके मालिक को सेना के हुबली से चलने से पूर्व हमारे पक्के इरादे को संसूचित करने के मेरे आश्वासन में विवक्षित विश्वास हो जाएगा। चूंकि यह प्रार्थना तर्कसंगत प्रतीत होती है अतः मेरा विचार है कि उसे हमारे आश्वासनों को कित्तूर में सूचित करने के लिए कल दोपहर बाद तक का समय दिया जाए। ताकि उन्हें धारवाड़ की तरफ एणगी पर चलने के हमारे इरादे की जानकारी मिल जाए। कित्तूर वकील की प्रार्थना है कि उस संदेश-वाहक को आप एक पास दे दें जो मेरा आश्वासन कित्तूर पहुंचाएगा ताकि हमारा कोई सेना दल उसके मार्ग में रुकावट पैदा न करे। प्रार्थना है कि यथाशीघ्र उत्तर देकर कृतार्थ करें।

तदनुसार, कर्नल पीयर्स सेना को एणगी की तरफ चलाने के लिए राजी हो गए। इसमें लगभग दो दिन लगेंगे। आश्वासन था कि यदि तब तीसरे दिन तक आगे कोई अनुदेश प्राप्त नहीं होते हैं तो सेना एणगी के समीप नदी को पार कर जाएगी और कित्तूर की तरफ बढ़ जाएगी। उसने लिखा था :

> चूंकि लेफ्टिनेन्ट मेकलायड की कमान के अधीन सेना को अपनी वर्तमान स्थिति से एणगी तक पहुंचने में दो दिन लगेंगे और आपकी किसी सूचना को कित्तूर चीफ के पास पहुंचाने के लिए पर्याप्त समय मिल जाएगा अतः आपकी इच्छा पूरी करने के लिए मैं यह निदेश दूंगा कि सैन्य टुकड़ी मलप्रभा के पार नहीं जाएगी अपितु आदेश प्राप्त करने पर ऐसा करने के लिए केवल तैयार रहेगी।

हुबली पर नदी पार करने के लिए लेफ्टिनेन्ट कर्नल मेकलायड को जो अनुदेश दिए गए थे, उनमें यह तब्दीली इसलिए अत्यावश्यक है क्योंकि कर्तव्य भावना मुझे आपकी इच्छाओं को मानने की इजाजत देती है और मेरी प्रार्थना है कि यह साफ-साफ समझ लिया जाए कि हर परिस्थिति में सेना को एणगी पहुंचने से अगले दिन पार करने का निदेश दे दिया जाएगा।

अगले दिन, यानी तारीख 29 अक्तूबर को कर्नल पीयर्स ने चेपलिन को पत्र लिखा और उसे इन गतिविधियों से परिचित कराया। स्थिति की गंभीरता से आयुक्त को अवगत कराने के आशय से उसने स्टीवेन्सन से प्राप्त 26 तारीख के पत्र की प्रतिलिपि भी संलग्न की।

मुम्बई के गवर्नर एल्फिन्सटन को कित्तूर की गतिविधियों के बारे में चैपलिन और दूसरों की मार्फत ज्ञात हो चुका था। 29 अक्तूबर को उस पर तुरंत प्रतिक्रिया हुई और उसने नीचे उद्धृत अपने टिप्पण में इन गतिविधियों के बारे में अपना विनिश्चय अभिलिखित किया और कार्रवाई हेतु आदेश दिए।

महामहिम श्री एल्फिन्स्टन का टिप्पण

गवर्नर, मुम्बई, तारीख 29-10-1824

मुझे विश्वास है कि यह विवरण श्री थैकरे के भाग्य के बारे में अत्युक्तिपूर्ण हो सकता है,जिसकी मृत्यु सार्वजनिक क्षति होगी।

इस गतिविधि के प्राइवेट वृत्तान्त प्राप्त करने के बाद मैंने कल कमांडर-इन-चीफ को सुझाव दिया है कि बेलगांव के सैन्य दल के अतिरिक्त शोलापुर का सैन्यदल बगावत को दबाने की स्थिति में हो जाना चाहिए। मैंने आयुक्त को यह भी सुझाव दिया है कि शेट सनदियों को यह आश्वासन देने के लिए उपाय किए जाएं कि उन्हें बेकब्जा करने का कोई इरादा नहीं है। जिन लिखतों का प्रबंधों ने लाभ उठाया है वे निःसन्देह इस प्रकार के लोगों से तैयार कराई गई हैं। यदि हमें बगावत को दबाने की तुरन्त खबर न मिले तो बहुत सारी सेना भेजने की हर सम्भव व्यवस्था की जाए। कित्तूर जागीदारों की भूमियों के बीचों बीच हैं और कोल्हापुर से या वाडी से दूर नहीं है, और यह उस पर्वतीय क्षेत्र के

निकट है जो कि हमारे और पुर्तगालियों के राज्यक्षेत्र के बीच तक फैला हुआ है। अतः यह एक ऐसी जगह है जहां लम्बा जंगल युद्ध चल सकता है और यदि इसे दबाया नहीं गया तो इसका बढ़ना संभव है।

हमें शीघ्र ही और अधिक पूरी रिपोर्टें मिलेंगी। यदि वे बहुत अनुकूल नहीं हुईं तो दक्षिणी कोंकण की दो बटालियनों को, बागियों को वारी के अधीन वाले क्षेत्र में न घुसने देने के लिए और आगे दक्षिण तथा पूर्व के जंगली क्षेत्र के मुखियाओं को डराने के लिए; बेंगुरला या मलवां के निकट किसी जगह कैम्प में जमा करना समीचीन होगा। मुम्बई से और अधिक सैन्यदल भेजना भी समीचीन हो सकता है ताकि कर्नल पीयर्स के हाथ मजबूत हो जाएं और वह जंगल में अनेक टुकड़ियों से युक्त होकर काम कर सके। प्रत्येक टुकड़ी इतनी शक्तिशाली है कि बागियों को मार भगाना निश्चित है, तथा सबकी सब एक ठोस योजना के अनुसार बराबर बढ़ रही हैं।

इस बीच यह उद्घोषणा प्रकाशित करना उचित होगा कि देसाई परिवार का कोई वंशज न होने के कारण देश का शासन कम्पनी ने संभाल लिया है और दूसरी उद्घोषणा यह कर दी जाए कि पिछले (उपद्रव के नेताओं को छोड़कर) उन सभी लोगों को क्षमा कर दिया गया है जो एक निश्चित दिन तक अन्दर आ जाएंगे और उन लोगों को दण्ड दिया जाएगा जो हथियार नहीं डालेंगे।

मार्शल ला लागू करना भी समीचीन हो सकता है, किन्तु यह उपाय करने की आवश्यकता नहीं है।

इस टिप्पण से यह प्रतीत होता है कि :

श्री एल्फिन्स्टन को डर था कि बगावत फैलेगी और अन्य जागीरदार विद्रोह में भाग लेंगे तथा लड़ाई लम्बी चलेगी।

2. वह सभी जागीरदारों को यह बताना चाहता था कि शिवलिंगरुद्र सर्जा के मरने के बाद अंग्रेजों ने कित्तूर देसगत को उत्तराधिकारीहीन घोषित कर दिया है।

3. उसका पक्का इरादा था कि कित्तूर की बगावत को सेनाओं द्वारा निर्ममता से दबा दिया जाए।

4. तथापि, बागियों को स्थानीय जनता का तथा कित्तूर की लड़ाकू सेना का समर्थन कम करने के लिए उसने, ऊंची राजनयिक चाल के रूप में, उन सबको माफ करने का निश्चय किया था जिन्होंने बगावत में भाग लिया था किन्तु कुछ नेताओं को माफ नहीं किया गया।

वह इस निष्कर्ष पर पहुंचा था कि अंग्रेज अपने सम्मान और प्रतिष्ठा को केवल कित्तूर को अधीनता में करके ही पुनः प्राप्त कर सकते हैं। उसे यह भी यकीन करा दिया गया था कि विद्रोह मुख्यतः श्री थैकरे की जल्दबाजी की कार्रवाई के कारण हुआ था और यह आवेशपूर्ण क्रोधोन्मत कार्य था।

उसी दिन मुख्य सचिव न्यूहम ने चैपलिन को निम्नलिखित पत्र लिखा —जिसमें आगे की कार्रवाई के बारे में गवर्नर के आदेश सम्प्रेषित किये गये थे।

वेलगांव और शोलापुर में स्थित सैन्यदल बगावत को दबाने के लिए उपलब्ध कराया जाए। यह घोषित करते हुए उद्घोषणा जारी की जाए कि देसाई परिवार की समाप्ति के कारण देश का शासन कम्पनी संभाल रही है, और उद्घोषणा की जाए कि देसाई परिवार को छोड़कर बाकी सबको क्षमा कर दिया गया है तथा उद्घोषणा की जाए कि प्रमुख नेताओं के सिवाय सभी को क्षमा कर दिया गया है और उन विद्रोहियों को दण्ड दिया जाएगा जो अंग्रेजों के विरुद्ध हथियार उठाए रखेंगे।

महोदय,

मुझे कित्तूर में हुए गदर के बारे में आपकी डाक इस मास की 27 तारीख को मिली और मैंने उसे सपरिषद् गवर्नर के समक्ष प्रस्तुत कर दिया है।

सपरिषद् गवर्नर आपकी अगली डाक की बड़ी आतुरता से प्रतीक्षा करेंगे और उन्हें हार्दिक आशा है कि अब तक प्राप्त वृतान्त, विशेष रूप से श्री थैकरे के दुर्भाग्य के बारे में, जिनकी मृत्यु से सार्वजनिक क्षति होगी, अत्युक्तिपूर्ण साबित हों।

इस गतिविधि के प्राइवेट वृतान्त के माननीय गवर्नर के पास पहुंचने पर तुरन्त महामहिम कमांडर-इन-चीफ को सुझाव दिया गया कि बेलगांव

के सैन्यदल के अतिरिक्त शोलापुर का सैन्यदल भी गदर को दबाने के लिए उपलब्ध रहना चाहिए। आपको यह भी अधिसूचित किया गया था कि शेट सनदियों को यह आश्वासन देने के लिए उपाय किए जाएं कि उन्हें बेकब्जा करने का इरादा नहीं है। जिन लिखतों का लाभ स्वयं प्रबन्धकों ने उठाया है, वे निःसन्देह लोगों के इसी वर्णन से तैयार की गई है।

यदि सपरिषद् गवर्नर को गदर के दबाये जाने का वृतान्त तुरन्त नहीं मिला तो इस प्रयोजन के लिए बहुत अधिक सेना भेजने के लिए तथा देश में शान्ति स्थापित करने के लिए सभी प्रयत्न किए जायेंगे।

इसी बीच सपरिषद् गवर्नर का विचार है कि एक उद्घोषणा प्रकाशित करना उचित होगा जिसमें घोषित कर दिया जाए कि देसाई परिवार की समाप्ति के कारण देश का शासन कम्पनी द्वारा संभाला जा रहा है और यह भी उद्घोषित कर दिया जाए कि (पिछले उपद्रव के सरदारों को छोड़कर) इन सब को क्षमा कर दिया गया है जो एक निश्चित दिन तक अन्दर आ जाएंगे और उन विद्रोहियों को दण्ड दिया जाएगा जो अंग्रेजों के विरुद्ध हथियार उठाये रहेंगे। मार्शल कानून की उद्घोषणा भी समीचीन हो सकता है किन्तु इस उपाय को पुनः लागू करने की आवश्यकता नहीं है।

इस समय तक 29 तारीख को ईडन ने कित्तूर वकील से बातचीत करने के बाद एक पत्र लिखा और उसमें इन घटनाओं का विवरण तथा स्थिति के बारे में अपना मन्तव्य व्यक्त किया :

> मैं यह सोचने के लिए बाध्य हूं कि जो दुखद घटना कित्तूर में घटी है वह पूर्व परिकल्पित नहीं थी और यदि श्री थैकरे अत्यन्त अपर्याप्त सेना से हमला करने का निदेश न देते तो यह घटना न घटती। जहां तक मैं कित्तूर की वर्तमान अवस्था का मूल्यांकन कर सकता हूं, मैं समझता हूं कि सरदार गुरसिद्दप्पा और शेष लोगों को ज्ञात है कि उन्होंने क्रोधोन्मत उपद्रव किया है और यदि उन्हें सरकार द्वारा वैयक्तिक सुरक्षा का आश्वासन दे दिया जाए तो वे हर बात को मान लेंगे। ऐसा प्रतीत होता है कि उन्हें अपनी अक्षम्य प्रकार की पिछली

हिंसा का तथा विनिश्चित उपायों पर भी, भली प्रकार विश्वास हो गया है। सरकार संभवतः यह मानेगी कि तत्काल विनाश से बचने का उनका एकमात्र सहारा सर्वश्री स्टीवेन्सन और इलियट को अपने कब्जे में रखे रखना है। मुझे डर है कि इन अभागे सज्जनों को अपने प्राण बचाने का एकमात्र अवसर आपके यहां तुरंत उपस्थित होने पर सुलभ होगा क्योंकि हो सकता है आपके यह शर्त रखने पर कि जब तक उन्हें रिहा नहीं किया जायेगा तब तक वे उनसे कोई बातचीत नहीं करेंगे वे उन्हें छोड़ने को तैयार हो जाएं। यद्यपि मेरे विचार में वह बात संदिग्ध है फिर भी मुझे विश्वास है कि आपसे छोटा कोई भी प्राधिकारी अपने बंदियों को रिहा कराने के प्रयत्न करने के लिए बेकार होगा। आपकी सेवा में श्रीनिवास राव का बयान संलग्न है।

इस जगह के अमलदार द्वारा कर्नल पीयर्स को दी गई सूचना के बारे में (जिसके साथ उसका कल का पत्र था), जिसकी प्रतिलिपियां संलग्न हैं, मैं ऐसी सूचना के आधारों के सम्बन्ध में उसकी परीक्षा करने के बाद यह टिप्पणी करने की इजाजत चाहता हूं कि ऐसा प्रतीत होता है कि उसके पास केवल अफवाहें थीं और उसकी सूचना लेश भी विचार योग्य प्रतीत नहीं होती। मैं कल अपने सभी लोगों के साथ लगातार मार्च करने से इतना थका हुआ पहुंचा था कि मुझे अभी तक यह जानकारी प्राप्त करने का समय नहीं मिला है कि जागीरदारों और पटवंधनों में क्या हो रहा है किन्तु मुझे आशा है कि मैं दिन में आपको कुछ प्रामाणिक सूचना दे सकूंगा यद्यपि मैं जानता हूं कि सम्पूर्ण देश में पूरी शान्ति है।

यह मालूम होने पर कि कर्नल पीयर्स का यह पक्का इरादा है कि कित्तूर के किले पर तब तक हमला नहीं किया जाएगा जब तक कि मुम्बई से निदेश प्राप्त नहीं हो जाते, जोकि सर्वश्री स्टीवेन्सन और इलियट की सुरक्षा के विचार के कारण है, मैंने कित्तूर नेताओं को यह सूचित करने का निर्णय किया है कि जब तक ऐसे निदेश प्राप्त नहीं हो जाते तब तक उनके विरुद्ध कोई लड़ाई नहीं छिड़ेगी और मेरी बातचीत की एक प्रतिलिपि आपकी सेवा में संलग्न है। साथ ही मैंने कित्तूर वकील से जो मेरे साथ रहता है, यह जोर देने का यत्न किया है कि उनके मालिक यह न

समझें कि वे हमारे देशवासियों को अपने कब्जे में रखकर सरकार के आक्रोश को शान्त कर सकते हैं और तुरन्त हथियार डालने से तथा सर्वश्री स्टीवेन्सन और इलियट को तुरन्त हमारे कब्जे में सौंपने से ही उनके विरुद्ध हमारा दृष्टिकोण उदार हो सकता है।

मुझे अभी रिपोर्ट मिली है कि 200 अरब सावन्तवादी से कित्तूर की ओर चल पड़े हैं। यह सूचना हमारी पश्चिमी सीमा के एक किलेदार से यहां अमलदार के पास आई थी। किलेदार तो केवल यह कहता है कि उसके गांव में ऐसी खबर फैली हुई है।

मुझे अभी तक विभिन्न जागीरदारों के पास अपने वकीलों में से किसी से भी ऐसी कोई सूचना नहीं मिली है किन्तु ऐसी संभावना है कि उनके अभ्यावेदन धारवाड़ भेज दिए गए हैं और शीघ्र ही मेरे पास पहुंच जाएं।

श्री एल्फिंस्टन से प्राप्त आदेशों और श्री ईडन से प्राप्त रिपोर्ट के आधार पर आयुक्त ने विनिश्चय किया है कि सभी कोनों में यूनिटों को कम करके अपनी लड़ाकू सेना को परिपूरित करने के लिए और अधिक तेज प्रयास किये जायेंगे।

चेपलिन ने मैसूर में ब्रिटिश रेजीडेंट ए० एच० एस० कोल को बुलवाया जोकि पुणे में था और उसे हिदायत दी कि मैसूर से सभी उपलब्ध लड़ाकू सेनाओं और अश्व तोपखाने को जमा किया जाये। कर्नल ने मैसूर में तैनात सेना कमांडर को 30 अक्तूबर 1824 को निम्नलिखित संदेश भेजा :—

> आप देखेंगे कि जब थैकरे की अधिकांश सेना किले के अन्दर फंस गई तो उसके पास उसे बचाने के लिए प्रयत्न करने के सिवाय कोई चारा नहीं था—किन्तु जिस ढंग से उसने प्रयत्न किया था वह पूर्णतः असफल रहा और संलग्न पत्र में आप परिणाम देख लीजिए—कित्तूर दक्षिणी जागीरदारों के बीच में पड़ता है। यह कोल्हापुर से दूर नहीं है। कोल्हापुर का राजा असंतुष्ट है और घाटों के बीच में स्थित यह विक्षुब्ध देश पिछले भाग में है तथा कित्तूर से लगा हुआ पहाड़ियों और जंगल में एक बहुत सुदृढ़ क्षेत्र है जो पुर्तगालियों के राज्य

क्षेत्र में है तथा सोंदा तक चला गया है—दक्षिणी मराठा प्रदेश में हमारे पास बहुत कम सैन्यदल है और यदि इस गदर को तुरन्त नहीं दबाया गया तो यह निश्चय ही फैल जाएगा। प्रार्थना है कि जितने घोड़े राजा दे सकें,उतने घोड़े रानी बेदनूर की तरफ भेज दिये जाएं और यदि आप हरिहर सीमा पर राजा के किसी अन्य सैन्यदल को जमा कर सकें तो इससे विद्रोह को व्यापक रूप धारण करने से रोकने में जोरदार असर पड़ेगा। हम सैन्यदल भेज रहें हैं किन्तु इनकी संख्या बहुत कम है। सभी चीजों के लिए शीघ्र कार्रवाई करना वांछनीय है।

इस बीच ईडन कित्तूर के वकीलों से बातचीत करता रहा। उसने आग्रह किया कि स्टीवेन्सन और इलियट—दो बंदियों को बिना शर्त रिहा किया जाए। कित्तूर के शासक ऐसा करने को तब तक तैयार नहीं थे जब तक कि राज्य की पुन: स्थापना के बारे में कोई निश्चित आश्वासन न दे दिया जाए। आयुक्त ने श्रीनिवास राव को यह यकीन दिलाने का प्रयत्न किया था कि कित्तूर शासकों द्वारा इन बंदियों को अपनी ओर से छोड़े जाने पर ही वे अंग्रेजों की सहानुभूति प्राप्त कर सकेंगे। इस पर कित्तूर के वकील ने चैपलिन को आश्वासन दिया था कि मैं सरदार गुरु-सिद्दप्पा और आवरदी वीरप्पा को मनाने का प्रयत्न करूंगा। वे ऐसी शर्त मानने के लिए तैयार नहीं थे और अपनी बात पर दृढ़ थे। ईडन ने 30 अक्तूबर 1824 को चैपलिन को लिखा था—

मैंने उनके वकील पर इस बात का जोर दिया है कि उनके विरुद्ध सक्रिय उपाय तभी तक के लिए निलंबित किए गए हैं जब तक कि उन्हें सरकार से निदेश नहीं मिल जाते हैं, किन्तु वे इसका यह अर्थ न लगा लें कि सरकार उनके विरुद्ध अत्यन्त सख्त कार्रवाई नहीं करेगी और इस प्रकार के मामले में वे सरकार से नरमी की आशा न रखें; किन्तु साथ ही मैंने यह भी बता दिया है कि सर्वश्री स्टीवेन्सन और इलियट की रिहाई ही एकमात्र ऐसा आधार है जिससे सरकार का दृष्टिकोण नरम हो सकता है। जब मैंने इस बात पर जोर दिया तो वकील का यह विचार प्रतीत हुआ कि गुरुसिद्दप्पा और आवरदी वीरप्पा को दोनों बंदियों को

आपको देने के लिए तैयार किया जा सकता है किन्तु किसी अन्य निचले अधिकारी को देने के लिए नहीं। तब मैंने इसे स्पष्ट किया कि अपने बंदियों को तुरन्त रिहा करके हममें कुछ विश्वास दिखाकर वे सरकार से यह आशा कर सकते हैं कि वह अपना पक्का इरादा करने से पूर्व आपके अनुकूल प्रत्येक परिस्थिति पर विचार करें। किन्तु यदि इसके विपरीत आचरण किया तो सरकार के सामने कोई विकल्प नहीं होगा। इस पर वकील ने उत्तर दिया कि मुझे भली प्रकार ज्ञात है कि इस प्रकार के मामले में आपकी सरकार हमारे आचरण को अनदेखा नहीं कर सकती और वह मेरी बात से सहमत था। उसका विचार था कि सर्वोत्तम यही होगा कि अपने बंदियों को रिहा कर दिया जाए। फिर उसने प्रस्ताव रखा कि मैं कित्तूर जाता हूं और आपके साथ जो मेरी बातचीत हुई है उसका ब्यौरा सरदारों को देता हूं और सर्वश्री स्टीवेन्सन तथा इलियट को छुड़वाने का भरसक प्रयत्न करता हूं क्योंकि उसकी दृढ़ धारणा है कि यही एक ऐसा उपाय है जिससे उनके विरुद्ध सरकार का दृष्टिकोण नरम हो सकता है। मैंने उसके कित्तूर लौटने के लिए अपनी सम्मति दे दी है। आपको इसके परिणाम की सूचना प्राप्त होते ही तुरंत दे दी जायेगी।

स्टीवेन्सन ने अपनी दयनीय अवस्था के बारे में कर्नल पीयर्स को 26 अक्तूबर को जो पत्र लिखा था उसके कारण कर्नल पीयर्स को 30 अक्तूबर को पुनः चैंपलिन को पत्र लिखना पड़ा। इस पत्र से कित्तूर किले की शक्ति के बारे में कर्नल पीयर्स की राय और कित्तूर की लड़ाकू सेना की संख्या के बारे में उसके भय का स्पष्ट संकेत मिलता है। साफ था कि कर्नल पीयर्स को कित्तूर पर हमला करने की जल्दबाजी करने में संकोच था।

पत्र का सुसंगत भाग निम्न प्रकार है :

स्वर्गीय श्री थैकरे द्वारा कित्तूर में अपने आदेशों का पालन कराने के प्रयत्न के दारुण परिणाम से संबंधित मेरे पत्रों के साथ संलग्न कागजों का परिशीलन करने के बाद तथा सर्वश्री इलियट और स्टीवेन्सन की संकटग्रस्त स्थिति पर, जिसका उल्लेख उनके पत्रों में

किया गया है, विचार करने के बाद आपकी वही राय रहेगी या नहीं जो कि उन उपायों के बारे में आपके पत्र में व्यक्त की गई है जो बागियों के विरुद्ध किए जाने चाहिए थे, मुझे इसके बारे में बहुत सन्देह प्रतीत होता है,। किन्तु सभी स्थितियों में दुःखद घटनाओं के कारण ये कदम उठाये हैं जिसे मेरे नियन्त्रणाधीन थोड़ी सी सेना ने करना स्वीकार कर लिया।

कित्तूर के किले के बारे में कहा जाता है कि यह बहुत मजबूत है और इसे तोड़ना पड़ सकता है। इसे तोड़ने के लिए विध्वंसक गाड़ी आवश्यक है। साथ ही उसे चलाने के लिए कुशल तोपखाने के आदमी चाहिए और उसे खींचने वाले पशु चाहिए। इनमें से मेरे पास कुछ भी नहीं है।

इन अधिकारियों की दुर्दशा ब्रिटिश अधिकारियों के लिए चिन्ता का विषय बना रहा। कित्तूर के शासक खामोश थे और वे अपनी अभिरक्षा के अधिकारियों को छोड़ने के लिए तैयार नहीं थे। अंग्रेज़ों ने इसे प्रतिष्ठा का प्रश्न बना लिया और वे कित्तूर के भविष्य के बारे में तब तक कोई आश्वासन देने के लिए तैयार नहीं थे जब तक कि इन अधिकारियों को बिना शर्त न छोड़ दिया जाए। गवर्नर एलफिस्टन स्वभावतः इस गतिरोध से दुःखी थे और वह चैपलिन से इस विषय पर स्वयं चर्चा करना चाहते थे। वह पुणे गए। स्थिति सम्बन्धी अपने विचारों और इस पर अपने निर्णयों के बारे में एलफिस्टन ने 31 अक्तूबर 1824 को जो टिप्पण लिखा था, वह निम्न प्रकार है :

इस जगह आकर महामहिम कमांडर-इन-चीफ और आयुक्त के साथ परामर्श करने के बाद निम्नलिखित बातों को उनकी एवं मेरी अपनी भावनाएं समझा जाए।

मुख्य परिस्थिति जिसका मुझे अपने अंतिम टिप्पण के बाद पता चला है और एकमात्र परिस्थिति जिससे शीघ्र कार्रवाई करने के बारे में, जिसका वहां सुझाव दिया गया था, सन्देह उत्पन्न होता है, यह तथ्य है कि अनेक सिपाहियों और अन्य लोगों के साथ श्री स्टीवेन्सन और श्री इलियट बागियों के कब्जे में बंदी हैं और उन्हें धमकी दी गई है कि यदि

ऐसी कुछ शर्तों का पालन नहीं किया गया जिनके बारे में मेरे समक्ष प्रस्ताव रखा गया कहा गया है, तो उनकी हत्या कर दी जाएगी। विद्रोह भड़कने के बाद कोई प्रस्ताव प्राप्त नहीं हुए हैं। किन्तु यह निश्चित प्रायः प्रतीत होता है कि उन्होंने जो मांगें रखी हैं उनमें से एक संस्थान को पूर्वस्थिति में पुनः स्थापित करना है।

बन्दियों की स्थिति अत्यन्त दुःखद है। श्री स्टीवेन्सन और श्री इलियट की स्थिति तो विशेष रूप से चिंताजनक है और उनके भविष्य की चिन्ता का निराकरण उनके धैर्य ने कर दिया है जो उन्होंने इस संकट में दिखाया है।

किन्तु इन सज्जनों की जीवन रक्षा की सौदेबाजी में हम चाहे कितनी भी रियायत देने के लिए इच्छुक हों फिर भी सार्वजनिक हितों को और भारत में प्रत्येक यूरोपीय की सुरक्षा की दृष्टि से यह आवश्यक है कि हमें इस धारणा को प्रोत्साहन नहीं देना चाहिए कि प्रत्येक हताश साहसी अपने कब्जे में किसी यूरोपीय युद्धबन्दी को रखकर अपने अपराध से दण्डमुक्ति प्राप्त कर ले। इसके विपरीत, मैं यह विश्वास नहीं कर सकता कि अत्याधिक वांछित लक्ष्य प्राप्ति के लिए बागियों की मांगें पूरी करना आवश्यक है। यदि कित्तूर की सम्पूर्ण गैरिसन या सब प्रमुख सरदारों को ही अपनी स्वयं की सुरक्षा के लिए निराश होना पड़ा तो वे अपना प्रतिकार करने के लिए विवश हो सकते है, किन्तु यदि सबको सुरक्षा और क्षमा का वचन दे दिया गया तो मैं यह नहीं सोच सकता कि वे इस प्रस्ताव को इसलिए ठुकरा देंगे कि उन्हें संस्थान की पुनःस्थापना या उनके नेता की दण्डमुक्ति इन्कार कर दी गई है जब उन्हें यह यकीन हो जाए कि उनके किसी प्रयत्न या बलिदान से ये रियायतें प्राप्त नहीं की जा सकतीं।

अतः यह अभिनिश्चित करना ही शेष है कि हम उन लोगों को किस सीमा तक दंडमुक्ति का वचन दे सकते हैं या साधारण लाभ दे सकते हैं जो हमारी कमजोरी प्रकट किये बिना ये। भविष्य में ऐसे ही उपद्रवों को प्रोत्साहित किए बिना अपने काम पर लौट आएंगे। कित्तूर के लोगों की क्रान्ति चाहे कितनी भी अपराधिक हो फिर भी यह अकस्मात आवेग

के कारण हुई लगती है और विश्वासघात की आशंका से सर्वथा मुक्त प्रतीत होती है। जहां तक हमें पता चल सका है, यह सर्वथा अपर्याप्त साधनों से युक्त एक अप्रिय कार्य करने की उस सज्जन की अतीव उत्सुकता का परिणाम था जिसकी मृत्यु अशान्ति का सबसे बड़ा अंश है। हो सकता है कि इसे चन्नुवर के असर से बढ़ावा मिला है किन्तु इसे कार्यरूप गुरुसिद्दप्पा के आदेशों और प्रेरणा से ही दिया जा सका। ऐसा प्रतीत होता है कि उस सरदार ने सारे उपक्रम का संचालन अपने हाथ में ले लिया था और उसने इसका उपयोग अपने वैयक्तिक शत्रुओं से बदला लेने की इच्छा पूरी करने के लिए किया था। वह भी अभी तक बागियों का एक कृतसंकल्प सरदार प्रतीत होता है, यद्यपि वह स्वर्गीय देसाई की सौतेली मां चेन्नम्मा के नाम का उपयोग करता है। अतः इस समस्त कार्य का उत्तरदायित्व गुरुसिद्दप्पा पर डाला जाना चाहिए। यद्यपि चेन्नम्मा भी उतनी ही दोषी है (जिसका कोई सबूत नहीं है) फिर भी उनके स्तर की स्त्री को दण्ड देना हमारी सरकार की आम परिपाटी से असंगत अत्यन्त अप्रिय होगा। अतः उनके विरुद्ध जो आशंकाएं हैं उन पर ध्यान नहीं दिया जाना चाहिए। अन्य सभी बागियों के लिए अशर्त क्षमा का प्रस्ताव रखा जाना चाहिए और उन्हें वही फायदे दिये जाने चाहिये जो उन्हें प्राप्त होते यदि यह विप्लव न होता, किन्तु दोषी सरदारों को यह रियायत नहीं दी जाएगी। उनके साथ परिकल्पित अनुग्रह से कम अनुग्रहपूर्वक व्यवहार किया जाना चाहिए।

इस योजना के अनुसरण में मैं सिफारिश करूंगा कि अविलम्ब एक उद्घोषणा प्रकाशित की जाए जिसमें यह बताया जाए कि चूंकि कित्तूर के देसाई निःसन्तान मरे हैं और उनके प्रमुख नौकरों ने उनकी मृत्यु के बाद मिथ्या दत्तकग्रहण स्थापित करके उसके नाम का जाली प्रयोग किया है और कपटपूर्ण साधनों से उनके खजाने पर कब्जा कर लिया है, अतः उसकी भूमि और चीजों का भार ग्रहण करना श्री थैकरे के लिए आवश्यक हो गया था और सरकार का आशय था कि यदि संस्थान संस्थापक का कोई वंशज मिल जाए तो उसके पक्ष में फिर से नया अनुदान कर दिया जाए और यदि कोई वंशज न मिले तो सरकार का इरादा था कि भूमि

तो ले ली जाए, किन्तु विधवा और प्रमुख नौकरों के लिए प्रचुर व्यवस्था कर दी जाए तथा सभी शेट सनदियों को जारी रखा जाए जैसा कि कम्पनी शासित शेष देश में किया गया है। देसाई की निजी सम्पत्ति, धन-दौलत आदि हर स्थिति में उनकी विधवा के पास ही रहने दी जाए। बहरहाल, अन्वेषण के दौरान पता चला है कि गुरुसिद्दप्पा ने ही श्री थैकरे के लिए द्वार बन्द करने के लिए उकसाया था। द्वार खोलने के लिए बाध्य करने का प्रयत्न करते समय उन पर गोली चला दी गई। उनके साथ जो 150 सिपाही और गोलंदाज थे उनको घेर लिया गया और तोपें छीन ली गईं।

यह सोचकर कि कित्तूर के जिन लोगों को स्वयं अपने देसाई के ही शासन में रखा गया था और कित्तूर को एक पृथक संस्थान मानने की शिक्षा दी गई थी, हो सकता है उन्हें पूरी तरह यह ज्ञात न हो कि ब्रिटिश सरकार के प्रति उनकी कितनी राजनिष्ठा है। उन्हें स्वर्गीय देसाई के प्रधान अधिकारी ने भड़काया था और सरकार के सैन्यदल के प्रति उनके विरोध में पूर्वविचार एवं विश्वासघात का तत्व नहीं था; सपरिषद् गवर्नर इन सभी भटके हुए लोगों को पूरी तरह क्षमा करते है बशर्ते कि वे सरकार की आज्ञा का पालन करना स्वीकार कर लें। एकमात्र गुरुसिद्दप्पा को ही इस क्षमादान से वंचित रखा गया है। किन्तु उसे भी मृत्यु दण्ड से उन्मुक्ति दी गई है बशर्ते कि वह तुरन्त हथियार डाल दे और अपने आपको सरकार के हवाले कर दे।

अगले 20 नवम्बर से पहले जितने बागी समर्पण कर देंगे वे अपने इनामों और वेतनों को रखे रहेंगे तथा सभी शेट सनदी उसी स्तर पर बने रहेंगे। उन प्रमुख नौकरों के, जिन्होंने विद्रोह में प्रमुख भाग नहीं लिया होगा, पालन-पोषण की कुछ व्यवस्था करने की मांगों पर विचार किया जाएगा। स्वर्गीय देसाई की विधवा को उचित भत्ता दिया जायेगा और परिवार की अन्य स्त्रियों के लिए ऐसी व्यवस्था की जाएगी जैसी सरकार जांच के बाद उचित समझे।

स्वर्गीय देसाई की निजी सम्पत्ति और खजाने को अब भी उनकी विधवा की सम्पत्ति और खजाना समझा जाएगा और उसका जो भाग

बचा है वह उसे वापस दे दिया जाएगा।

कित्तूर के सभी सरदार और सिपाही इन दो सज्जनों और अन्य बन्दियों की सुरक्षा के लिए जिम्मेदार होंगे। यदि उन्हें कोई चोट आई तो सरदारों और सभी दोषी व्यक्तियों को इतना कठोर दण्ड दिया जायेगा कि भावी अपराधी भी आतंकित हो जाएंगे।

कर्नल पीयर्स को हिदायत दे दी जाए कि उद्घोषणा घुमाई जाए और उसके सिद्धांतों के अनुसार कार्रवाई की जाए। आयुक्त द्वारा जागीरदारों और कोल्हापुर के राजा को पत्र भेजा जाए और जो कुछ हुआ है उससे उन्हें अवगत कराया जाए तथा उन्हें चेतावनी दी जाए कि वे अपने आश्रितों को बागियों में शामिल न होने दें। ऐसी ही सूचना श्री डनलप की मारफत वारी को भेजी जाए। आयुक्त के पत्र की एक मराठी की प्रति उस सज्जन के द्वारा अंगीकरण के लिए उसके पास भेजी जाए।

श्री चैपलिन के पहुंचने तक बागियों के साथ सभी सम्पर्कों और कित्तूर देश से संबंधित इन्तजाम कर्नल पीयर्स पर छोड़ दिए जाएं किन्तु तब तक वह कोई जोखिम का काम न करें।

श्री चैपलिन संभवत: 15 या 20 तारीख तक बेलगांव आ जाएंगे और यदि तब तक समर्पण नहीं किया जाता है तो कर्नल पीयर्स को निदेश दे दिया जाए कि वह कित्तूर से गैरिसन को भागने न देने का और विशेष रूप से उन्हें जंगलों में जाने से रोकने के लिए भरसक प्रयत्न करें। उचित होगा कि वह तब तक अपना आक्रमण निलंबित रखे जब तक कि समस्त सेना एकत्र नहीं हो जाती है भले ही पन्द्रह दिन का विलम्ब हो जाए, क्योंकि ऐसी सेना की सहायता से लड़ाई आरम्भ करना ठीक नहीं रहेगा जो जगह लेने के लिए तो पर्याप्त है किन्तु भगोड़ों को रोकने के लिए पर्याप्त नहीं है।

इस अवसर के लिए जो सैनिक इन्तजाम कमांडर-इन-चीफ आवश्यक समझते हैं मैं उनसे सहमत हूं। ये सैनिक इन्तजाम उनके एक साथ एकत्रित होने की सम्भव तारीख सहित आगे दर्शायी गयी सारणी में दिए गये हैं—

कोर	प्रस्थान स्थान	आगमन स्थान	पहुंचने की तारीख
छठी नेटिव इन्फैन्टरी	सतारा	बेलगांव	24 नवम्बर
होर्स आर्टिलरी	पूना	बेलगांव	24 नवम्बर
सातवीं मि० लाइट केवलरी	शोलापुर	बेलगांव	11 नवम्बर
23वीं० एम० एन० आई०			
50 तोपखाने के जवान	मुम्बई	वेंगुरला	--
प्रथम यूरोपीय			
रेजिमेंट 3 नेटिव इनफैन्टरी			
1 कम्पनी या तोपखाना			
2 कम्पनियां, हिजमजेस्टी			
छयालीसवीं रेजिमेंट			
प्रथम रेजिमेंट, नेटिव इन्फैन्टरी	बैलारी	बेलगांव	—

यदि मुम्बई में प्राप्त विवरणियों से यह प्रतीत हो कि बेलगांव में आर्डनेंस और स्टोर की कमी है तो उन्हें प्रेजिडेंसी से सप्लाई की जाए।

वाहन एकत्र करने के लिए अपेक्षित समय सम्बन्धी अनिश्चितता के कारण बैलारी और मुम्बई से सैन्यदल पहुंचने के लिए तारीखें नियत नहीं की जा सकतीं। किन्तु इस मास की 25 तारीख को कर्नल पीयर्स द्वारा सप्लाई की जाए और चूंकि दूसरे हल्के चलेंगे इसलिए यह सम्भावना है कि ये दोनों नवम्बर के अन्त तक बेलगांव पहुंच जाएंगे।

चूंकि समय का महत्व बहुत अधिक है अतः मैंने आयुक्त से ऊपर वर्णित उपाय करने की प्रार्थना की और महामहिम कमांडर-इन-चीफ ने सम्बन्धित सैनिक इन्तजाम करने के लिए आवश्यक आदेश जारी कर दिए हैं।

कर्नल केनेडी को भी निदेश दे दिए गए हैं कि वह अपनी दो रेजिमेंट अपने जिले के दक्षिण में किसी जगह शिविर में जमा करे जहां उसे उस स्थिति में तैयार किया जा सके जब बागी वारी प्रदेश में या पड़ोस के किसी जंगल में शरण लेने का प्रयत्न करें।

सर्वोच्च सरकार द्वारा अपेक्षित सम्राट की दो रेजिमेंटों की अनुपस्थिति से, तीन देशी रेजिमेंटों को मऊ और असीरगढ़ भेजने से तथा शोलापुर के लिए दक्षिणी मराठा प्रदेश से ली गई दो रेजिमेंटों को प्रतिस्थापित करने में मद्रास सरकार की असमर्थता के फलस्वरूप देश के इस भाग में सैन्यदल की कमी से बड़ी मुसीबत पैदा हो गयी है।

सभंवत: शोलापुर में छोड़ी गई बटालियन को अविलम्ब सतारा रवाना करना आवश्यक होगा। इस स्थान पर हर हालत में दो से कम बटालियन नहीं रहनी चाहिए।

यदि प्रस्थापित शर्तों पर बागी समर्पण करने के लिए तैयार न हों तो मुम्बई से एक देशी रेजिमेंट दक्षिण भेजी जाए और उसके स्थान पर पुर्तगाली सेना को बुलाकर सप्लाई की जाए।

श्री थैकरे की मृत्यु की सूचना वैसी ही गहरी चिन्ता व्यक्त करते हुए मद्रास सरकार को भेजी जाए जैसी सपरिषद् गवर्नर ने उस महानुभाव की मृत्यु की सूचना में की थी। वह ऐसी प्रखर बुद्धि और विख्यात जन-उत्साही थे कि उनकी मृत्यु से उनकी प्रेजिडेंसी को एवं उस प्रेजिडेंसी को जिसे उनकी अत्यन्त मूल्यवान सेवाओं का लम्बे समय तक लाभ मिला है, भारी दुर्भाग्यपूर्ण क्षति हुई है।

मुम्बई लौटने के तुरन्त बाद शीघ्र ही गवर्नर ने कमांडर-इन-चीफ अलेक्जेंडर कैम्पबेल को अनुदेश जारी किए कि कर्नल पीयर्स को जितनी, भी सेना की आवश्यकता हो उतनी सेना भेजी जाए और सेना की यूनिटों, रेजिमेंटों और दलों को कित्तूर भेजने के बारे में बेलारी, गूटी, बंगलौर और अरकाट को भी सन्देश भेजे जाएं। उन्होंने मैसूर में ब्रिटिश रेजिडेंट कोल से यह कहने के लिए मुख्य सचिव को भी यह सन्देश भेजा कि मैसूर सेना के लगभग 1,000 सिलेदार घोड़े कित्तूर की तरफ चलने के लिए भेज दिए जाएं। हैदराबाद में ब्रिटिश रेजिडेंट से नवम्बर के प्रथम सप्ताह में एक दल भेजने के लिए कहा गया। पत्र मद्रास को मालाबार और कनारा में कमांडर लेफ्टिनेंट कर्नल वाघ को भी भेजे गए कि सेना का एक दल होनावर और सदाशिवगड़ भेज दिया जाए ताकि इस सेना को दक्षिणी क्षेत्र से कित्तूर भेजा जा सके। ये इन्तजाम मंगलौर

के प्रधान कलक्टर श्री टी० वेबिंगटन के माध्यम से किए गए थे।

रानी चेन्नम्मा और उनके अनुयायी तब तक यह समझने लगे थे कि अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ने के उनके प्रयत्न निरर्थक हैं। किन्तु वे अपने सिद्धान्तों पर डटे रहे और वे सर्वोच्च प्राधिकारियों से कुछ आश्वासन लिए बिना उनके अधिकारियों को उनके हवाले करने को तैयार नहीं थे। एल्फिन्स्टन से उत्तर प्राप्त करने के बाद रानी चेन्नम्मा ने 4 नवम्बर को अपने वकील श्री गोविन्द श्रीनिवास को धारवाड़ के कार्यवाहक कलक्टर मुनरो के पास व्यक्तिगत रूप से मामला समझाने के लिए भेजा। रानी चेन्नम्मा ने अगले दिन सद्भावना के प्रतीक स्वरूप चालीस यूरोपीय सैनिक कार्मिकों को रिहा कर दिया जिन्हें कित्तूर के पिछले युद्ध के दौरान जेल में डाल दिया गया था। सिपाही धारवाड़ जाकर फिर से लेफ्टिनेंट कर्नल मेकलायड की टुकड़ी में शामिल हो गए जहां वह उस समय तैनात थी। मुनरो ने 7 नवम्बर को चैपलिन को पत्र लिखा और उन्हें स्टीवेन्सन तथा इलियट की दयनीय अवस्था से अवगत कराया एवं उनसे प्रार्थना की कि विवेक से काम लें और जल्दबाजी न करें।

इसी बीच, चैपलिन ने ईडन को हिदायत दे दी कि यथासम्भव अधिक से अधिक देसाइयों या उनके प्रतिनिधियों को बुलवाया जाए और कित्तूर की बगावत को कुचलने के लिए उनकी मदद मांगी जाए। उन्होंने मुनरो को भी हिदायत दे दी कि कित्तूर के नेताओं को बुलवाकर उन्हें समर्पण के लिए मनाया जाये।

मुनरो ने रानी चेन्नम्मा के पत्र का निम्नलिखित उत्तर 7 नवम्बर को दिया जिसमें उन्हें यह समझाने का प्रयत्न किया गया था कि दो अधिकारियों को छोड़ने में ही बुद्धिमत्ता है।

आपका पत्र मिल गया है और इसका तात्पर्य समझ लिया गया है। आपने उल्लेख किया है कि आप मनमुटाव करना नहीं चाहतीं, किन्तु दो महानुभावों को अपने किले में कैद रखने का दोष प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। इन सज्जनों को नजरबन्द (परिरोध) रखे रखने से मुझे कोई लाभ होता दिखाई नहीं देता। किन्तु इस घटना से सरकार के प्रति

असम्मान प्रकट होता है। वे सज्जन कित्तूर की भूतपूर्व घटना की प्रकृति से पूरी तरह परिचित हैं। यदि उन्हें छोड़ दिया जाए तो इसकी जानकारी सरकार को भी मिल सकती है। हो सकता है वे आपके पक्ष में वकालत करें। अतः उनकी रिहाई ही एकमात्र ऐसा साधन प्रतीत होता है जिसके द्वारा आप सरकार से उदारता का आशा रख सकती हैं।

अतः मेरी प्रार्थना है कि उन महानुभावों को यहां भेज दीजिए और आपके कारबारी सरकार की जानकारी के लिए कित्तूर की गतिविधियों और आपकी इच्छाएं बताने के लिए मुझसे मिलें। कारोबार सबसे महत्वपूर्ण है और यह ऐसे व्यक्तियों द्वारा तय नहीं किया जा सकता जिन्हें बहुत कम प्राधिकार है या बिल्कुल भी प्राधिकार नहीं है। आप अपने तीन या चार कारबारियों को भेज दीजिए, जिनसे मैं वस्तुस्थिति का पता लगा सकूं। यदि उनके हस्तक्षेप से मामला नहीं सुलझा तो वे निर्विघ्न वापस भेज दिए जाएंगे। वे सुरक्षित रूप से जागीर के पास भेज दिए जाएंगे। बहरहाल, आप इससे परिचित हैं। इससे अधिक और क्या कहूं।

रानी चेन्नम्मा और रानी वीरव्वा ने 12 नवम्बर 1824 को उत्तर भेजा। यह पत्र ऐसे पत्रों का सुन्दरतम नमूना है और उनके अदम्य साहस तथा आत्मसम्मान का द्योतक है। किन्तु साथ ही इस पत्र में कूटनीतिक सौहार्द और विनम्रता का अभाव नहीं है। इसका कामचलाऊ अनुवाद इस प्रकार है :—

आपका पत्र मिला। तात्पर्य ज्ञात हुआ। आपने लिखा है कि आप को इन महानुभावों को वन्दियों के रूप में निरुद्ध रखने से हमारे लिए कोई लाभ होता दिखाई नहीं पड़ता और इस परिस्थिति से सरकार के प्रति वैर-भाव ही प्रकट होता है। इसके लिए हमारा उत्तर है कि इन दो महानुभावों को कारावास में रखना संस्थान के लिए उपयोगी है। उनके माध्यम से और सरकार से उनके बयान से हम चाहते हैं कि संस्थान को प्राचीन परम्परा के अनुसार जारी रखने की व्यवस्था की जाए। इसी आशा में उन्हें रोक रखा है। इन दयालु महानुभावों को मामले की सारी परिस्थितियां ज्ञात हैं। श्री थैकरे ने इन्हें संस्थान के

कार्यों का संचालन करने के प्राधिकार सहित अपने एजेन्ट के रूप में नियुक्त किया था।

महानुभावों के कारावास से सरकार के प्रति असम्मान प्रकट होने के बारे में आपने जो कुछ कहा है उसके उत्तर में हमारा कहना है कि हमने ऐसा कभी नहीं चाहा, अन्यथा हम ब्रिटिश सरकार के साथ इतनी लम्बी मित्रता नहीं निभा पाते। सुलह करने की खातिर हमने अब तक पूर्णरूपेण साहब (श्री थैकरे) की इच्छानुसार आचरण किया। किन्तु इस पर भी उन्होंने हमें इस स्थिति में पहुंचा दिया। इसका हमारे पास क्या इलाज है?

आपके इस अनुरोध के उत्तर में कि मामले को ठीक करने के लिए तथा सरकार को रिपोर्ट देने के लिए कुछ कारबारी आप से मिलने चाहिए, हमारा कहना है कि ये सब मामले आपको ही तय करने चाहिए। हमने पत्र द्वारा आपको सारी परिस्थितियों से अवगत करा दिया है। यदि हमारे कारबारी आपके पास जाते हैं तो हमें उनकी सुरक्षा के बारे में कोई सन्देह नहीं है। जब आप यह सूचित करते हुए पत्र भेज देंगे कि संस्थान हमारे पास यथापूर्व बना रहेगा, तो कारबारी आपकी सेवा में हाजिर हो जाएंगे। आप संस्थान के प्रति अपनी पुरानी शुभ कामना जारी रखें। हम इससे अधिक और क्या लिखें? आपने इस स्थिति में फंसा दिया है। आप सरकार से वही निवेदन करेंगे जो कुछ संस्थान के लिए लाभप्रद होगा, ऐसी हमें आशा है। इस दृष्टि से हमें कोई शंका नहीं है। अन्य बातें गोविन्द श्रीनिवास स्वयं आकर बताएंगे।

तारीख 14 नवम्बर 1824 को कार्यवाहक कलक्टर मुनरो ने यह पत्र, अपने पत्र में निम्नलिखित टिप्पणियों के साथ, चैपलिन के पास भेज दिया।

पत्र में प्रदर्शित मनोवृत्ति पर मुझे खेद है। किन्तु फिर भी मुझे आशा है कि सेना के कित्तूर पहुंचते ही प्रबन्धकों का क्रोध ठंडा पड़ जाएगा। संलग्न पत्र में भूतपूर्व दुर्भाग्यपूर्ण घटना में सरदारों की भावनाओं का उल्लेख किया गया है। इनसे हम एकदम आज्ञापालन की आशा नहीं कर सकते। उन्हें ज्ञात होगा कि सरकार इस बात को नहीं

भुला देगी जिसके कारण उसे चार महत्वपूर्ण अधिकारियों की सेवाओं से हाथ धोना पड़ा है। कारकुन से मेरी कोई बात नहीं हुई। उसका कहना है कि जो कुछ मैं बता सकता हूं वह सब पत्र में ही है, और न ही मैंने उस पत्र का उत्तर दिया है जिसे वह लाया था। इससे यह सिद्ध होता है कि तब तक बातचीत करना व्यर्थ है जब तक कि हमें प्रबन्धकों की तरफ से और अधिक परिवादों को निपटाने के साधन सुलभ नहीं हो जाते।

इस पत्र से चैपलिन बहुत अप्रसन्न हुआ। वह स्वयं मुम्बई गया और उसने गवर्नर एल्फिन्स्टन से विचार-विमर्श किया। गवर्नर ने उसे सलाह दी कि बेलगांव जाइए और निकट से स्थिति का अध्ययन कीजिए तथा बागियों को दबाने के लिए जो भी कार्रवाई आवश्यक हो उसे कीजिए। वे दोनों इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि ज्यों ही ब्रिटिश सेनाएं पूरी तरह से सुसज्जित और तैयार हो जाएं त्यों कित्तूर को घेर लिया जाए, और इसी बीच दक्षिण के जागीरदारों तथा देसाइयों को यह अधिसूचित कर दिया जाए कि कित्तूर देसगत को अन्तिम रूप से ब्रिटिश राज्य क्षेत्र में मिला लिया गया है क्योंकि इस राज्य का कोई कानूनी वारिस नहीं है। पूर्व विनिश्चय के अनुसार चैपलिन को हिदायत दी गई कि सरदार गुरुसिद्दप्पा को छोड़कर सभी बागियों के क्षमादान की उद्घोषणा जारी कर दी जाए।

इन विनिश्चयों के अनुसरण में, चारों तरफ से कित्तूर की ओर सेनाएं भेजना आवश्यक था। तारीख 17 नवम्बर 1824 को चैपलिन रास्ते में अधीनस्थ जागीरदारों से और अधिक सैन्यदल एकत्र करने के आशय से मुम्बई और पुणे में उपलब्ध ब्रिटिश सैन्य दल के साथ मुम्बई से बेलगांव के लिए रवाना हो गया।

रानी चेन्नम्मा के आदमियों को नवम्बर के तीसरे सप्ताह तक यह पता चल गया था कि ब्रिटिश फौजें आगे बढ़ रही हैं। उन्होंने सुन लिया था कि एक विध्वंसक गाड़ी कित्तूर किले को उड़ाने के लिए वेंगुरला से चल रही है। निराशा का वातावरण छाता जा रहा था और उन्होंने भी क्रोधोन्मत होकर कित्तूर की रक्षा के लिए अधिकाधिक सेना जुटाने

के प्रयत्न प्रारंभ कर दिए।

उस समय कोल्हापुर का राजा कित्तूर की रानी की मदद करने की सोच रहा था। वह राजा बहुत दूरदर्शी था। वह उस समय चैंपलिन से नहीं मिला जब चैंपलिन मुम्बई से बेलगांव जाते हुए कोल्हापुर के निकट से गुजरा था। राजा ने कहलवा दिया कि वह बीमार है। किन्तु उसने आयुक्त से मिलने के लिए और उसकी सेवा के लिए अपने अधिकारी भेज दिये। उसका असली कारण तो यह था कि वह चैंपलिन से मिलने के बहाने बाद के प्रक्रम पर, अपनी सेना सहित यथा-समय कित्तूर के समीप पहुंच जाना चाहता था जिससे कि यदि परिस्थिति उसके अनुकूल हो गई तो वह अचानक कित्तूर विद्रोहियों में शामिल हो जाए, और अंग्रेजों को परास्त कर सके। ज्यों ही चैंपलिन कोल्हापुर से रवाना हुआ, त्यों ही राजा 5000 पैदल सेना, 1000 अश्वसेना और 7 तोपें लेकर चल पड़ा और उसने यमकणमरड़ी के समीप डेरा डाल दिया। वहां से राजा ने चैंपलिन के पास सन्देश भेजा कि मैं आप से मिलने आ रहा हूं। किन्तु चैंपलिन इतना तीक्ष्ण बुद्धि था कि वह राजा के धोखे में नहीं आया। उसने तुरन्त उत्तर दिया कि मेरे पास आप से मिलने के लिए समय नहीं है और आपको आने की आवश्यकता नहीं है। इसके बावजूद राजा अपनी सेना के साथ मनोली की तरफ चल पड़े और वहां डेरा डालकर आगे की गतिविधियों की प्रतीक्षा करने लगे।

चैंपलिन कुछ स्थानों पर ठहरा और उसने दक्षिण के मुखियाओं को बुलवाया जो अंग्रेजों के निष्ठावान थे, उनकी सेना की यूनिटें एकत्र कीं और बेलगांव की तरफ चल पड़ा। ये मुखिया थे—सांगली का पटवर्धन, जमखण्डी का मुखिया, मुधोल का मुखिया और अन्य। वह 22 नवम्बर को बेलगांव पहुंचा।

उस समय तक गवर्नर एल्फिन्स्टन ने चैंपलिन को यह शक्ति देने का विनिश्चय कर लिया था कि वह बागियों को क्षमादान की उद्घोषणा के प्रारूप में यथा आवश्यक परिवर्तन कर सकते हैं। उन्होंने चैंपलिन को उस दशा में मार्शल ला की घोषणा करने के लिए भी प्राधिकृत कर दिया था यदि परिस्थितियों की ऐसी मांग हो। सचिव

न्यूहम द्वारा चैंपलिन को भेजा गया 22 नवम्बर का पत्र, जिसके द्वारा गवर्नर के आदेश **संप्रेषित** किए गए थे, निम्न प्रकार है :

इस समय कित्तूर सम्बन्धी सभी मामलों पर आपके कार्यकरण को विनियमित करने वाले नियम माननीय गवर्नर के नोट में समाविष्ट हैं। इनका उल्लेख करते हुए मुझे आपको यह बताने का निदेश हुआ है कि जैसे जैसे आपको बागियों के वास्तविक आचरण के बारे में अधिकाधिक जानकारी मिलेगी, हो सकता है आप बागियों को मंजूर करने वाली शर्तों में कुछ फेरबदल करना चाहें अतः परिषद् गवर्नर आपको किए जाने वाले उपायों में ऐसे परिवर्तन करने के लिए प्राधिकृत करते हैं जैसे आप समीचीन समझें किन्तु आपको इस नोट की भावना के अनुरूप ही कार्रवाई करनी होगी।

परिषद् गवर्नर द्वारा आपको सशक्त करते हैं कि जब कभी आप परिस्थितियों के कारण आवश्यक समझें तो आप दक्षिणी मराठा प्रदेश में मार्शल ला की घोषणा कर सकते हैं। आपकी सूचना के लिए और इस बाबत मार्गदर्शन के लिए उन्होंने मुझे रेगुलेशन ए० डी० 1820 की एक प्रति आपको भेजने के लिए निदेश दिया है। यह रेगुलेशन इस शासन के अधीन पुराने राज्य क्षेत्रों के बारे में लागू होता है।

इन बातचीतों के चलते रहने के बावजूद अंग्रेजों ने युद्ध की तैयारी में ढील नहीं आने दी, यद्यपि गुप्त रूप से यही समझा जाता था कि हमले बन्द कर दिए जाएं। कर्नल मेकलायड के अधीन ब्रिटिश सैन्यदल धारवाड़ से चलकर ताडकोड पहुंचा और उसने वहां डेरा डाल दिया। ताडकोड कित्तूर से लगभग 7 मील पूर्व में एक गांव था। कर्नल फ्रेड पीयर्स को यह ज्ञात हो गया था कि कित्तूर का किला बहुत मजबूत है, उसने महसूस किया कि इसे तोड़ने के लिए विध्वंसक गाड़ी की आवश्यकता होगी। अतः उसने मद्रास रेजिमेन्ट के कर्नल सीलि को, जो विध्वंसक गाड़ी का भारसाधक था, आदेश दिया कि गाड़ी को कित्तूर भेजने की व्यवस्था की जाए। कर्नल पीयर्स सख्त बीमार पड़ गया। उसके स्थान पर कर्नल डैकन को रखा गया जो शोलापुर में तैनात था।

कर्नल सीलि 24 तारीख को बेलगांव आया और विध्वंसक गाड़ी को पश्चिमी घाटों के पार कित्तूर तक खींचने के लिए माल खींचने वाले— पर्याप्त बैल लेकर उसी दिन वापस लौट गया। चैपलिन का डेरा बेलगांव में था। उसने 24 नवम्बर 1824 के अपने पत्र में न्यूहम को इन गतिविधियों की रिपोर्ट भेजी :

"आपकी सेवा में कल पत्र भेजने के बाद मुझे कित्तूर से रिपोर्ट मिली है, जिसे प्रामाणिक मानने का मेरे पास कारण है। खबर है कि तीन टुकड़ियां किले से बाहर भेज दी गई हैं और अनुमान है कि एक टुकड़ी में 1,000 आदमी हैं। बताया गया है कि इसका उद्देश्य रास्ते में मिलने वाले हमारे लोगों को रोकना और ध्वस्त करना तथा प्रदेश को तंग करना है। किन्तु मुझे विश्वास है कि यह सूचना निराधार साबित हो सकती है।

2. कर्नल सीलि की टुकड़ी यहां आज सुबह वेंगुरला से पहुंच गई है। मुझे आशा है कि उनके साथ आए पशुओं की सहायता से विध्वंसक गाड़ी को दो पारी में कित्तूर की तरफ बढ़ाने में अब कोई विलम्ब नहीं होगा। दो पारी में तभी, जब माल खींचने वाले पर्याप्त बैलों की कमी के कारण एक पारी में ले जाना असम्भव हो। जब मुझे उस निश्चित समय का पक्का पता चल जाएगा, कि हमें पूरे जोश के साथ बागियों के विरुद्ध कार्रवाई, यदि आवश्यक हो, कब कर देनी चाहिए, तो मैं माननीय गवर्नर के नोट में निदेशित उद्घोषणा जारी करने में और विलम्ब नहीं करूंगा।

3. पिछले 4 दिनों के दौरान श्री स्टीवेन्सन और श्री इलियट के परिरोध (नजरबन्दी) को इस बहाने से और अधिक कड़ा कर दिया गया है कि कर्नल मेकलायड की सेना द्वारा ताडकोड में ऐसी स्थिति ले लेने के परिणामस्वरूप यह कड़ाई करना आवश्यक हो गया है। ताडकोड कित्तूर से लगभग छह मील पूर्व में स्थित हमारा गांव है।

4. रिपोर्ट मिली है कि कित्तूर से मेरे पास एक वकील आने वाला है। यह अफवाह 20 तारीख से फैल रही है जब कि अभी तक कोई नहीं पहुंचा।"

योजना के अनुसार 25 नवम्बर 1824 तक प्राय: समस्त ब्रिटिश सैन्यदल पहुंच गया और उनकी तैयारियां पूर्ण दिखाई देने लगीं। मद्रास रेजिमेन्ट के लैफ्टिनेन्ट कर्नल वाकर को खानापुर में सैनिक टुकड़ी की कमान संभालने के लिए खानापुर में तैनात कर दिया गया। खानापुर अंग्रेजों के कब्जे में था। मेजर ट्रमंसन बेलगांव में तैनात यूनिट का कमांडर था। अंग्रेजों की युद्ध नीति में तीनों दिशाओं से त्रिकोणीय रूप से आगे बढ़ना प्रकल्पित था—उत्तर से बेलगांव से, दक्षिणपूर्व से ताडकोड के रास्ते धारवाड़ से (कर्नल मेकलायड की कमान के अधीन जो सेना कित्तूर से केवल 10 कि० मी० दूर तोडकोड में पहले से स्थित थी), और पश्चिम से खानापुर से। सेनाएं कित्तूर पर साथ-साथ चढ़ाई करने वाली थीं और उसे तीनों दिशाओं से घेरनेवाली थीं। बेलगांव में हेडक्वार्टर्स फील्ड फोर्स दोआब के सहायक क्वार्टर मास्टर जनरल श्री आई-आई-ओ० डूनो ने सेनाओं के आगे बढ़ने सम्बन्धी विस्तृत अनुदेश निम्न प्रकार सम्प्रेषित किए :—

गुरुग से आगे खानापुर में कमान के अधीन टुकड़ी सहित पहुंचने के पश्चात् जहां एक वरिष्ठ अधिकारी के रूप में आप लैफ्टिनेन्ट कर्नल मेकलायड के आदेशाधीन सेवा की कमान संभालेंगे, और जब आपके साथ बेलगांव से और धारवाड़ के सैन्यदल शामिल हो जाएंगे, जिनका पार्श्व में विवरण दिया गया है, तो आप सब एक साथ मिलकर कित्तूर की ओर आगे बढ़ेंगे। आप कित्तूर किले को उसकी मार (एडवांस) के रेंज से बाहर रहकर पूरी तरह से घेर लेंगे, और ऐसा करने में आप इस बात को महत्वपूर्ण उद्देश्य समझेंगे कि कित्तूर से एक भी बागी बचकर पश्चिमी जंगल के दुर्ग में एवं शमशेर गढ़ के किले में भी जाने न पाये,क्योंकि पड़ोसी गांवों में विद्रोहियों के परिवार हैं। पैदल सेना की सुसज्जित टुकड़ियों की सहायता सहित होर्स आर्टिलेरी तथा केवलरी चढ़ाई के इस भाग को सर्वोत्तम ढंग से पूरा करेंगे।

अचानक हमले प्रत्याशित किए जा सकते हैं जिसकी वजह से हमारी सबसे अग्रिम चौकियां मजबूत होनी चाहिए, किन्तु वे चौकियां अधिकतर सुरक्षा श्रृंखला के रूप में ही होनी चाहिए, जो निर्भ्रान्त होकर छिपे

हुए शत्रुओं पर टूटकर उन्हें बेनकाब कर देंगी और उनपर गोला बारूद बरसाएंगी तथा अग्रिम दल कभी भी भारी गोला बारूद रहित नहीं रहना चाहिए और न ही उन्हें खाना पकाने या अन्य सम्बद्ध आदतों की इजाजत दी जाए।

बेलगांव का सैन्यदल मेजर ट्रूमंसन की कमान में कल सुबह मार्च कर देंगे और यदि सहस्र मैसूर अश्व धारवाड़ पहुंच जाएं, जो यहां प्रत्याशित हैं, तो आप कित्तूर पर चढ़ाई करने में उनकी सेवाओं का उपयोग करें।

सैनिक संक्रियाओं का पर्यवेक्षण करने के लिए स्वयं चैपलिन 28 नवम्बर 1824 को ताडकोड आया। उसने कित्तूर को घेरने का काम मद्रास रिसाले के कर्नल वाकर को सौंपा। कित्तूर पर हमले की तैयारी में तीन सभी ब्रिटिश सेना की यूनिटों में तीव्र हलचल थी। चैपलिन ने 29 तारीख को न्यूहम को एक विस्तृत पत्र लिखा और उसे 17 तारीख को मुम्बई से चलने के बाद घटी सभी घटनाओं की जानकारी दी। नीचे उद्धृत सुसंगत अंश उपयोगी हो सकता है—

मार्ग में जगह-जगह पर अधिकांश पटवर्धन और देश के इस भाग के कुछ अन्य जागीरदार मुझसे मिलने आए जो अब अपने-अपने ग्राम निवास पर लौट गए हैं। चिन्तामणि राव ने मुझसे न मिलने के लिए अपने पुत्र की बीमारी का बहाना किया, और जमखण्डी का गोपाल राव मुझसे बेलगांव जाने वाली सड़क पर नहीं मिल सका किन्तु वह उस जगह मेरे कैम्प से भी आगे पहुंच गया और उसने तत्काल मिलने का इतना अनुरोध किया कि मैं, उसे अप्रसन्न किए बिना, इसकी इच्छाओं की पूर्ति करने से इनकार नहीं कर सका जिसे मानने में मुझे कोई झिझक नहीं थी क्योंकि मुझे उसके मैत्रीपूर्ण इरादों में पक्का विश्वास है। अब उसने 250 घोड़ों के साथ मेरे निकट ही डेरा डाल रखा है।

फिर भी, मुझे यह सूचना देते हुए खेद है कि कोल्हापुर के राजा का आचरण असंतोषजनक या असंदिग्ध नहीं है। जब बेलगांव की तरफ मार्च करते हुए मैं उसकी राजधानी के निकट से गुजरा तो वह बीमार था या उसने बीमार होने का बहाना किया था, किन्तु चूंकि

उसने मेरी सेवा में अपने कुछ अधिकारियों को भेज दिया था और यह कहलवा दिया था कि वह स्वयं मुझसे मिलने न आने की माफी चाहता है, मुझे उससे न मिलने के कारण अप्रसन्न होने का कोई कारण दिखाई नहीं पड़ता। बेलगांव पहुंच कर मैंने देखा कि वह बीमारी से स्वस्थ हो गये हैं जो कि बड़ी गम्भीर बताई गई थी और उसने बेई दोवागर की सलाह के विपरीत मुझसे मिलने के पक्के इरादे से 5,000 पैदल सेना, 1000 घुड़सवार और 7 तोपें लेकर कोल्हापुर से वास्तव में मार्च कर दिया है। इस आशय की सूचना मिलने पर मैंने उन्हें पत्र द्वारा तुरंत बताया कि यद्यपि मुझे आपसे मिलने की खुशी से अनुगृहीत होना चाहिए, किन्तु मैं अब इतना व्यस्त हूं कि हमारी मुलाकात असाध्य है और इसलिए मैंने उनसे अनुरोध किया कि यह मुलाकात अभी स्थगित रखी जाए। नवीनतम समाचार के अनुसार वह यमकणमरडी या उस परिक्षेत्र में थे और बताया गया है कि वह मेरी सूचना पाने के बाद वहां बेमन रुके हैं। बहराल, चूंकि मुझे ज्ञात हो गया था कि मेरा पत्र मिलने के बाद भी वह बढ़ता चला आ रहा है मैंने उनके वकीलों से जो कि यहां मेरी सेवा में हैं, कहा कि ऐसे अवसर पर इतने दलबल के साथ राजा का चलना अत्यन्त असामयिक और अविचारित है, और यदि वह आगे बढ़ते गए तो मुझे विवश होकर यह विश्वास करना पड़ेगा कि वह कित्तूर के बागियों को बढ़ावा देने के लिए आ रहे हैं। मुझे आज ही पता चला है कि उन्होंने या तो वास्तव में मनूली को मार्च कर दिया है या मार्च करने वाले हैं। यह स्थान इस जगह से लगभग 25 मील उत्तर पूर्व में नीचे की तरफ है और उनका ही है। यदि यह खबर वास्तव में सही निकलती है तो मैं समझता हूं कि उसे चेतावनी देने के बाद मेरा यह विश्वास करना न्यायसंगत होगा कि उनका उद्देश्य विद्रोहियों को वास्तविक रूप से सहायता देना नहीं तो कम से कम उन्हें भरोसा देना है। कित्तूर का मामला हल होने के बाद, मेरी राय में, यह समीचीन होगा कि उन्हें अपने आचरण का स्पष्टीकरण देने को बुलवाया जाए, किन्तु इस बीच उनकी गतिविधियों पर कड़ी नज़र रखी जाए जो वर्तमान संकट के समय, यदि शत्रुतापूर्ण नहीं है तो भी शत्रुता का असर बहुत रखती है।

तारीख 30 नवम्बर को कर्नल मेकलायड के नेतृत्व में सेना कित्तूर के बहुत निकट एक स्थान पर पहुंच गई। धारवाड़ के सहायक कलक्टर श्री जान मुनरो, लैफ्टिनेन्ट कर्नल मेकलायड के साथ थे। श्री मुनरो भी सेना से आए थे और उन्होंने अनेक युद्धों में अपनी वीरता से ख्याति प्राप्त की थी तथा पेनिनसुला इंडिया में एक योग्य सैनिक प्रशासक का नाम कमाया था। कर्नल ट्रूमंसन की कमान के अधीन बेलगांव की सेना और लैफ्टिनेन्ट कर्नल वाकर की कमान के अधीन खानापुर की सेना भी पहुंच गई और उन्होंने कित्तूर के आसपास अड्डे जमा दिए। विध्वंसक गाड़ी अगले दिन 1 दिसम्बर को प्रत्याशित थी। तब तक कित्तूर से लगभग डेढ़ मील के क्षेत्र के अंतर्गत मैसूर, चित्रदुर्ग, मद्रास, अर्काट, शोलापुर, सतारा, मुम्बई, पुणे और वेंगुरला से आई सब टुकड़ियों का एक समूह बन गया। रानी चेन्नम्मा के आदमियों ने उन्हें यह सब सूचना दे दी। वह जानती थीं कि लगभग 25000 ब्रिटिश सेना ने कित्तूर को घेर लिया है। इसमें कोई सन्देह नहीं था कि कित्तूर की सेना अंग्रेजों की विशाल सेना का मुकाबला करने के लिए बहुत कम थी। फिर भी रानी चेन्नम्मा ने आशा नहीं छोड़ी। उन्होंने कुछ तत्काल संदेशवाहक मनोली भेजे जहां से उन्हें यह सूचना मिली थी कि कोल्हापुर की सेना कित्तूर की मदद के लिए आने की प्रतीक्षा कर रही है। इस अवस्था में, वही उनकी एकमात्र आशा थी।

तीक्ष्ण बुद्धि राजनीतिज्ञ चैपलिन इन गतिविधियों को बड़ी बारीकी से परख रहा था। उसे कित्तूर की सहायतार्थ कोल्हापुर की सेना के आने की आशंका थी। उसने मैसूर होर्स आर्टिलेरी के कैप्टन क्रू को 1 दिसम्बर के अपने पत्र द्वारा सूचित किया कि—

चूंकि कित्तूर का किला अपनी बुर्जों में से पूरे दिन गोलियां चला कर पहले ही टक्कर लेने लगा है और चूंकि मेरे पास यह संदेह करने का कारण है कि कोल्हापुर का राजा विद्रोहियों की मदद के लिए आ सकता है, अतः मेरा अनुरोध है कि यदि आप इस आसपास के क्षेत्र की 500 पैदल सेना सहित अश्वसेना का एक दल भेज दें तो आपकी बड़ी कृपा होगी। यदि रिसाले में वलाजपेट घोड़े और तोपें होंगी तो यह ऐसे

किसी भी शत्रु का मुकाबला करने के लिए अत्यन्त उपयोगी होगा। जो भी यहां हमारे अभियान में विघ्न डालने की चेष्टा करेगा।

रानी चेन्नम्मा के संदेशवाहकों ने किले के उत्तर-पूर्वी द्वार से मनोली की तरफ जाने का प्रयत्न किया किन्तु उन्हें ब्रिटिश सैनिकों ने बीच में ही रोक लिया। कुछ मुठभेड़ हुई और किले के अन्दर मीनारों पर पहरेदार सैनिकों ने कुछ भर गोलियां चलाईं। इस गोलीबारी में अश्वतोप खाने के दो अंग्रेज जवान और दो घोड़े मारे गए। इससे अंग्रेज भड़क उठे। उन्होंने किले पर गोलाबारी शुरू कर दी। इसकी तुरन्त प्रतिक्रिया हुई। पूरे दिन दोनों तरफ से रुक-रुक कर गोलियां चलती रहीं।

कित्तूर का वकील अब भी अधिक अनुकूल शर्तों के लिए चैपलिन से बातचीत कर रहा था। शत्रुतापूर्ण घटनाओं से क्रुद्ध चैपलिन ने वकील से कहा कि यदि कित्तूर विद्रोहियों ने 1 दिसंबर की अर्धरात्रि से पूर्व समर्पण नहीं किया तो मैं अपनी सेना को आदेश दे दूंगा कि किले पर चारों तरफ से हमला कर दिया जाए और उसका विध्वंस कर दिया जाए। उसने ताज़ा स्थिति के बारे में न्यूहम को रिपोर्ट भेजी और उन उपायों की रूपरेखा बताई जो वह उस दशा में करेंगे जब ब्रिटिश अधिकारी नहीं छोड़े जाएंगे और कित्तूर के नेता हथियार नहीं डालेंगे।

उसी सुबह चैपलिन ने रानी चेन्नम्मा से कहलवाया कि यदि दोनों अंग्रेज अधिकारियों को प्रातः 10 बजे तक नहीं छोड़ा गया तो कित्तूर की समस्त सेना कत्ल कर दी जाएगी। रानी चेन्नम्मा ने अपने अधिकारियों से विचार-विमर्श किया और निश्चय किया कि अस्थायी उपाय के रूप में ही सभी प्रकार की शत्रुता को बंद करके कुछ और समय प्राप्त किया जाए। अतः उन्होंने अपने वकील के जरिए खबर भिजवाई कि यदि अंग्रेज इस पर राजी हैं कि यदि इन दोनों महानुभावों को सुरक्षित लौटा दिया जाए तो युद्ध नहीं होगा तो वह उन्हें छोड़ने के लिए राजी हो जाएंगी। चैपलिन ने कित्तूर के वकील को सम्मानपूर्वक आश्वासन दिया कि यदि दोनों अधिकारियों को सुरक्षित सौंप दिया गया और बातचीत जारी रखी तो सभी प्रकार की वारदातें बन्द कर दी जाएंगी। तदनुसार, 2 तारीख की रात के 9 बजे स्टीवेन्सन और इलियट को

सुरक्षित रूप से ब्रिटिश कैम्प में पहुंचा दिया गया। कित्तूर के वकील अभी तक इस बात पर जोर दे रहे थे कि कित्तूर संस्थान को उद्घोषणा का वह उपबन्ध निराकृत करके जारी रखा जाए जिसमें घोषित किया गया था कि कित्तूर संस्थान समाप्त हो गया है और परिणामस्वरूप उसे 'ब्रिटिश' राज्यक्षेत्र में मिला लिया गया है। स्टीवेन्सन और इलियट ने भी इन मांगों पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करने की वकालत की। चैपलिन ने न्यूहम को इन गतिविधियों की सूचना देते हुए 2 दिसम्बर को लिखा था—

मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि दो महानुभाव इस रात 9 बजे कैम्प में लाए गए। मेरा विचार है कि समर्पण की इस विशेष घटना से मेरे **अनुबंध** के शेष अंश का पालन करने का कित्तूर के बागियों का वास्तविक आशय प्रकट होता है; किन्तु फिर भी इस समय वकील इस बात पर जोर दे रहे हैं कि संस्थान को चालू रखा जाए और क्षमा-दान का एक अधिनियम पारित किया जाए। साथ ही उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि कटक-सेना जो उनके नेताओं के नियन्त्रण में प्रतीत नहीं होती, प्रतिरोध के लिए कटिबद्ध है जब तक कि उद्घोषणा में प्रस्थापित शर्तों से भी अधिक अनुकूल शर्तें सम्बद्ध न हों। मैंने उन्हें अन्तिम रूप से बता दिया है कि मैं उद्घोषणा में कोई खास परिवर्तन नहीं कर सकता, किन्तु चूंकि उन्होंने सर्वश्री स्टीवेन्सन और इलियट के साथ अच्छा व्यवहार किया है और अन्त में उन महानुभावों को छोड़ दिया है, अतः मैं शर्तों के प्रत्येक भाग का उदारतापूर्वक अर्थ लगाऊंगा, बशर्ते कि किला छोड़ दिया जाए, और गैरिसन कल सुबह 10 बजे तक अभ्यर्पण कर दे।

जब कि सर्वश्री स्टीवेन्सन और इलियट के साथ भेजे गए वकील और अन्य लोग अभी मेरे डेरे में ही थे, किले में से अनेक गोलियां चलाई गईं और रिसाले तथा पैदल सेना का एक दल जो हमारे एक प्रहरी दल की तरफ आ रहा था, वह हमारी छह पौंड के गोले वाली एक तोप के छर्रे से डरकर वापस भाग गया। तब से लेकर सब गोलाबारी बन्द प्रतीत होती है। यह समझौता किया है कि दोनों तरफ से शत्रुतापूर्ण कार्रवाइयां

बंद रहेंगी और ऊपर विनिर्दिष्ट कल के समय तक हरएक अपनी-अपनी सीमाओं के अन्दर रहेगा। खेदपूर्वक कहना पड़ता है कि मुझे विश्वास नहीं है कि यह समझौता शत्रु की ओर से पूरा होगा क्योंकि उनके लोग प्रकटत: कतई अनुशासन में नहीं हैं।

इसमें संदेह का कोई कारण नहीं कि अपनी उद्घोषणा का प्रचार करने का हर प्रयत्न करने के बावजूद हम इसमें आंशिक रूप से ही सफल हुए हैं, क्योंकि बाहर के गांवों का किले से संपर्क कटा हुआ है और कोई भी कागज सरदार गुरु सिद्दप्पा के देखे बिना अन्दर नहीं जाने दिया जाता। उसने वास्तव में जितनी प्रतियां उसके कब्जे में आ गईं वे सभी दबा ली हैं, क्योंकि वही एकमात्र ऐसा व्यक्ति है जिसे ग्राम माफी से अलग रखा गया है।

मैंने इसे उन सभी लोगों को पढ़कर सुना दिया था जो आज सुबह सर्वश्री स्टीवेन्सन और इलियट को कैम्प में छोड़ने के लिए उनके साथ आए थे और चूंकि उनमें काफी लोग थे, अत: इसकी विषय-सामग्री अब उन सबको स्पष्ट हो गई होगी जो हितबद्ध हैं।

उल्लिखित महानुभावों को किले में से छोड़ने से पहले उन्हें संस्थान की ओर से मध्यस्थता करने की शपथ दिलाई गई। तदनुसार उन्होंने वह सब कुछ कह दिया है जो कुछ वे गुरुसिद्दप्पा द्वारा अपने प्रति अच्छे व्यवहार के बारे में एवं उसके अपने द्वारा विध्वंस न करने के बारे में न्यायपूर्वक कह सकते थे, जैसा कि वह कर सकता था, क्योंकि प्रमुख अधिकार इसी के पास था।

विध्वंसक गाड़ी सहित कर्नल डैकन आज सुबह कैम्प के चार मील के भीतर पहुंच गया है। एक दलदल को पार करने की कठिनाई के कारण तोपों की प्रगति में आशातीत विलंब हुआ है।

इस बीच कर्नल डैकन की कमान में विध्वंसक गाड़ी 2 दिसम्बर को सवेरे ही पहुंच गई। चूंकि अब दोनों अधिकारी सुरक्षित वापस लौट चुके थे, इसलिए चैपलिन अपने इस वचन से मुकर गया कि हमले बन्द कर दिये जाएंगे। चैपलिन बहुत चालाक और निर्लज्ज व्यक्ति था। अब उसने कड़ा और उद्धत रुख अपनाया और आग्रह किया कि उद्घोषणा के एक-

एक शब्द का आदर किया जाए, कित्तूर की सेना अध्यर्पण करे और कित्तूर के शासकों को वे सब शर्तें मान लेनी होंगी जो उद्घोषणा में वर्णित हैं। साथ ही उसने धमकी दी कि यदि सेना ने 3 दिसंबर की सुबह 10 बजे तक अध्यर्पण नहीं किया तो विध्वंसक गाड़ी किले को तोड़ने के लिए गोला-बारी आरम्भ कर देगी। 2 दिसंबर को सारे दिन जहां-तहां गोलीबारी होती रही। 3 तारीख की सुबह रानी चेन्नम्मा और वीरव्वा ने चैपलिन को एक संयुक्त पत्र लिखा और यह बताया कि उसने अपने वचन का पालन न करके विश्वासघात किया है और उसे उसके इस वचन की याद दिलाई कि संस्थान चालू रखा जाएगा। पत्र (अनुवाद) में लिखा है :—

आपका कल की तारीख का पत्र मिल गया है और नरसिंह राव मजुमदार की मार्फत दी गई सूचना को हमने समझ लिया है। किन्तु हमें किसी में भी संस्थान के हित के लक्षण दिखाई नहीं पड़ते। आपने अपने पत्र में इच्छा व्यक्त की है कि सब लोगों को सरकार के प्रति निष्ठाभाव से तुरंत किले में से आ जाना चाहिए और यदि उन्होंने ऐसा नहीं किया तो उनके प्राण नहीं बचेंगे।

श्री थैकरे की कठोर कार्रवाई के कारण हमारी यह स्थिति हुई है। हमारी अतीव इच्छा थी कि आपके माध्यम से प्रत्येक चीज पुराने आधार पर हमारे पास बनी रहे, किन्तु आपने हमारे प्रति भिन्न दृष्टिकोण अपनाकर वह सब लिखा है जिसका हमने उल्लेख किया है। आपने लिखा था कि यदि दोनों महानुभावों को छोड़ दिया जाएगा तो युद्ध नहीं होगा। इस वचन के आधार पर हमने महानुभावों को छोड़ दिया। फिर भी आपका रिसाला बढ़ता गया और तोपखाना हम पर गोलाबारी करने के लिए तैयार था। तब रक्षक दल के रूप में हमारा रिसाला बाहर गया और कैनन की चार गोलियां उन पर चलाई गईं। तब हमने दो तोपें चलाईं। हमने तब तक कोई आक्रमण नहीं किया जब तक कि पहले आपके द्वारा हम पर हमला नहीं किया गया।

आप किले को खाली कराना चाहते हैं। इसके लिए हमारा उत्तर है कि हम आपको अपना वरिष्ठ मानते हैं और हम यह विश्वास नहीं

कर सकते कि हमारी यह अवस्था हो जानी चाहिये थी। आपने लिखा है कि यदि हमने समर्पण नहीं किया और आज 10 बजे तक अपने आपको सरकार की निष्ठावान प्रजा घोषित नहीं किया तो आप हम पर हमला करना प्रारम्भ कर देंगे। आपने हमसे पहले कहा था कि युद्ध नहीं होगा और हम सन्तुष्ट थे कि श्री थैकरे की कार्यवाहियों के बारे में अन्वेषण किया जाएगा और संस्थान हमारे पास स्थायी तौर पर बना रहेगा। आपके अन्तिम पत्र में हमें ऐसी किसी परिणाम का प्रदर्शन महसूस नहीं होता। आज आप चाहते हैं कि हम ब्रिटिश सरकार के प्रति अपनी निष्ठा घोषित करें। हम जनरल वेलेजली के साथ गए और अपने आगुवों से हमने उनकी सहायता की। हमने बेलगांव के गवर्नर मेजर जनरल सर मुनरो के मित्र के रूप में व्यवहार किया था और उन्होंने हमारी सहायता से सन्तुष्ट होकर हमें पीढ़ी दर पीढ़ी अपने संस्थान को चालू रखने के लिए सनद दी थी। वह सनद आपकी कृपा से आज तक लागू है। अब आपके इस पत्र के उत्तर में हम क्या लिख सकते हैं कि आप अन्वेषण करने के बजाय हम पर हमला करेंगे। आप श्रेष्ठ हैं। आप हमारी और हमारे 1000 आश्रितों की सहायता करके ख्याति प्राप्त करें। ऐसा करने से आपका बड़ा आदर होगा। हमने उल्लेख किया था कि हम युद्ध के बिल्कुल खिलाफ हैं। आप इस भावना को समझे बिना शत्रुतापूर्ण मनोवृत्ति प्रकट करते हैं। हमें जो समय दिया गया है उसके बीतने के बाद हमारे पास क्या इलाज है ?

आशा है, संस्थान के प्रति आपकी कृपादृष्टि यथावत बनी रहेगी।

चैपलिन ने इस पत्र की कोई परवाह नहीं की। वह अपनी धारणा बना चुका था और अपने निश्चय पर अडिग था। उसने 3 दिसम्बर को 11 बजे तक प्रतीक्षा की और कर्नल डैकन को आदेश दिया कि जब तक कित्तूर के सैनिक अध्यर्पण न करें और कित्तूर पर कब्जा न हो जाए अभियान चालू रखे। उसी दिन उसने कित्तूर की उस जनता को जिसको विद्रोहियों के प्रति कुछ भी सहानुभूति थी झुकाने के लिए मार्शल ला लागू करते हुए उद्घोषणा भी जारी कर दी।

जिस समय उपरोक्त पत्र लिखा जा रहा था, उसे किले से उत्तर

मिला कि प्रस्थापित शर्तें स्वीकार्य नहीं हैं। उसने पत्र के साथ उस सूचना का अनुवाद भी भेज दिया। पत्र में अनुदेश दिए गए थे।

सरकार ने सशक्त किया है कि यदि परिस्थितियों की मांग हो तो दक्षिणी मराठा प्रदेश में कहीं भी मार्शल ला घोषित कर दिया जाए, अतः मैं समझता हूं कि वह समय आ गया है, और मैं तुरन्त इस आशय की उद्घोषणा जारी करूंगा। इस दस्तावेज के द्वारा आपको प्राधिकार होगा कि आप कोर्ट मार्शल के सामने उन सब व्यक्तियों पर मुकदमा चला सकते हैं जो ब्रिटिश सरकार के प्रति निष्ठावान न हों और जो ब्रिटिश सरकार का खुलेआम विरोध करके अथवा राज्य से विद्रोह के खुले आम कार्य में, अथवा उक्त राज्य क्षेत्रों में से किसी भी भाग के भीतर अंग्रेजों के शत्रुओं को खुले आम सहायता देने या दुष्प्रेरित करने के कार्य में हथियार उठाएं।

मैत्रीपूर्ण समझौते के सभी प्रयत्न विफल हो जाने पर रानी चेन्नम्मा ने निश्चय किया कि युद्ध की तैयारी की जाए और जब तक सम्भव हो यह देखते रहें कि कोल्हापुर की सेना हमारी सहायता के लिए आयेगी या नहीं। अतः उन्होंने अपने सरदारों को बुलवाया और उन्हें हिदायतें दीं। निष्ठावान सरदारों और सैन्यदलों ने पवित्र शपथ लेकर रानी चेन्नम्मा को आश्वासन दिया कि हम अपनी प्रिय रानी और कित्तूर की स्वतन्त्रता के लिए अन्तिम सांस तक लड़ाई लड़ेंगे। वे मोर्चे पर डट गए और यह निश्चय अटल था।

इसी बीच ब्रिटिश सेना का एक दल कैम्मनमरड़ी की पश्चिमी दिशा की तरफ बढ़ चुका था जहां रानी चेन्नम्मा के सैनिकों का कड़ा पहरा था। ब्रिटिश सेना की संख्या 25,000 से भी अधिक थी। वह कुछ रेजिमेंटों को राणागट्टी तालाव की तरफ से उत्तर में और एक अन्य रेजिमेंट को दक्षिण में तुम्बीकेरी की तरफ भेजकर कैम्मनमरड़ी के चारों तरफ फैल गई। कित्तूर के गढ़ कैम्मनमरड़ी को ब्रिटिश सेना द्वारा चारों तरफ से घेर लिया गया और उन्होंने तीनों तरफ से हमला बोल दिया। जब कि ब्रिटिश सेना का नेतृत्व कर्नल बाकर, लै० कर्नल मेकलायड, लै० कर्नल मुनरो, और लै० ट्रिनसन की सहायता से कर्नल डैकन ने किया,

कित्तूर सेना का संचालन श्रावरदी वीरप्पा; गोलन्दाज हिम्मत सिंह, नरसिंह राव, गुरुपुत्रप्पा, अपन्ना देसगाव, संगोली रायणा, बीचागट्टी चनसप्पा और गजवीर सहायकों के साथ सरदार गुरुसिद्दप्पा ने किया। ये लोग कित्तूर के विख्यात योद्धा थे।

3 दिसम्बर को पूरा दिन गोलाबारी चलती रही। अंग्रेजों की विशाल सशस्त्र सेना ने केवल इस बहाने से कैम्मनमरड़ी पर क्रमबद्ध हमले किए कि इस देश के उन बच्चों को काबू में करने के महान लक्ष्य के लिए युद्ध किया जा रहा है जिन्हें उनकी सरकार ने विद्रोही घोषित कर दिया है। किन्तु उनकी विशाल सेना का कित्तूर के बहादुर सैनिकों से कोई मुकाबला नहीं था। यद्यपि वे संख्या में कम थे और उनके पास वैसे शस्त्र भी नहीं थे, फिर भी कित्तूर के लड़ाकुओं के पास अजेय कवच था—वे अपनी मातृभूमि और स्वतन्त्रता के प्रेम से ओतप्रोत थे। हमेशा की भांति वे बहादुरी से लड़े। वे साहस, दृढ़ता और उत्साह के साथ लड़े। शत्रु का शिकार होने से पूर्व प्रत्येक ने अनेकों को मौत के घाट उतार दिया। रानी चेन्नम्मा के शब्द उनके कानों में अभी तक गूंज रहे थे। वे निर्मम होकर ब्रिटिश सैनिकों पर टूट पड़े और कत्लेआम मचा दिया। एक-एक के साथ डट कर मुकाबला हुआ और ब्रिटिश सैनिकों तथा कित्तूर के सैनिकों दोनों की अनेक लाशें कैम्मनमरड़ी के चारों तरफ युद्ध भूमि में बिछ गईं। 3 दिसम्बर की रात तक कैम्मनमरड़ी दुर्ग का बुर्ज ढांचा मात्र रह गया। कुछ जीवित बचे सैनिक कित्तूर किले की तरफ पूर्वी दिशा में गाडडमरडी से पूर्व की तरफ वापस लौट गए। 4 तारीख की सुबह ब्रिटिश सैनिकों ने गाडडमरडी पर हमला बोल दिया जहां कित्तूर योद्धाओं ने उनका डटकर मुकाबला किया। सरदार गुरुसिद्दप्पा, गाडडमरडी की प्राचीरों से सेना का संचालन कर रहे थे। रानी चेन्नम्मा किले के अन्दर अपनी सेना को थामे हुए थी और किले के अन्दर से शत्रु का मुकाबला करने की तैयारी कर रही थीं। 4 दिसम्बर को सारी सुबह कित्तूर के सैनिक गाडडमरडी को बचाने का प्रयत्न करते रहे किन्तु शीघ्र ही परास्त हो गए। कित्तूर के अधिकांश सैनिक शहीद हो गए। जो कुछ बचे वे अपनी अन्तिम आशा के साथ किले में वापस लौट गए।

शत्रु संहार करने के बाद कर्नल डैकन ने अपने आदमियों को किले की तरफ बढ़ने और विध्वंसक गाड़ी को चालू करने का आदेश दिया। गाड़ी किले के मुख्य प्रवेश द्वार पर ले जाई गई। सारा दिन किले पर भारी गोलाबारी होती रही और दोनों तरफ से बराबर तोपें चलती रहीं। जब कित्तूर की सेना किले की रक्षा करने का प्रयत्न कर रही थी सैन्यदल में विश्वासघाती भी थे—बारूद में मिलावट कर दी गई और उसे निष्प्रभाव बना दिया गया। अन्त आ चुका था। बाहरी सहायता की रानी चेन्नम्मा की आशा छिन्न-भिन्न हो गई थी। कोल्हापुर के छत्रपति टालमटोल कर रहे थे और उनके विनिश्चय करने से पूर्व ही ब्रिटिश सेना ने कित्तूर को परास्त कर दिया था। अब रानी चेन्नम्मा को आशा की कोई किरण दिखाई नहीं पड़ती थी। वह युद्ध स्थल में प्राण देकर खुश होतीं, किन्तु उन्हें मृत्यु भी धोखा दे गई। कित्तूर की दहाड़ती तोपें उनके अपने ही लोगों के विश्वासघात से ठंडी पड़ गई। किन्तु देशद्रोहियों को भी मौत के घाट उतार दिया गया। रानी चेन्नम्मा के क्रुद्ध निष्ठावान सरदारों ने इन देशद्रोहियों—कन्नूर वीरसंगप्पा और हुराकडली मल्लप्पा को ढूंढ निकाला और उन्हें हाथियों के पैरों के नीचे कुचलवा दिया।

कित्तूर के सैनिक पूर्ण शक्ति से लड़ते रहे। चार दिसम्बर को काफी रात गए किला टूटा और अंग्रेज अन्दर घुस आए। किले के अन्दर कुछ सैनिकों ने मुकाबला करने की कोशिश की किन्तु वे शीघ्र ही परास्त कर दिये गए। कुछ हिरासत में ले लिए गए जब कि कुछ बचकर भाग निकले। अधिकांश सैनिकों ने अपनी मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए लड़ते-लड़ते अपने प्राण दे दिये। ब्रिटिश सेना ने 5 दिसम्बर को बहुत सवेरे ही किले पर कब्जा कर लिया। हजारों कत्ल कर दिये गये। अंग्रेजों के पक्ष के भी काफी सैनिक मरे। कार्यवाहक कलक्टर श्री मुनरो बुरी तरह घायल हो गये और उन्हें धारवाड़ ले जाया गया जहां 11 दिसम्बर को उनका देहान्त हो गया।

जब कित्तूर के बचाने के उनके सारे प्रयत्न विफल हो गये और सेना परास्त हो गई तो किले से कुछ सरदार भाग निकले। इनमें आवरदी वीरप्पा, किकेरी वेंकन्ना और कुम्मा इमाम उल्लेखनीय थे। वे भागकर

शमशेरगढ़ की तरफ पश्चिमी दिशा के जंगलों में घुस गये। लड़ते-लड़ते जो जीवित बचे थे उनसे मार-मार कर समर्पण कराया गया। इनमें सरदार गुरुसिद्दप्पा और संगोली रायण्ण भी थे। तस्करी के ब्रिटिश धन ने अपना काम किया। रानी चेन्नम्मा अपने बहादुर सरदारों के बहुत अधिक अनुनय-विनय करने पर मान गई और उन्होंने अपनी पुत्रवधु वीरव्वा तथा जानकी देवी को लेकर किले के उत्तर-पूर्वी द्वार से संगोली की तरफ बच निकलने का यत्न किया। किन्तु ब्रिटिश सैनिकों ने उन्हें गिरफ्तार करके बन्दी बना लिया। चैपलिन इस विजय पर स्वभावत: बहुत खुश था। उसने उसी दिन न्यूहम को एक लम्बा पत्र लिखा जिसमें घटना का विस्तृत वृतान्त दिया :—

कित्तूर के अध्यर्पण की सूचना सम्बन्धी मेरी कल शाम की डाक के बारे में माननीय परिषद् गवर्नर की जानकारी के लिए मेरा निवेदन है कि गैरिसन ने कल रात किले पर कब्जे का इसके बावजूद प्रतिरोध किया कि कर्नल डैकन ने उन्हें समर्पण के लिये हर प्रकार के व्यक्तिगत प्रयत्न किये थे किन्तु रात्रि में बागियों के सरदारों ने इस शर्त पर आत्मसमर्पण कर दिया कि उनके प्राणों की रक्षा की जाए और शेष सेना जो पहले बचकर नहीं भागी थी, जोरदार टक्कर से बिल्कुल हताश होकर आज सुबह अपने हथियार डालने के लिए राजी हो गई है। परिणामस्वरूप ऊपरी और निचले किलों पर ब्रिटिश सेना ने आज सुबह लगभग 8 बजे कब्जा कर लिया है।

जिन सरदारों ने आत्मसमर्पण किया है उनके नाम पार्श्व में दिए गये हैं।

ऐसा अनुमान है कि कुछ लोग बच निकले हैं,जिनका सरदार आवरदी वीरप्पा है जो पूरे युद्ध के दौरान सेना का सरदार रहा था। उसे इस बात का डर था कि पहले अत्याचार भरे कार्यों का जवाब देना पड़ेगा। वह हमेशा सरकार का प्रमुख विरोधी रहा है। अनुमान है कि वह मुन्शियों के दल के नेता किकेरी वेंकुन और गोविन्दैया, नारायण तथा यशवन्त नामक तीन गुमास्ताओं के साथ शमशेरगढ़ की तरफ चला गया है।

कहा जाता है कि देस परदेस गुट का एक नेता देवगांव का कुम्मा इमाम भी इसी दिशा में भागा है। मैंने इनमें से हरेक को पकड़ने के लिए इनाम की घोषणा कर दी है।

अनुमान है कि यदि अधिक दबाव डाला गया तो भगोड़ा घाटों को पार करके गोवा राज्यक्षेत्र में बच निकलने का प्रयत्न करेगा। मैं नहीं समझता कि वे शमशेरगढ़ की रक्षा करने का प्रयत्न करेंगे जिस पर कब्जा करने के लिए मैंने कर्नल डैकन से एक सैनिक टुकड़ी भेजने का अनुरोध किया है।

मेरे सुझाव पर कर्नल डैकन ने स्वर्गीय देसाई के परिवार की महिलाओं की रक्षा के लिए व्यावहारिक इन्तजाम कर दिए हैं। मेरा इरादा है कि इन महिलाओं के लिए उपयुक्त भरणपोषण भत्ते की सिफारिश की जाए।

अपने कब्जे में लिया गया खजाना और सम्पत्ति मेरे अनुमान में बहुत अधिक है। उसकी सूची तैयार करने के लिए उस अधिकारी ने एक समिति नियुक्त कर दी है। मुझे सूचना मिली है कि श्री थैकरे ने जिस पर सील लगाई थी उसमें से विद्रोहियों ने बहुत थोड़ा हिस्सा निकाला है।

श्री स्टीवेन्सन को अनुदेश दिये गये हैं कि स्वर्गीय श्री थैकरे ने कित्तूर राज्य-क्षेत्र के अधिभोग और प्रबन्ध के लिए जो आदेश दिए थे उन्हें कार्यान्वित किया जाए।

मैं चाहता हूं कि फिलहाल कित्तूर के सर्वप्रमुख बागियों को बेलगांव में नजरबन्द रखा जाए। जब तक कि मुझे मार्गदर्शन हेतु सरकार से वे शर्तें प्राप्त न हो जाएं जिन पर उन्होंने आत्मसमर्पण किया था, तब तक उनके प्राणों की रक्षा की जाए किन्तु उन्हें अन्य ऐसा दण्ड भोगना ही पड़ेगा जो माननीय परिषद् गवर्नर विद्रोह के खुले आम अपराध के लिए समुचित समझें, जिसमें उन्होंने इसके बावजूद अपराधोन्मत होकर भाग लिया कि हमने उनके सामने असाधारण रूप से सदय और उदार शर्तों का प्रस्ताव रखा था बशर्ते कि वे आगे प्रतिरोध छोड़कर फिर से राज-निष्ठा अपना लें।

सहर्ष निवेदन है कि मैं अष्टम मद्रास के कर्नल वाकर का बहुत ऋणी

हूं क्योंकि उन्होंने कर्नल डैकन के पहुंचने से पहले मुझे बड़ी तत्परता से सहयोग दिया था और मैं कर्नल डैकन का भी उतना ही आभारी हूं क्योंकि उन्होंने उस समय मेरी दिल से सहायता की थी जब कि बातचीत चल रही थी। जिस योग्यता और विवेकपूर्ण व्यवस्था से प्रतिष्ठित अधिकारी कर्नल डैकन ने थोड़े ही समय में कित्तूर के सुदृढ़ किले को उड़ा दिया उसकी जितनी प्रशंसा की जाए वह कम है, क्योंकि किले की अपनी भावना और ओज के कारण असाधारण रूप से दृढ़ गैरिसन द्वारा की गई थी। मुझे विश्वास है कि माननीय सपरिषद् गवर्नर द्वारा इसकी भरपूर प्रशंसा की जाएगी।

चतुर्थ मद्रास कैवलरी के कर्नल मैकलायड के नेतृत्व में सैन्यदल ने जिस पराक्रम से शत्रु की खाई में बनी कैम्मनमरड़ी चौकी पर हमला किया उसकी सरकार को जानकारी निःसन्देह उचित अधिकारी द्वारा दी जायेगी। मैंने इस हमले को पास की ऊंचाई से देखकर अपनी सन्तुष्टि कर ली थी।

अपने दल के कैप्टन स्पिल्लर और जेमसन के उत्साह और कर्मठता की प्रशंसा किए बिना मैं इस पत्र को समाप्त नहीं कर सकता।

इस प्रकार हमारे देश में एक स्वर्ण अध्याय का अन्त हुआ। कित्तूर किले के विशाल खुले मैदान बहादुर स्वतन्त्रता सैनानियों की लाशों से पट गए थे। इन लाशों के ढेर पर 5 दिसम्बर1824 की सुबह आकाश पर आच्छादित तोपों की बारूद के धुएं रूपी बादलों के ऊपर यूनियन जैक उड़ाया गया और ध्वस्त कित्तूर किले के परकोटे से फहराता देखा गया। निःसन्देह इस छोटी सी रियासत की अल्प सेना को ब्रिटिश सेना ने अधिक संख्या के .. पर ही परास्त और ध्वस्त किया था। कित्तूर वीरान हो गया। ये हमारे देश के इतिहास में सबसे अधिक अंधकारमय दिन थे। किन्तु इस महान युद्ध में रानी चेन्नम्मा द्वारा दर्शित नेतृत्व, देशभक्ति, साहस, पराक्रम और कृतज्ञता की प्रेरणादायक विशेषताएं देश के इस भाग में आगे आने वाली पीढ़ियों के प्रेरणा का स्रोत रही हैं। रानी चेन्नम्मा ने जो स्वातन्त्र्य प्रेम की ज्योति जलाई थी वह इस पराजय से बुझी नहीं, वह केवल थोड़े समय के लिए मंद पड़ गई थी।

8. युद्धोपरान्त

कित्तूर सेना की पराजय के तुरन्त बाद ही चैपलिन ने कुछ बचे हुए लोगों को हिरासत में ले लिया। इनमें सरदार गुरुमिट्टप्पा और संगोली रायण्ण के नाम उल्लेखनीय थे। इसके बाद आयुक्त ने स्टीवन्सन और कुछ अन्य की सहायता से राजमहल छान मारा और सारी सम्पत्ति हड़प ली। कहा जाता है कि अंग्रेज 16 लाख रुपये की खजाने की सारी नकदी और लगभग 4 लाख मूल्य के आभूषण ले गये। उन्होंने कित्तूर सेना के 3,000 घोड़ों, 2,000 ऊंटों और लगभग एक सौ हाथियों को और गोलाबारूद, 38 बन्दूकों, 56 तोपों के समस्त भंडार को तथा अन्य विविध प्रकार के सारे शस्त्रों की जैसे तलवारों, धनुष बाणों, भालों आदि को अपने कब्जे में ले लिया। उस समय कित्तूर देसगत में 286 गांव और 72 कस्बे (हैमलेट) थे और उसकी वार्षिक आय 4 लाख रुपये के आसपास थी।

रानी चेन्नम्मा और शिवलिंग रुद्रसरजा की विधवा वीरव्वा, तथा उनके स्वर्गीय पुत्र शिवबासवराज की विधवा जानकी को तत्पश्चात् लगभग एक सप्ताह तक कित्तूर राजमहल में नजरबन्द रखा गया। उनसे कित्तूर देसगत अंग्रेजों को देने के बारे में दस्तावेज पर जबरदस्ती हस्ताक्षर करवाये गये। इसके बाद वे भारी रक्षकदल के साथ बेलहोंगल के अभेद्य दुर्ग में ले जाये गये और वहां राजनीतिक कैदी के रूप में रखे गये। कित्तूर राज-परिवार की तीनों महिलाओं के लिए प्रतिवर्ष लगभग 40,000 रु० की कुल रकम की पेंशन नियत कर दी गई।

कुछ समय तक कित्तूर क्षेत्र में अस्थिर स्तब्धता रही। फिर भी कित्तूर के बहुत से लोग कित्तूर देसगत को पुनः पाने का स्वप्न देखते थे। मनोहर दुर्ग और किले तथा राजमहल की मीनार कित्तूर के अतीत के गौरव की साक्षात् प्रतीक थी। इनसे लोगों के मन में ये आशाएं जीवित रहीं। चैपलिन ने सोचा था कि ये भवन उसके लोगों के मन में रानी चेन्नम्मा की याद जिन्दा रखते हैं, इन्हें मिट्टी में मिला दिया जाये जिससे कि ये अपने अतीत की

गरिमा के अनवरत स्मारकों के रूप में और आगे काम न आएं। अतः राजमहल के मुख्य भाग को गिराने का आदेश दे दिया गया। भव्य द्वार मंडप के बहुत बड़े-बड़े टीक के स्तम्भ बहुत कम कीमत में नीलामी द्वारा बेच दिये गये। अन्य मूल्यवान लकड़ी के आलंकारिक खिड़की की चौखटें और किवाड़ भी या तो बेच दिये गये या ले जाने दिये गये। राजमहल की सम्पत्ति को लूटने की वास्तव में छूट थी।

बेलहोंगल जेल में अवसन्न रानी चेन्नम्मा और वीरव्वा ने अपने निष्ठावान सरदारों द्वारा कित्तूर में एक दूसरे विद्रोह का और देसगत के पुनःस्थापन का सपना देखा था। संगोली रायण्णा जैसे कुछ कित्तूर के विद्रोही कुछ अवसरों पर उनसे गुप्त रूप से मिले थे और उन्होंने उन्हें कित्तूर की खबरों से अवगत कराया था। रानी चेन्नम्मा ने उन्हें एक दूसरी क्रान्ति के लिए प्रोत्साहित किया था, किन्तु यह नहीं हुआ क्योंकि कित्तूर के युद्ध में शोचनीय पराजय और हजारों लोगों की निर्मम हत्या के कारण लोगों का मनोबल टूट चुका था।

रानी चेन्नम्मा ने अपना अधिकांश समय पूजापाठ और चिन्तन-मनन में बिताया। उनका अविच्छिन्न स्वप्न कित्तूर की स्वाधीनता थी जिसके लिए वह दिन-रात सूखती रही। वह आशा पर आशा लगाए रहीं किन्तु ऐसा कुछ नहीं हुआ। बैलहोंगल किले की अंधेरी और गंदी कोठरी में दुःखी और चिंतामग्न रानी उस दिन के सपने में खोई बैठी रहती थी जब वह एक बार फिर अंग्रेजों के खिलाफ लड़ेंगी, और जब कित्तूर के उसके प्रिय लोग स्वतन्त्र होंगे तथा उसका राज्य स्वाधीन होगा। इस प्रकार रानी चेन्नम्मा के दिन बीतते गए। बैलहोंगल किले में लगभग पांच वर्ष नजरबन्द रहने के बाद 2 फरवरी 1829 को उनका स्वर्गवास हो गया।

रानी चेन्नम्मा को पूरे सैनिक सम्मान के साथ बैलहोंगल में दफनाया गया। कुछ महीने बाद 20 जुलाई 1829 को उनकी पुत्रवधु जानकीबाई का भी जेल में देहान्त हो गया। इस प्रकार उस महान रानी चेन्नम्मा के जीवन का अन्त हुआ जिन्होंने दासता के अंधकार -युग में क्रान्ति की उज्जल चिनगारी जलाकर भारत में ब्रिटिश राज़ के विरुद्ध भीषण विद्रोह की आग भड़काई थी।

9. सुलगती चिंगारियां

यद्यपि रानी चेन्नम्मा परास्त हो गई थी, कित्तूर सेना पराजित हो गई थी और कित्तूर देसगत ब्रिटिश सरकार के अधीन हो गया था, फिर भी कित्तूर के लोगों का कित्तूर शासकों के लिए वही प्रेम एवं गौरव तथा कित्तूर की भूमि के लिए वही प्रेम बना रहा। उनमें विद्रोह की आग सुलगती रही और वे धृष्ट अंग्रेजों के विरुद्ध आवाज उठाने के अवसर की प्रतीक्षा करते रहे।

अनेकों बार जहां-तहां चिनगारियां फूटीं। इनमें से सबसे अधिक महत्वपूर्ण विद्रोह था 1829-30 में संगोली रायण्णा के नेतृत्व में हुआ विद्रोह। रायण्णा रानी चेन्नम्मा का परम निष्ठावान एवं पक्का अनुयायी था। उसने रानी चेन्नम्मा को वचन दिया था कि मैं आपके मरने के बाद भी लड़ाई जारी रखूंगा। वे उसके लिए हमेशा एक आदर्श रहीं। संगोली रायण्णा संगोली गांव का चौकीदार था। यह गांव कित्तूर से लगभग तेरह मील उत्तर में था। वह कित्तूर देसाई का अनुचर था और उसे 1824 के विद्रोह में भाग लेने के लिए क्षमा कर दिया गया था। उसने शिवलिंग रुद्रसरर्जा के दत्तक पुत्र और कित्तूर देसगत के विधिपूर्ण वारिस शिवलिंगप्पा को देसगत वापस दिलाने के कृतसंकल्प लक्ष्य से रानी चेन्नम्मा के निष्ठावान अनुयायियों का एक वर्ग एकत्र किया। उसने लगभग दो वर्ष अंग्रेजों के खिलाफ भीषण विद्रोह की आवाज उठाई। उन दो वर्षों के दौरान संगोली रायण्णा ने छापामार हमले करके अनेक जगहों से ब्रिटिश अड्डों पर हमले किए। उसने इन हमलों का संचालन बालागुंड और हांडी बडगानाथ पहाड़ियों में स्थित अपने अड्डे से किया। सन् 1830 में, वह लगातार चार महीने तक कित्तूर क्षेत्र में स्थित खजानों और कार्यालयों पर हमला और लूटमार करता रहा। सर्वाधिक सफल हमले नन्दगड़, बिदि, सम्पा गांव और खानापुर पर हुए। अंग्रेज इससे आतंकित हो गए और बेहद घबरा गए।

स्वभावत: कित्तूर देसगत के लोगों को रायण्णा और उसकी विद्रोही गतिविधियों से सहानुभूति थी। ब्रिटिश अधिकारी और सैनिक उसे पकड़ने में असफल रहे। उन्होंने उसे पकड़कर उनके हवाले करने के लिए इनाम की घोषणा की। किन्तु इससे भी कोई सफलता नहीं मिली। तब उन्होंने कुछ असंतुष्ट राजद्रोहियों को पकड़ा और रायण्णा को फंसाने का षड्यन्त्र रचा। खोडनपुर का लिंगनगौड नामक एक व्यक्ति कित्तूर राजपरिवार का दूर का रिश्तेदार था। वह अपने पुत्र को कित्तूर देसगत के लिए गोद देना चाहता था किन्तु उसे निराश होना पड़ा था। रानी चेन्नम्मा और कित्तूर शासकों के प्रति उसके मन में एक शिकायत पल रही थी। तब से वह निरन्तर ब्रिटिश अधिकारियों से सम्पर्क बनाए हुआ था और उनके विरोध की कहानियां सुनाता था। अंग्रेजों ने लिंगनगौड को पकड़ा और उसे रायण्णा को गिरफ्तार करने के षड्यन्त्र की रचना के लिए उकसाया। दुबले-पतले और दुष्टस्वभाव लिंगनगौड ने योजना बनाई। उसने एक अन्य व्यक्ति नागिनल वेंकणा गौड की सहायता ली। वह बड़ा तगड़ा और हृष्ट-पुष्ट था। एक बार फिर, हमारे अपने लोगों के विश्वासघात का लाभ उठाकर अंग्रेजों ने अपना साम्राज्य सुदृढ़ किया। साथ ही, उन्होंने राजद्रोहियों की भूमिका भी अदा की। उन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध रायण्णा का साथ देने का बहाना किया और कुछ महीनों तक उसका साथ दिया। एक दिन जब रायण्णा स्नान कर रहा था तो उन्होंने उसे गिरफ्तार करने की खातिर से सशस्त्र पुलिस के एक दल की व्यवस्था की। रायण्णा यह देखकर एकदम आश्चर्यचकित रह गया। ब्रिटिश पुलिस ने उसे घेर लिया तथा गिरफ्तार कर लिया। उसे सिद्धदोष ठहराया गया तथा मृत्यु दंड दिया गया। अंग्रेज जनता को आतंकित करना चाहते थे इसलिए उन्होंने उसे नन्दगड में सार्वजनिक स्थान पर फांसी लगाने का निश्चय किया। नन्दगड उसके प्रिय अड्डों में से एक था। कुछ दिन पहले ही उसने इसी स्थान पर एक खजाना लूटा था। उसे 28 दिसम्बर 1830 को फांसी दे दी गई। तेज गति से बढ़ते हुए मृत्यु के फंदे को देखकर भी वह मुस्कराता रहा। जब ब्रिटिश अधिकारी ने उससे पूछा कि तुम्हारी अन्तिम इच्छा क्या है तो संगोल्ली रायण्णा ने उत्तर दिया, "मेरी अन्तिम इच्छा है कि

मैं अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ने के लिए पुनः इसी धरती पर जन्म लूं और इस पवित्र धरती से उन्हें भगाऊं।" उसके लिए कुर्सी पर चढ़कर गर्दन में फंदा डालने के लिए कुर्सी लाई गई। उसने कुर्सी को ठोकर लगाई और फांसी का फंदा अपने हाथ में ले लिया तथा अपनी गर्दन में डाल लिया और फिर जल्लादों से फंदे को खींचने के लिए कहा। इस दुर्दम साहस ने इस महान स्वतन्त्रता सेनानी की दिलेरी के प्रति आदर भाव पैदा कर दिया।

रानी चेन्नम्मा के देहान्त और जानकीबाई के देहान्त के बाद भी वीरव्वा जीवित थी। उसे कुछ समय बैलहोंगल जेल में रखा गया। चेन्नम्मा जिस मिट्टी की बनी थी, वीरव्वा भी उसी मिट्टी की बनी एक दुर्दान्त साहसी महिला थी, और उसने भी कित्तूर की आजादी के लिए अन्त तक लड़ने का पक्का निश्चय किया था। उसने कित्तूर के स्वतन्त्रता सेनानियों को गुप्त सन्देश भेजे। उसने कित्तूर के कुछ सरदारों के पास धन भेजा जो एक और विद्रोह संगठित करने का प्रयत्न कर रहे थे। अंग्रेजों को इसका पता चल गया। उन्होंने वीरव्वा को बैलहोंगल से एक दूर स्थान पर भेजने का निश्चय किया। यह निश्चय किया गया कि पहले कुसगल भेजा जाए और फिर वहां खानदेश जिले में मेलगांव भेजा जाए। जब लोगों को इसके बारे में ज्ञात हुआ तो वे बैलहोंगल किले के चारों ओर भारी संख्या में एकत्र हो गए। वीरव्वा को वहां से दूसरी जगह ले जाने का विरोध करने के लिए किले के बाहर एक हजार से भी अधिक लोग जमा हो गए। अंग्रेजों ने किसी भी सम्भावित मुकाबले को दबाने के लिए भारी सेना बुला ली। लोग असहाय होकर वहां से तितर-बितर हो गए।

वीरव्वा को भारी सुरक्षा के साथ कुसुगल किले में भेज दिया गया। वहां उसका स्वास्थ्य दिन पर दिन गिरने लगा और जब अंग्रेजों को आभास हो गया कि वह इतनी दुर्बल हो गई है कि कभी भी मर सकती है तो उसे धारवाड़ में उसके एक रिश्तेदार के घर भेज दिया गया। जब वह कुछ स्वस्थ हो गई तो उसे उलावी चेन्नाबसवेश्वर मन्दिर में लाया गया, और कहा जाता है कि धारवाड़ के तत्कालीन कलक्टर श्री बाबर

ने उसे विष पिलाया। उसके दु:खद अंत का कुछ लोक गीतों में सुस्पष्ट वर्णन किया गया है। अन्तिम रूप से विष लेने से पूर्व उसने बावर से कित्तूर के अन्तिम दर्शन की याचना की। वह मन्दिर की छत पर खुले में गई और कुछ सीढ़ियां चढ़कर उसने गृहातुर होकर कित्तूर के राज-महल की मीनारों को देखा और गहरी सांस ली तथा उसके गरिमामय अतीत का स्मरण किया। इसके बाद वह नीचे उतरी और दिए गए विष को निगल गई, तथा एक शहीद की मौत मरी।

पुन: 1833 में शंकरन्ना नामक एक व्यक्ति ने कित्तूर में ब्रिटिश राज के विरुद्ध विद्रोह की आवाज उठाने का असफल प्रयास किया। 1836 में, नागप्पा, राजपति और सवाई रुदप्पा कोटगी के नेतृत्व में विद्रोहियों के एक अन्य दल ने अंग्रेजों की खिलाफत करने के लिए गोवा से पुर्तगालियों की मदद लेने का प्रयास किया। किन्तु यह भी निष्फल रहा। 1837 में, शिवलिंगप्पा ने जिन्हें सभी सवाई मल्लासरजा के नाम से जानते थे, एक विद्रोह का नेतृत्व किया किन्तु उनपर संदे हो गया और वे गिरफ्तार कर लिए गए और कुछ समय तक डोडवाड किले में कैद रखे गए। शिवलिंगप्पा ने सम्पागांव और विदि में अंग्रेजों के विरुद्ध आवाज उठाने का एक और प्रयत्न किया। किन्तु उनके अपने ससुर वांटामुरी के देसाई ने उसकी योजनाओं की जानकारी अंग्रेजों को दे दी। अपराध से सम्बन्धित कुछ पत्र मिल गए और शिवलिंगप्पा को हिरासत में ले लिया गया तथा कुछ समय तक जेल में रखा गया। कुछ महीने बाद, वांटमूरी के देसाई और सांगली के राजा से; जिस क्षेत्र के शिव-लिंगप्पा थे, जमानत लेने के बाद उन्हें छोड़ दिया गया। अन्त में, 1857 में वीर शिवलिंगप्पा ने अंग्रेजों के विरुद्ध आवाज उठाने का एक अन्य निष्फल प्रयास किया।

रानी चेन्नम्मा द्वारा जलाई गई ज्योति बुझी नहीं। वह कित्तूर के स्वतन्त्रता प्रेमी लोगों के दिलों में तीनों दशकों से भी अधिक समय तक दबी रही। यद्यपि उनके सभी प्रयास निष्फल कर दिए गए फिर भी सम्पूर्ण देश में, भविष्य में होने वाले ऐसे विद्रोहों के अग्रदूत रहे। उसी वर्ष यानी 1857 में, स्वतन्त्रता का प्रथम संग्राम प्रारंभ हुआ था।

नि:सन्देह रानी चेन्नम्मा की लड़ाई भारत में स्वाधीनता संग्राम की शुरुआत थी। अत: रानी चेन्नम्मा को 'भारत के स्वाधीनता संग्राम का प्रात:कालीन सितारा' ठीक ही कहा गया है।

10. ऐतिहासिक प्रतीक

यद्यपि कित्तूर के अन्तिम संग्राम के बाद 150 से भी अधिक वर्ष बीत चुके हैं, फिर भी कित्तूर के दुर्दान्त साहस और गौरव की स्मृति तथा कित्तूर का श्रेष्ठ इतिहास असंख्य कविताओं, लोकगीतों, नाटकों आदि के माध्यम से लोगों के दिल और दिमाग में ताजा है। यह अनेक भग्नावशेषों में भी जो कर्नाटक के सम्पूर्ण उत्तरी क्षेत्र में फैले हुए हैं बोलता हुआ मूर्तिमान है। निःसन्देह, इनमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण भग्नावशेष कित्तूर के किले और राजमहल के खंडहर हैं।

कित्तूर किला

आज हम उस महान किले की टूटी-फूटी दीवारों और खंडहरों को ही देख सकते हैं जो कभी अपनी सुदृढ़ता के लिए विख्यात था। ज्यों ही हम किले की तरफ आगे बढ़ते हैं, हमें एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण युगान्तकारी घटना याद आ जाती है—'बहादुरगढ़' किले के बाहर, उसके दक्षिण-पश्चिम में प्राकृतिक टीले पर स्थित मैदानी इलाके का सबसे ऊंचा बहादुरगढ़ है जो पहरे की मीनार (वाच टावर) थी, यहां से दूर-दूर तक फैले हुए हरे-भरे चारों ओर के जंगलों का एक अत्यन्त विराट एवं विस्तृत दृश्य दिखाई पड़ता है और पश्चिम में धुंधली-धुंधली पहाड़ियों का दृश्य धीरे-धीरे धूमिल होता जाता है और अन्य दिशाओं में क्षितिज दिखाई पड़ता है। मीनार के उत्तर में 'रनगट्टीकेरी' है जहां रानी चेन्नम्मा ने प्रायः प्रचंड संकल्प के साथ अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी।

वास्तविक किला गोलाकार नक्शे का है। इसमें दोहरी दीवारें बनी हुई हैं जिन्हें बाहर की तरफ बनी हुई खाई अलग-अलग करती है और बाहरी दीवार के अगले हिस्से पर अर्धचक्राकार बुर्ज बने हुए हैं। मूलतः इसमें पूर्व की दिशा में एक मुख्य द्वार मार्ग था जिस पर बाहरी खाई पर पुल बना हुआ था। इस खाई को 'आने हांडा' कहते थे जिसमें हाथियों

को नहलाया जाता था।

दीवारों में से बनाए गए प्रवेश द्वार जान-बूझकर एक सीध में नहीं बनाये गये। प्रकटत: ऐसा सुरक्षा की दृष्टि से किया गया था। दीवारों से हवादार रास्ते से निकल कर राजमहल के चित्ताकर्षक प्रवेश द्वार का अग्रभाग आ जाता है। यह किले की अन्दरूनी दीवार के उत्तरी गुम्बद के पास है।

किले के अन्दर राज महल के दक्षिण में अस्तबलों के खण्डहर और आवासी भवनों की नींवें हैं जिसमें संभवत: राजमहल के महत्वपूर्ण अधिकारी रहते होंगे। दक्षिण पश्चिम में बहुत विशाल प्रहरी मीनार हैं जो समानान्तर दूरी पर बने अनेक स्तम्भों पर टिकी हुई हैं।

राजमहल

राजमहल के मुख्य द्वार मार्ग में, जो अब खण्डहर है, सैनिकों और घुड़सवारों के लिए प्रहरी कक्षों की कतार है। राजमहल का सबसे आकर्षक भाग अग्रमण्डप है जो 100 फुट चौड़ी और 30 फुट ऊंचा है। मंडप के अगले भाग से नीचे लम्बे-लम्बे इमारती प्रस्तर स्तंभों की एक कतार है, जिनका आधार भारी-भारी पत्थरों का है।

सम्पूर्ण राजमहल आयोजना की एक उत्कृष्ट कलाकृति है। बैठक एवं अतिथिगृह, सभागार, भोजकक्ष, भाण्डागार, स्नानागार सबके सब इतने सुव्यवस्थित हैं कि हर भाग में, दूसरे भागों में से गुजरे बिना न्यूनतम चक्कर से स्वतन्त्र रूप से पहुंचा जा सकता है। प्रत्येक कमरे में दो प्रवेश दिये गये हैं। हर एक प्रवेश एक भिन्न कमरे में ले जाता है। ये सब अत्यन्त कुशल आयोजना के उदाहरण हैं। राजमहल और उसके कमरों का विस्तृत वर्णन करना आवश्यक नहीं है, फिर भी कुछ उल्लेखनीय विशेषताएं हैं। राजमहल का परम आकर्षक अन्तरंग भाग सभागार है जो अधिक बड़ा नहीं है। इसमें सरदारों और अन्य उच्चाधिकारियों के साथ गोपनीय बैठकें हुआ करती थीं। सभागार के अन्दर दीवारों में बैंक सीटें बनी हुई हैं। सभागार के पास एक बहुत बड़ा भोजकक्ष है जिसमें शाही अतिथियों के सम्मान में समय-समय पर भोज दिये जाते थे। राजमहल के बाईं तरफ

एक खुला तालाब है जो शाही परिवार के सदस्यों के लिए तरण-ताल के रूप में काम आता था। राजमहल के अगले भाग में बाईं ओर, अनूठे प्रयोजन हेतु एक कक्ष है : इस कक्ष की दीवारों के बीच में लगभग डेढ़ फुट व्यास का लोहे का एक पाइप आड़ा लगा हुआ है जो आकाश में खुलता है। यह ध्रुव तारे को देखने के काम आता था। पाइप के आगे बैठने के लिए एक चबूतरा बना हुआ है। इन सबसे अधिक सुकल्पित एक ही स्रोत से सारे राजमहल में विलक्षण जल प्रदाय व्यवस्था है। पीछे से खुले हुए विशाल बरामदे के बीचों बीच एक पानी का कुआं है। पानी ग्रहण करने वाले पात्र सुन्दर पत्थर के बने हुए हैं, और पार्श्वों में तथा दो कोनों में पानी के टैंक हैं। ये राजमहल के अन्दर की पिछली दीवार से लगे हुए हैं। पानी कुएं से इन पात्रों में डाला जाता था जहां से वह सभी पानी के टैंकों में और रसोई के पीछे कुएं में ढके ताम्बे के पाइपों द्वारा लाया जाता था। भोजकक्ष, रसोई और अन्य कक्षों के भिन्न-भिन्न भागों में यथोचित स्थानों पर पत्थर के मुंह धोने के कुण्ड बने हुए हैं, और पार्श्वों में तथा दो कोनों में पानी के टैंक हैं। ये राजमहल के अन्दर की पिछली दीवार से लगे हुए हैं। पानी कुएं से इन पात्रों में डाला जाता था जहां से वह सभी पानी के टैंकों में और रसोई के पीछे कुएं में ढके हुए ताम्बे के पाइपों द्वारा लाया जाता था। भोजकक्ष, रसोई और अन्य कक्षों के भिन्न-भिन्न भागों में यथोचित स्थानों पर पत्थर के हाथ मुंह धोने के कुंड बने हुए हैं (ये कुंड आधुनिक चीनी के वाश वेसिन से मिलते जुलते हैं, किन्तु, प्रकटतः, इनके अपरिष्कृत स्वरूप को दर्शित करते हैं)।

राजमहल की एक अन्य रोचक विशेषता रमणीय उद्यान है जिसमें जलाशय और फव्वारे की नालियां आदि भी हैं। उद्यान में फर्श के लिए प्रयुक्त ईंटें बहुत बढ़िया प्रकार और विभिन्न रूप तथा आकारों की हैं। दीवारें, जिनमें से कुछ आज भी यथावत हैं, केवल 6 इंच मोटी हैं किन्तु अत्यन्त सुदृढ़ हैं। गैरिक स्फटिक, रोड़ी और चिकने पत्थर एवं मजबूत बुझे हुए चूने के मसाले के बने हुए सम्पूर्ण राजमहल में चौकोर पत्थरों की चिनाई है। स्तम्भ भी गोलाकार तश्तरियों और हरे से परतदार शिला-विशेष के बने हुए हैं जिन्हें एक के ऊपर एक को रखकर वैसे ही मसाले

से जोड़ा गया है। इसके ऊपरी भाग पर कहीं-कहीं पलस्तर है जैसे, दीवारों में गवाक्ष, स्नानागार और रसोई घर की दीवारों पर और कमरों की दीवारों के निचले हिस्से पर फर्श परतदार शिला-विशेष के सुविन्यस्त आयताकार खण्डों से सुन्दर ढंग से जड़े हुए हैं। दीवारों में खिड़कियों और गवाक्ष इतने सुव्यवस्थित हैं कि बराबर की दीवारों और कमरों में प्रकाश और वायु पहुंचते हैं। चौकोर पत्थरों की चिनाई और गवाक्षों से परम्परा के उत्तरवर्ती चरण में मुस्लिम-मराठा स्थापत्यकला की परम्परा के स्पष्ट संकेत मिलते हैं, और कित्तूर राजमहल इस प्रकार की स्थापत्य-कला के सर्वश्रेष्ठ नमूनों में से एक है।

कित्तुर के कलमठ के प्रांगण में समाधियां

कित्तूर के भग्नावशेषों में अगला महत्वपूर्ण अवशेष कित्तूर के उन विभिन्न शासकों की समाधियां हैं जो कित्तूर में कलमठ के प्रांगण में दफनाये गए हैं। कुल छह समाधियां हैं। ये मुदिमल्लप्पा सरदेसाई, मालवा रुद्रगौड़ उर्फ फकीरा रुद्रसर्जा, वीरप्पा गौड सरदेसाई, मल्लासर्जा, रानी चेन्नम्मा के पुत्र बाला साहब और शिवलिंग रुद्र सर्जा की हैं। मुदिमल्लप्पा सरदेसाई; मल्लसर्जा; बाला साहेब और शिवलिंग रुद्र सरजा की समाधियां स्थापत्य-कला की दृष्टि से बिल्कुल सादी हैं, क्योंकि उनमें एक-एक कोष्ठ है जिसमें शिवलिंग और नन्दी हैं तथा भूगत कक्षों में कब्रें हैं जो सुगम और बाहर से द्रष्टव्य नहीं हैं। किन्तु वीरप्पा गौड़ सरदेसाई की समाधि दो कोष्ठों का बना हुआ है—अन्दर के कक्ष में शिवलिंग है तथा बाहर के कक्ष में नन्दी है। यह समाधि सर्वोत्तम समझी जाती है। इसकी दीवारों पर वास्तुकला की चित्रकारी है, एक ड्योढी है और एक बढ़िया ढंग से काट कर बनाई गई चौखट है। जिसकी तुलना सियूना क्षेत्र के 13वीं शती के मन्दिर की चौखट से की जा सकती है। इसके अतिरिक्त, दीवारों के निचले हिस्से में फर्श के पास खास-खास बिन्दुओं पर जालीदार जंगले हैं जिनमें से नीचे की तरफ ढलवां जगह से निचली समाधियां दिखाई देती हैं फकीरा रुद्र सरजा के समाधि में मकबरे वाला नीचे का कोष्ठ छत में पूर्ण खुले हुए कमल की फूल की सूक्ष्म कटाई के लिए दर्शनीय है। भूमि की सतह पर

ऊपरी वाले कोष्ठ की अन्दरूनी अगल-बगल की दीवारों पर गणेश और दुर्गा की मूर्तियां बनी हुई हैं।

रानी चेन्नम्मा का मकबरा

बैलहोंगल में रानी चेन्नम्मा का समाधि बहुत ही साधारण ढंग का है, जिस पर हाल ही में पूजा करते हुए बैठी हुई मुद्रा में रानी चेन्नम्मा की एक छोटी सी काले पत्थर की प्रतिमा लगाई गई है।

शून्य स्मारक

धारवाड़ में भी कुछ महत्वपूर्ण अवशेष हैं। उनमें सर्वाधिक महत्व-पूर्ण हैं थैकरे की स्मृति में अंग्रेजों द्वारा बनाया गया स्मारक। इस स्मारक के आसपास एक पार्क बनाया गया है जिसका नाम है कित्तूर चेन्नम्मा पार्क। यूरोपीय कब्रिस्तान में शहर के पश्चिमी भाग की तरफ उन यूरोपीय अधिकारियों के मकबरे दिखाई पड़ते हैं जो 23 अक्तूबर 1824 के कित्तूर संग्राम में मारे गये थे। इनमें सबसे महत्वपूर्ण थैकरे का मकबरा है। इस मकबरे में भूरे रंग की संगमरमर की शिला लगाई गई है जिस पर निम्न-लिखित शब्द (यहां उसका अनुवाद) अंकित है :

23 अक्तूबर 1824 को कित्तूर गदर में मारे गये थे
दक्षिण मराठा दोआब
के प्रधान कलक्टर और राजनीतिक एजेन्ट
सेन्ट जान थैकरे
यहां दफनाए गए हैं।

इस मकबरे से थोड़ी दूरी पर एक अन्य मकबरा है जिसमें कैप्टन ब्लैक लै० सीवेल और लै० डीटन के शव दफनाये गये हैं। इसी मकबरे में भी एक सुन्दर भूरे संगमरमर का टुकड़ा लगा हुआ है जिस पर निम्न-लिखित शब्द (यहां उसका अनुवाद) खुदे हुए हैं :

मद्रास होर्स आर्टिलरी
के
कैप्टन ब्लैक और लै० सीवेल तथा डीटन
की स्मृति में

जिन्होंने कित्तूर में 23 अक्तूबर 1824 को
गदर को दबाने का
वीरता से प्रयास करते हुए
अपने प्राण न्योछावर किये थे

× × ×

उनके मित्रों द्वारा निर्मित
जिन्होंने उस दुर्भाग्यपूर्ण घटना में उनकी
कर्त्तव्यनिष्ठा अपनी आंखों से देखी थी

ये सब अवशेष भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के इतिहास में रानी चेन्नम्मा द्वारा अदा की गई उत्कृष्ट भूमिका के अमर अभिलेख हैं और ये देश के इस भाग में स्वतन्त्रता-प्रेमी युवा स्त्री-पुरुषों की पीढ़ियों के लिए असीम प्रेरणा स्रोत रहे हैं।

11. अमर कित्तूर

कित्तूर भारत की स्वतन्त्रता से पूर्व विद्यमान अन्य अधिकांश भारतीय रियासतों की तुलना में एक छोटी रियासत थी। इनमें से बहुत सी रियासतें और जागीरें जो बनी रहने दी गई थीं, इसलिए लम्बे समय तक अस्तित्व में रह सकीं क्योंकि उन्होंने या तो भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की अभिवृद्धि में अंग्रेजों की सहायता की थी या अंग्रेजों के साथ समझौता कर लिया था और बदले में अपनी स्वतन्त्रता दे दी थी। भारत की स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद उनका अस्तित्व मिटा दिया गया, और आज उनमें से अधिकांश रियासतें तो पूरी तरह विस्मृत हो चुकी हैं। किन्तु इन छह सौ से अधिक रियासतों से भिन्न, कित्तूर का नाम हमारी इतिहास की पुस्तकों में ही नहीं, अपितु असंख्य गानों, लोकगीतों, नाटकों, कविताओं और अन्य लेखों में उसी प्रकार अमर है जैसे लोगों के दिल और दिमाग में है। रानी चेन्नम्मा की शौर्यपूर्ण लड़ाई की कहानी सैकड़ों ग्रामीणों के होठों पर है जो उसकी महिमा के गीत गाते हैं; और उनके वीरतापूर्ण कौशल, अनेक अवसरों पर, साफ-साफ रंगमंच पर और पर्दे पर सजीव हो उठते हैं जिनसे सम्पूर्ण कर्नाटक के लोगों को प्रेरणा मिलती है।

आज कित्तूर भारत में स्वतन्त्रता संग्राम की भव्य सम्पदा में रानी चेन्नम्मा के अनन्त योगदान के फलस्वरूप अमर है। उसे अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ाई में भारी सैनिक पराजय खानी पड़ी थी। यही हाल भारत की अन्य बहुत सी रियासतों का रहा। किन्तु किसी रियासत की महानता और गरिमा का मूल्यांकन इस बात से नहीं होता कि युद्ध स्थल में उसे विजय मिली या पराजय। वह भावना, जिसने कित्तूर के वीर सैनिकों को स्फूर्ति दी और वे महान आदर्श, जिनसे उन्हें प्रेरणा मिली, उनकी महानता के लक्षण हैं। स्वतन्त्रता की ज्योति जलाए रखने में कित्तूर के प्रयासों ने, और अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा में सब कुछ न्योछावर करने के लिए साहस

और संकल्प के उसके महान आदर्श ने उसे अमर बना दिया है। कित्तूर के लोगों में देशभक्ति की भावना और स्वतन्त्रता-प्रेम का मन्त्र रानी चेन्नम्मा ने फूंका था जिनका नाम अत्यन्त आदर और प्रशंसा के साथ याद किया जाता है।

यद्यपि रानी चेन्नम्मा एक छोटी सी रियासत की रानी थीं, फिर भी उनमें नेतृत्व के महान गुण विद्यमान थे जैसे, राजनीतिज्ञता, अदम्य साहस, सूक्ष्म राजनीतिक विलक्षणता, मनुष्यों और कार्यों की विलक्षण निर्णयबुद्धि किसी भी आपात्काल का सामना करने की प्रत्युत्पन्न मति और सैनिक युद्ध-नीतियों का गहरा ज्ञान। वह कुशल प्रशासक एवं सूझ-बूझ वाली कूटनीतिज्ञ थीं। वह क्षण भर में निर्णय ले सकती थीं, और जब एक बार वह निर्णय कर लेती थीं तो उसे पूरा करके छोड़ती थीं। इन सबके ऊपर उन्हें कित्तूर की भूमि और उसके लोगों से प्यार था। इन सब गुणों ने रानी चेन्नम्मा को उनके ही जीवनकाल में प्रायः एक अलौकिक चरित्र प्रदान कर दिया था। ये महान गुण सर्वदा उनके कार्यों से चरितार्थ होते थे। उनमें दरबार लगाकर रियासत के बने रहने की घोषणा करके अंग्रेजों की अवज्ञा करने का साहस था। उन्होंने अपने राज्य की स्वतन्त्रता का समझौता किए बिना युद्ध को टालने का भरसक प्रयास किया था। उन्होंने अंग्रेजों के साथ महान गरिमा, दृढ़ता और बराबरी से बातचीत की थी और इन बातचीतों में राजकौशल के विलक्षण गुणों का प्रदर्शन किया था। वह स्वशासी राज्य की अपनी मांग पर अडिग रहीं। किन्तु वह जानती थीं कि कब और क्या बात माननी है। जब बातचीत विफल हो गई और युद्ध अपरिहार्य हो गया तो वह अपने लोगों को जागृत करने में सफल हुईं। कित्तूर के लोग उनका उद्घोष सुनकर एक होकर उठ खड़े हुए। वह अपनी विजय के समय अतिगम्भीर और विशाल हृदय थीं। उन्होंने बन्दियों को क्षमादान देकर छोड़ दिया था। उन्होंने कैदियों से व्यवहार करने की भारतीय राजाओं की सही परम्परा के अनुकूल ब्रिटिश सैनिक अधिकारियों की बन्दी स्त्रियों और बच्चों की रक्षा की थी और उन्हें वापस भेज दिया था। किन्तु जब कित्तूर की स्वतन्त्रता का प्रश्न होता था तो कोई समझौता नहीं हो सकता था। वह उसकी खातिर लड़ते-लड़ते प्राण देने के लिए

तैयार रहती थीं । इन्हीं गुणों की वजह से वह अपने लोगों में ऐसी निष्ठा और भक्ति भाव फूंक सकी थीं । वे उनके इशारे पर अपने प्राण न्यौछावर करने को तैयार रहते थे ।

अस्त्र-शस्त्रों की अल्प शक्ति के बावजूद कित्तूर के सैनिकों ने अंग्रेजों का जो मुकाबला किया था वह इसका दुर्लभ उदाहरण है कि मात्र साहस और संकल्प के बल पर ऐसी छोटी सी सेना ने बहुत अधिक शक्तिशाली सेना का किस प्रकार डटकर मुकाबला किया था । जिन अंग्रेज अधिकारियों ने यह लड़ाई देखी थी उन्होंने भी उनके हौंसले का भव्य शब्दों में वर्णन किया है । दक्षिण के आयुक्त डैकन ने कित्तूर के सैनिकों के साहस शौर्य और संकल्प के बारे में बोलते हुए कहा था, "उन्होंने तलवारें खींच ली हैं और म्यानें फेंक दी हैं ।" चैपलिन के राजनीतिक एजेन्ट स्टीवेन्सन ने अपने एक पत्र में कित्तूर विद्रोहियों के "प्रचण्ड उत्साह और रोष" का उल्लेख किया है । किन्तु चैपलिन ने सर्वश्रेष्ठ श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कित्तूर पर अंतिम विजय की रिपोर्ट देने के समय लिखा है कि "कित्तूर के सुदृढ़ किले की रक्षा अपने उत्साह और ओज के असाधारण रूप से कृत संकल्प आचरण वाली गैरिसन ने की थी ।"

कित्तूर की पराजय के पश्चात् अनेक वर्षों तक विदेशी राज से विद्रोह करने और गद्दी पर अधिकारी वारिस को प्रतिष्ठापित करने के लिए छुट-पुट प्रयास हुए । यह कित्तूर राजपरिवार के प्रति उस क्षेत्र के लोगों की अद्वितीय और अव्यक्त निष्ठा का प्रदर्शन था । यहां तक कि 1831 में, लन्दन भेजी गई मुम्बई पालिटिकल डिसपेचेज[1] में धारवाड़ के कलक्टर श्री निसबत की रिपोर्टों का हवाला निम्नलिखित शब्दों में दिया गया है :

"....प्रतिदिन इस विश्वास को पक्का करने के लिए कुछ न कुछ नई बात सामने आती है कि सारा प्रान्त एक ही लक्ष्य में सूत्रबद्ध है और लोगों को, किसी प्रकार से, इस विचार से प्रेरित है कि अपनी स्वतन्त्रता को पुनः प्राप्त करना सम्भव हो सकता है ।"

---

1. बाम्बे डिसपेचेज, जिल्द 51, पृ० 365-76, पालिटिकल, 21 सितम्बर 1831

एक अन्य पत्र में, ऐसा कहा जाता है कि उसने निम्नलिखित रूप में रिपोर्ट दी थी :

"बड़े खेद से मैं यह उल्लेख करने के लिए बाध्य हूं कि अब मेरा पक्का विश्वास हो गया है कि कित्तूर के लोग, अपने पूर्ववर्ती शासन के प्रति घनिष्ट लगाव के कारण, उनसे प्राप्त किसी भी प्रकार के निदेश का पालन करने के लिए तत्पर एवं इच्छुक हैं।"

उसने यह भी रिपोर्ट दी थी कि इस क्षेत्र के लोगों का विश्वास है कि "देसाई के पुनःस्थापन का समय आ गया है और हमें उनके लक्ष्य की प्राप्ति हेतु जाना चाहिए और लड़ना चाहिए।" अपनी आशंकाओं की पुष्टि में निसबत ने रिपोर्ट दी थी कि धारवाड़ के कलक्टर ने 3474 सेठ सनदियों को ब्रिटिश राज के प्रति अपनी निष्ठा व्यक्त करने के लिए बुलवाया तो केवल 499 सेठ सनदियों ने ही इसका पालन किया था। जो नहीं आए, वे अभी भी कित्तूर शासकों के प्रति निष्ठावान प्रतीत होते थे। कित्तूर और उसके शासकों में कित्तूर के लोगों की अडिग आस्था अत्यन्त अगाध और महान थी, उनका स्वतन्त्रता-प्रेम बहुत गहरा था। वह अजेय थी।

कित्तूर का युद्ध, अंग्रेजों के विरुद्ध, स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए प्रथम भारतीय युद्ध था। अतः 23 अक्तूबर 1824 के इतिहास में, ब्रिटिश साम्राज्य की शक्ति के विरुद्ध एक छोटी सी रियासत की विजय के एक महान दिवस के रूप में अंकित रहेगा। अतः इस दिन की परम महत्ता है क्योंकि इससे 1857 के महान स्वतन्त्रता संग्राम और महात्मा गांधी के नेतृत्व में स्वतन्त्रता आन्दोलन का जिसकी परिणति 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में हुई थी पूर्वाभास हो गया था। रानी चेन्नम्मा और उनके अनुयायियों का, जिन्होंने अपनी मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए लड़ते-लड़ते अपने प्राण न्यौछावर कर दिए थे महान आदर्श, अदम्य उत्साह, साहस और शौर्य युग-युगों तक दीप्तिमान रहेंगे। उस शौर्य-युग के नेता अब नहीं रहे, किन्तु उनकी स्मृति हमेशा अमर रहेगी।

ग्रंथ-सूची

1. **अंग्रेजी कृतियां**

बीवरिज हेनरी; 1872 : ए कम्प्रेहनसिव हिस्ट्री आव इंडिया (सिविल, मिलिट्री एण्ड सोशल) जिल्द 3, लंदन ।

कृष्ण राव; एम० वी० एन० हलप्पा, जी० एस० (संस्करण), 1962 : हिस्ट्री आव फ्रीडम मूवमेन्ट इन कर्नाटक, जिल्द 1, बंगलौर, पृ० 98-198 ।

स्ट्रोक्स, एच० जे०; 1870 : हिस्टोरीकल एकाउंट आव द बेलगाम डिस्ट्रिक्ट इन बाम्बे प्रेजिडेन्सी, बाइकुला एजूकेशन सोसाइटी, बाम्बे ।

1825 और 1826 की पालिटिकल डिपार्टमेंट फाइल : 1825 की डी० एन० (39) और आर० एन० (201) तथा 1826 की डी० एन० (13) और आर० एन० (236) । निदेशक, महाराष्ट्र राजकीय संग्रहालय, मुम्बई ।

मनोहर मुलगांवकर; 1971 : छत्रपतीज आव कोल्हापुर, मुम्बई पोपुलर प्रकाशन, मुम्बई पृ० 405-9 ।

गजेटियर आव बाम्बे कर्नाटक, जिल्द 21 ।

श्रीधर तेलकर, 1957 : कित्तूर चेन्नम्मा रानी, कित्तूर रानी, चेन्नम्मा इतिहास मंडलस, बैल होंगल, बेलगांव जिला (के० आर० सी० आई० एम० बी०) ।

एशियाटिक क्वार्टरली रिव्यू; न्यू सिरीज, जिल्द 1, सं० 122 ।

अनिल मुदबिदरी; 1957 (जनवरी) रानी चेन्नम्मा : वेलियंट क्वीन आव कित्तूर दि मिरर, पृ० 60-64 ।

2. **कन्नड़ कृतियां**

भावेप्पा मूगी (संस्करण) 1948 : फारसी कागजपत्रगलु के० सी० आर० आई० एम० बी० ।

भावेप्पा मूगी (संस्करण); 1951 : मल्लसरजन दुंदभी, के० सी० आर० आई० एम० बी० ।

भावेप्पा मूगी (संस्करण); 1959 कित्तूर कालगा, रुद्रगड प्रकाशन, बेल होंगल, जिला बेलगांव ।
बिन्दू माधव बरली और देसाई, पी० बी०, 1938 : कन्नड़ नाडिण मिंचिदा महिलेयरु, मिंचिन बल्ली, धारवाड़ ।
हलप्पा, जी० एस०; 1922 : भारत स्वातन्त्र्यद्रा बेल्लाचुक्की, कर्नाटक सहकारी साहित्य संघ लिमिटेड, धारवाड़ ।
हिरेमट, आर० सी० (वीदी); 1970 हमुर हल्लद योगी श्री गरगद, माडिवालेश्वेर चरित्रे, हुबली ।
जकाती, बी० आर० गुरुपादस्वामी एवं हिरेमठ; 1975 : कित्तूर नाडिनल्ली स्वातन्त्र्य समर, बैल होंगल ।
के० सी० आर० आई० एम०, बी० 1946 : वरदी मत्तु घटने, ए रिपोर्ट ।
कृष्णमूर्ति पूर्णिका; 1974 : कित्तूर चेन्नम्मा; भारत भारती पुस्तक सम्पदा, बंगलौर ।
कुलकर्णी, सी० एम०; 1970 : भारत स्त्रीरत्नगलु, भारत बुक डिपो, धारवाड़ ।
कृष्णाराय, ए० एन०; 1951 : कित्तूर रानी चेन्नम्मा, आनंद ब्रदर्स, बंगलौर ।
रायणगौड तल्लुर (सं०); 1924 : कित्तूर वंदया. बैल होंगल ।
रायणगौड तल्लूर (सं०); 1948 : धौरे मल्लसर्जना काव्य, के० सी० आर० आई० एम०; बी ।
रायणगौड तल्लूर (सं०); 1949 : कित्तूर कडंगाइट, बैल होंगल ।
सरस्वती देविगौडश; 1945 : भारतदा वीर महिलेयरु, धारवाड़ ।
सिवारामु; 1967 : कन्नड़ कडुवालिगलु, राष्ट्रोत्थान साहित्य, बंगलौर।
श्री नागेश; 1968 : स्वातन्त्र्यदेवी चेन्नम्मा रानी, धारवाड़ ।
सुंकापुर, एम० एस० (संस्करण); 1972 : जीवन जोकाली; गरितियर गरिमै, कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड़, पृ० 1-72 ।
सुंकापुर, एम० एस० (संस्करण); 1976 : जनपद साहित्य दर्शन, खंड 2, कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड़, पृ० 187-247 ।